इस विशेष आवरण को संत शिरोमणि दिगम्बराचार्य श्री विद्यासागर जी मुनि महाराज के 50वां संयम स्वर्ण महोत्सव के उपलक्ष्य में भोपाल के माध्यम से दिनांक 17 जुलाई 2018 को श्री दिगम्बर जैन पंचायत ब्यावर राजस्थान भारतीय डाक विभाग के भोपाल परिमण्डल शाखा द्वारा 5/- रूपये में जारी किया गया।

संकलन - मुनिश्री अभयसागरजी, प्रभातसागरजी एवं पूज्यसागरजी महाराज

इस तरह की और भी जानकारी इस लिंक पर देख व पढ़ सकते हैं - knowledge.sanskarsagar.org

दि.	वार	तिथि	नक्षत्र
		सितम्बर 2020	
16	बुधवार	चतुर्दशी	मघा
17	गुरुवार	अमावस	पूर्वाफाल्गुनी
18	शुक्रवार	प्रतिपदा	उत्तराफाल्गुनी
19	शनिवार	द्वितीया/तृतीया	चित्रा
20	रविवार	चतुर्थी	स्वाती
21	सोमवार	पंचमी	विशाखा
22	मंगलवार	षष्ठी	अनुराधा
23	बुधवार	सप्तमी	ज्येष्ठा
24	गुरुवार	अष्टमी	मूल
25	शुक्रवार	नवमी	पूर्वाषाढ
26	शनिवार	दशमी	उत्तराषाढ
27	रविवार	एकादशी	श्रवण
28	सोमवार	द्वादशी	धनिष्ठा
29	मंगलवार	त्रयोदशी	शतभिषा
30	बुधवार	चतुर्दशी	पूर्वाभाद्रपद
		अक्टूबर 2020	
1	गुरुवार	पूर्णिमा	उत्तराभाद्रपद
2	शुक्रवार	प्रतिपदा	रेवती दि./रा.
3	शनिवार	द्वितीया	रेवती
4	रविवार	द्वितीया	अश्विनी
5	सोमवार	तृतीया	भरणी
6	मंगलवार	चतुर्थी	कृत्तिका
7	बुधवार	पंचमी	रोहिणी
8	गुरुवार	षष्ठी	मृगशिरा
9	शुक्रवार	सप्तमी	आर्द्रा
10	शनिवार	अष्टमी	पुनर्वसु
11	रविवार	नवमी	पुष्य
12	सोमवार	दशमी	आश्लेषा
13	मंगलवार	एकादशी	मघा
14	बुधवार	द्वादशी	पूर्वाफाल्गुनी
15	गुरुवार	त्रयोदशी/चतुर्दशी	उत्तराफाल्गुनी

तीर्थंकर कल्याणक

03 अक्टूबर : भगवान नमिनाथ गर्भ कल्याणक

माह के प्रमुख व्रत

07 अक्टूबरः रोहिणी व्रत
08 अक्टूबरः मुक्तावली व्रत
15 अक्टूबरः मुक्तावली व्रत

सर्वार्थ सिद्धि

21 सितम्बर: 20/49 बजे से 30/19 बजे तक।
26 सितम्बर: 19/26 बजे से 30/21 बजे तक।
02 अक्टूबर: 06/22 बजे से 30/22 बजे तक।
04 अक्टूबर: 01/23 बजे से 11/53 बजे तक।
06 अक्टूबर: 06/23 बजे से 17/54 बजे तक।
07 अक्टूबर: 06/54 बजे से 30/24 बजे तक।
11 अक्टूबर: 06/25 बजे से 25/19 बजे तक।

शुभ मुहूर्त

विद्यारंभ मुहूर्तः सितम्बर-27, अक्टूबर-8,11,14
मशीनरी प्रारंभ :सितम्बर-14,18,23,28, अक्टूबर-2
दुकान प्रारंभः सितम्बर-18, अक्टूबर-1,2,7,8,15
वाहन खरीदनेः सितम्बर-18,28 अक्टूबर-2,8,10

जैन विद्या संस्कृति प्रश्न मंच की उत्तर शीट 01 नवम्बर 2020 तक शीघ्र ही भरकर भेजे संस्कार सागर कार्यालय में

संस्कार सागर

• वर्ष : 25 • अंक : 253 • अक्टूबर 2020
• वीर नि.संवत 2547 • विक्रम सं. 2077 • शक सं. 1942

लेख

• धर्म की प्रभावना आचरण से होती है 08
• स्वरूपाचरण चारित्र और प.पू. आचार्यश्री विद्यासागर जी का चिंतन 11
• पंथ विहीन मूलसंघ : स्वरूप, प्राचीनता और शाश्वतता 14
• दादी की पाठशाला 21
• कोरोना काल और जैन जीवन पद्धति 23
• राष्ट्रीय चिन्ह और राष्ट्रध्वज परिकल्पना प्रस्तुति 37
• जिनराज पार्श्वनाथ और गजराज बज्रघोष 40
• विक्रमादित्य षष्ठं त्रिभुवनमल्ल साहसतुंग (1076-1128 ई.) 47
• कैसे करें और मांगे क्षमा 48
• प्रवचनः मन के समुन समर्पित करो प्रभु के चरण 51
• जैन सेनापति (क्रमशः अगले अंक से) 52
• एडी दर्द का कारण व निवारण 56

बाल कहानी

• दृढ़ संकल्प 59

कविता

• तुम मानवता के अग्रदूत 10
• खोजा नहिं मैं कौन 25
• गजल-मानवता का संचार 49
• जीवन में पाप 50
• तुम्हारी नजर में 57

कहानी

• नैतिक शिक्षा 43

नियमित स्तंभ

पाती पाठकों की : 5 • भक्ति तरंग : 6 • संस्कार प्रवाह : 7 • संयम स्वास्थ्य योग : 13
चलो देखें यात्रा : 25 • आगम दर्शन :26 • कैरियर गाइड : 27 • पुराण प्रेरणा : 29 • माथा पच्ची : 29
दुनिया भर की बातें : 30 •दिशा बोध : 34 • इसे भी जानिये: 35 • आओ सीखें : जैन न्याय : 36
डाक टिकटो पर जैन इतिहास एवं संस्कृति : 37 • हमारे गौरव : 47 • हास्य तरंग-शरीर विकास के कुछ खेल : 58
• बाल संस्कार डेस्क : 59 • संस्कार गीत व बाल कविता : 60 • समाचार : 61

प्रतियोगिताएं

: अ.भा. संस्कार सागर परीक्षा :65 : वर्ग पहेली : 66

प्रेरणा – परम पूज्य संत शिरोमणि आचार्य श्री
विद्यासागरजी महाराज के प्रियाग्र शिष्य
ऐलक श्री सिद्धांतसागरजी महाराज

प्रधान संपादक
ब्र. जिनेश मलैया, इन्दौर–89895 05108

प्रबंध संपादक
ब्र. जयकुमार निशांत टीकमगढ़–94251 41697

कार्यकारी संपादक
ब्र. सुदेश जैन कोठिया इन्दौर–9826548159

सलाहकार संपादक
श्री हुकुमचंद सांवला, इन्दौर–9542505311
पं. विनोदकुमार जैन, रजवांस–9575634441
डॉ. मुकेश जैन 'विमल', दिल्ली–9818855130

महिला संपादक
डॉ. ज्योति जैन, खतौली–94128 89449
ब्र. समता जैन मारौरा, इन्दौर–8989845294

अतिथि सम्पादक
डॉ. सुनील जैन 'संचय', ललितपुर–97938 21108
अभिनंदन सांधेलीय, पाटन–9425863244
डॉ. पंकज जैन, भोपाल–9584201103
विनीत जैन प्राचार्य, साढूमल–9721419696
अक्षय अलया, ललितपुर – 9453031432

संयोजना
इंजी. अभिषेक जैन 'रिंकू', इन्दौर–9827282170

प्रकाशक
श्री दिगंबर जैन युवक संघ, इन्दौर (म.प्र.)

✲ आंतरिक सज्जा ✲
आशीष कुशवाह, इन्दौर 9179169060

कृपया, संस्कार सागर मासिक पत्रिका का
बाकी सदस्यता शुल्क
जो पत्रिका के लिफाफे पर चिपकी पते की स्लिप पर छपा है, अविलंब भेजकर सहयोग करें। बकाया राशि में त्रुटि हो तो सुधार हेतु हमें सूचित करें।

सदस्यता शुल्क

-आजीवन	: **2100/-**	(15 वर्ष)
-संरक्षक	: **5001/-**	(सदैव)
-परम सम्मानीय	: **11000/-**	(सदैव)
-परम संरक्षक	: **15001/-**	(सदैव)

अपने शहर के

• स्टेट बैंक ऑफ इंडिया
संस्कार सागर
खाता क्र. 63000704338 (IFSC : SBIN0030463)

• भारतीय स्टेट बैंक
ब्र. जिनेश मलैया
खाता क्र. 30682289751 (IFSC : SBIN0011763)

• आईसीआईसीआय बैंक
श्री दिगम्बर जैन युवक संघ
खाता क्र. 004105013575 (IFSC : ICIC0000041)

में भी अपने पूर्ण पते सहित राशि जमा कर हमारे कार्यालय को सूचित कर सकतेहैं।

✲✲ कार्यालय ✲✲
संस्कार सागर
श्री दिगम्बर जैन पंचबालयति मंदिर,
सत्यम् गैस के सामने, ए.बी. रोड़, इन्दौर –10
फोन नं. : 0731–2571851, 4003506
मो. : 89895–05108, 6232967108
website :www.sanskarsagar.org
e-mail : sanskarsagar@yahoo.co.in

◆ लेखक के विचारों से संपादक मंडल का सहमत होना आवश्यक नहीं है।
◆ संस्कार सागर में प्रकाशित रचनाएँ बिना आज्ञा, किसी भी प्रकार से उद्धृत नहीं की जाना चाहिए।
◆ कथा–साहित्य में नाम संस्था काल्पनिक होतेहैं। किसी से समानता मिलना संयोग मात्र है।
◆ पत्रिका संबंधी प्रकरण में न्याय क्षेत्र इन्दौर रहेगा।

•श्री दिगम्बर जैन युवक संघ द्वारा श्री दिगंबर जैन पंच बालयति मंदिर, ए.बी. रोड़, इन्दौर–10 से प्रकाशित एवं मोदी प्रिंटर्स (76, बी–1, पोलोग्राउंड, इन्दौर) द्वारा मुद्रित।

पाती पाठकों की....

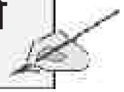

• सम्पादक महोदय, केन्द्र सरकार ने विगत दिनों मानव संसाधन विकास मंत्रालय का नाम शिक्षा मंत्रालय करते हुए नई शिक्षा नीति की घोषणा की जिसके अंतर्गत मातृ भाषा में प्राथमिक शिक्षा देने का प्रावधान घोषित किया तथा नैतिक शिक्षा के बंद दरवाजों पर दस्तक दी यह एक शुभ संकेत है और भाषागत न्याय जहाँ पर है वहीं पर हिन्दी भाषा को मात्र सम्मान नहीं दिया गया अपितु 130 करोड़ भारतीयों की अस्मिता की सुरक्षा करने का अनूठा प्रयास किया गया है। **यौन शिक्षा के स्थान पर योग शिक्षा को स्थापित करना भारतीय संस्कृति का श्रेष्ठ समादर है** इससे हर भारतीय अपना सिर गर्व से उठा सकेगा। तथा भारत को विश्वगुरु बनाने की प्रक्रिया में इससे अच्छा और कुछ नहीं हो सकता है। नई शिक्षानीति ज्ञान कौशल और संवेदना की जीवित इकाई के रूप में गरिमा प्रदान करेगी भारतीय ज्ञान बोध उच्च शिखर प्रदान करेगी।

श्रीमती अर्चना जैन, अहमदाबाद

• सम्पादक महोदय, नेपाल एक तरफ भारत के साथ वर्तमान में बड़े टकराव को दूर करने की कोशिश करते हुए दिख रहा है। दूसरी तरफ कालापानी के मामले को गर्माने की कोशिश भी कर रहा है नेपाल सरकार कालापानी पर अपना दावा जताने के लिए उपाय निकालने की तैयारी कर रही है जिसे एम बे सी के माध्यम से अलग-अलग देशों को भेजेगा सच यह है कि नेपाल इस समय चीन के हाथों में खेल रहा है इसलिए वह भारत के साथ संबंधों की गहराई को समझ नहीं पा रहा है मगर हमें अपना प्रयास जारी रखना होगा और नेपाल को भारत के साथ लाना ही होगा। अपने साथ नेपाल की मंसा को समझना जरूरी है वह चीन के कहने पर वार्ता को तैयार हुआ है ताकि चीन भारत को उलझाकर अपना मतलब सिद्ध कर सके। भारत को नेपाल के उद्देश्य के प्रति सजग रहना होगा अन्यथा चीन अपने जाल में भारत को फंसा सकता है। **महेश जैन, इन्दौर**

• सम्पादक महोदय, संस्कार सागर के सितम्बर 257 अंक में एक लेख पढ़ा जिसका शीर्षक था युवा वर्ग में बढ़ता असंतोष इस लेख के लेखक डॉ. अरविन्द जैन ने युवाओं की बढ़ती समस्या पर ध्यान आकर्षित करने का प्रयास किया है युवा वर्ग मात्र शिकायतें सुनना पसंद नहीं करता है अपितु उनका समाधान पहले खोजना चाहता है वह जानता है कि आग एक समस्या है पानी उसका समाधान है। चिल्लाना छाती पीटना दूसरों को कोसना समाधान नहीं है। युवा वर्ग में सकारात्मक सोच का सदैव सम्मान रहा है। पीछे मुड़कर देखना युवा वर्ग की आदत में नहीं होता है। युवा वर्ग अपने चरित्र को एक पंक्ति में स्पष्ट करता है, आज में जियो कल में नहीं। दूसरे की रेखा छोटी करने के लिए अपनी रेखा बड़ी करना सबसे उचित समाधान मानता है विद्वान लेखक ने समाज को दर्पण दिखाने का प्रयास किया है जो सर्वथा विचारणीय है।

मनीष जैन, राहतगढ़

• सम्पादक महोदय, संस्कार सागर में आगम दर्शन स्तंभ के अंतर्गत कषायपाहुड चूर्णि सूत्र का परिचय दिया गया सचमुच में जैन संस्कृति के चार स्तंभ हैं। 1. आचार्य परम्परा 2. जैन साहित्य 3. तीर्थ 4. इतिहास दर्शन- इन चार स्तंभों में साहित्य स्तंभ बहुत मजबूत और विशाल है दुर्भाग्य यह है कि हमारी पीढ़ी जैन साहित्य से परिचित नहीं है इस दिशा में संस्कार सागर में आगम दर्शन स्तंभ के माध्यम से जो जैन साहित्य का परिचय देने का प्रयास किया है वह अत्यंत सराहनीय है इसकी जितनी भी प्रशंसा की जाए उतनी ही कम होगी। प्रयास का परिणाम आगे सुखद जरूर आयेगा ऐसी उम्मीद करना उचित ही होगा।

श्रीमति रानू जैन, दिल्ली

भक्ति तरंग
जिनवर की महिमा

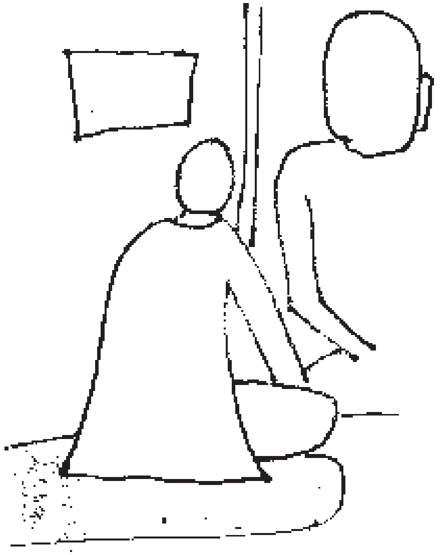

श्री जिनवर पद ध्यावै जो नर,
श्री जिनवर पद ध्यावे
तिनकी कर्म कालिमा विनशै,
परम ब्रह्म हो जावै ।
उपल अग्नि संजोग पाय जिमि,
कंचन विमल कहावै ।।
चन्द्रोज्ज्वल जस तिनको जग में ,
पंडित जन नित पावैं ।
जैसे कमल सुगन्ध दशोंदिश,
पवन सहज फैलावे ।।
तिनहिं मिलन को मुक्ति सुंदरी,
चित अभिलाषा ल्यावै ।
कृषि में तृण जिम सहज ऊपजै,
त्यों स्वर्गादिक पावै ।।
जनम, जरा, मृत दावानल के,
भाव सलिलतैं बुझावैं ।
भागचन्द्र कहाँ ताई बरनै,
तिनहिं इंद्र-शिर नावैं ।।

जो मनुष्य जिनेन्द्र (के स्वरूप) का ध्यान करते हैं वे स्वयं भी जिनेन्द्र के समान पद प्राप्त करते हैं।

जिनेन्द्र का ध्यान करने से उनकी कर्म-कालिमा नष्ट हो जाती है। कर्म-कालिमा हट जाने पर परम ब्रह्म रूप आत्मा शेष रह जाता है, जैसे -कण्डे और अग्नि के संयोग से उत्पन्न ताप में तपकर सोना शुद्ध होकर (विमल) मल रहित हो जाता है, उसका कुन्दन रूप निखर जाता है।

जिनेन्द्र का ध्यान करने वाले का यश चन्द्रमा की उज्जवल कांति के समान सारे जगत् में फैल जाता है । ज्ञानीजन नित्य ही उनका गुणगान करके उनका यश फैलाते हैं - जैसे- पवन-कमल-पुष्प की सुगंध को सहज ही दशों दिशाओं में फैला देता है। पहुँचा देता है।

मुक्तिवधु भी जिनेन्द्र का ध्यान करने वाले से मिलने को आतुर रहती है अर्थात् उन्हें शीघ्र ही मुक्ति प्राप्त होने वाली होती है। जैसे-खेतों में धान्य के साथ तृण आदि सहज में ही उत्पन्न हो जाते हैं वैसे ही जिनेन्द्र का ध्यान करने वाले को स्वर्ग, वैभव आदि तो सहज ही, बिना प्रयास ही प्राप्त हो जाते हैं।

भाव जगत की महिमा निराली है जैसे पानी से आग शीघ्र ही, सहज ही बुझ जाती है।

वैसे ही जन्म, मृत्यु, बुढ़ापा-रूपी दावानल (अग्नि) भी जिनेन्द्र के ध्यान करने से उत्पन्न भाव रूपी जल से शान्त हो जाती है। जिनेन्द्र के ध्यान करने वालों की महिमा का कहाँ तक वर्णन करें, कवि भागचन्द्र कहते हैं उनके चरणों में इन्द्र भी शीश झुकाते हैं। इन्द्र भी उन्हें नमन करते है।

संस्कार प्रवाह

आत्म निर्भर शिक्षा संस्कारी शिक्षा

विगत 73 वर्षों की शिक्षा नीति सदैव परिवर्तनशील रही है। सरकारों के अदलने बदलने पर शिक्षानीति बदलती रही है किन्तु अंग्रेजों की विदेशी नीति से बाहर निकलकर भारतीय शिक्षा स्वरूप निर्धारित नहीं हो पाया है। इसे विडम्बना ही माना जाना चाहिए। हमारे देश के शिक्षा मंत्री भारतीय परिवेश को समझने की अपेक्षा भारतीय युवा को मात्र क्लर्क बनाने में ज्यादा विश्वास बनाये रखें हैं जबकि युवाओं को डिग्री धारी बनाने की अपेक्षा स्वावलंबी योग्य बनाना आवश्यक था। इस बिन्दु को सदैव दर किनार किया गया।

नई शिक्षा नीति सचमुच में महत्वपूर्ण इस लिये है कि यह भारतीय संस्कृति लोक व्यवहार के अनूरूप है। इस शिक्षा नीति ने मनुष्य को मात्र संसाधन नहीं माना गया है अपितु उसे चेतना सम्पन्न ज्ञान और संवेदना का जीवित रूप माना गया है तथा ऐसे जीवित रूप को नई शिक्षा नीति गरिमा और सम्मान प्रदान करती है। यह बात संदेह से परे है कि इस शिक्षा नीति में प्राणी मात्र का उपकार एवं मानव मात्र को प्यार देने का क्रमबद्ध विकास स्वीकार किया गया है। स्वातंत्र्योत्तर भारत की अन्य शिक्षा नीतियों के प्रक्रियात्म, गुणात्मक एवं संगठनात्मक रूप से अधिक प्रभावी मानवीय व्यवहारिक रूप प्रस्तुत कर रही है यह शिक्षानीति योग शिक्षा के साथ बहु आयामी रूप भी प्रस्तुत कर रही है।

यह नीति इसलिए महत्वपूर्ण है कि इसमें इक्कीसवीं सदी की आवश्यकताओं सामाजिक अपेक्षाओं एवं आकांक्षाओं को सामने रखते हुए ग्लोबल जरूरतों के प्रति भी सचेत रहते हुए प्रबुद्ध नागरिकों के निर्माण की कार्य योजना स्थापित करते नजर आ रही है। जहां यह नीति गुणवत्ता और अनुसंधान को आधार प्रदान कर रही है वहीं भारतीयों के ज्ञान को और अधिक विकसित रूप में प्रस्तुत कर रही है। लोक से ग्लोबल की यात्रा संपन्न कराने के लिए यह एक सशक्त दस्तावेज है इस शिक्षानीति की मूल प्रेरणा जैन आचार्य विद्यासागर जी महाराज एवं प्राचीन भारतीय ज्ञान और सनातन विचारधारा से ली गई है ज्ञान प्रज्ञा और सत्य की खोज इस शिक्षा नीति का श्रेष्ठ लक्ष्य है वर्तमान में दुनियां आधुनिक ज्ञान की प्रकृति उपयोगिता एवं दृश्यों के बदलाव की साक्षी बन रही है। पुराने ढर्रे से और बाहर निकलकर भावनात्मक और कोशल के साथ आत्म निर्भरता विकास की ओर नई शिक्षा नीति ने दो कदम बढ़ाने का प्रयास किया है।

संस्कार शून्य शिक्षा से कभी भी मानवता का कल्याण नहीं हुआ है, आर्थिक जगत में कितने ही मानदण्ड स्थापित क्यों न कर लिए जाए किन्तु जब तक संस्कार युक्त जीवन व्यवहार की दिशा में चिंतन नहीं किया जायेगा तब तक व्यसन मुक्त समाज का निर्माण करना संभव नहीं हो पायेगा।

व्यसन बुरी आदतों का नाम हैं और सामाजिक बुरी आदतें अथवा व्यक्तिगत बुरी आदतें विनाश का ही प्रतीत होती है। नैतिक शिक्षा व्यक्ति को व्यसनों से बाहर निकालकर आदर्श मानव का निर्माण करती है एवं जीवन मूल्यों को मानवता के धरातल पर स्थापित करके उन्नति के सूत्रों का मार्गदर्शन करती है। व्यक्तित्व निर्माण में जहां बुद्धि संवेग संतुलन धैर्य का स्थान है वहीं भावनात्मक विकास को महत्व देती है। नैतिक शिक्षा केवल विकास का अनुकरण न करते हुए, विनाश से बचाते हुए उन्नति की राह सुनिश्चित करती है क्योंकि भौतिकता के संपूर्ण उत्थान चारित्र निर्माण के बिना अधूरे भी होते हैं। नूतन अनुसंधानों की प्रेरणा देने में नैतिक शिक्षा कोई कमी नहीं रखती है अपितु नैतिक शिक्षा मैत्री प्रेम और करूणा तथा समानता की सद्भावना के साथ विकास करने में विश्वास रखती है।

नई शिक्षा नीति में उच्च शिक्षा के संदर्भ में संरचनात्मक ज्ञान एवं ज्ञान मीमांसीय परिवर्तन प्रस्तावित है इसमें मातृ भाषा का सम्मान एवं विदेशी भाषाओं अनावश्य हस्तक्षेप से बचते हुये मुख्य ज्ञान धारा से जोड़ने का लक्ष्य प्राथमिकता से रखा गया है। गांधी जी की बुनियादी शिक्षा नीति का यह पुनः सर्जन है लेकिन इसमें नवीनता दृष्टि गोचर हो रही है यह शिक्षा नीतिका परिवर्तन सत्य और अहिंसा उद्घाटित करेगा।

धर्म की प्रभावना आचरण से होती है

❊ क्षुल्लक गणेश प्रसाद वर्णी ❊

प्रभावना दो तरह से होती है, एक तो पुद्‌गल द्रव्य को व्ययकर गजरथ चलाना, पचासों हजार मनुष्यों को भोजन देना, संगीत मंडली द्वारा गान कराना और उनके द्वारा सहस्त्रों नर नारियों के मन में जैन धर्म की प्राचीनता के साथ-साथ वास्तविक कल्याण का मार्ग प्रकट कर देना... **यह प्रभावना है। प्राचीन समय में लोग इसी प्रकार की प्रभावना करते थे, परंतु इस समय इस तरह की प्रभावना की आवश्यकता नहीं है।** और दूसरी प्रभावना वह है जिसकी लोग आज अत्यंत आवश्यकता बतलाते हैं। वह यह कि हजारों दरिद्रों को भोजन देना, अनाथों को वस्त्र देना, प्रत्येक ऋतु के अनुकूल व्यवस्था करना, अन्नक्षेत्र खुलवाना, गर्मी के दिनों में पानी पीने का प्रबंध करना, आजीविका विहीन मनुष्य को आजीविका में लगाना, शुद्ध औषधियों की व्यवस्था करना, स्थान-स्थान पर ऋतुओं के अनुकूल धर्मशालाएं बनवाना और लोगों का अज्ञान दूर कर उनमें सम्यक ज्ञान का प्रचार करना। **जिस ग्राम में मंदिर और मूर्तियों की प्रचुरता है, यदि वहां पर मंदिर न बनवाया जाय तथा गजरथ न चलाया जावे तो कोई हानि नहीं,** वही द्रव्य दलित लोगों के स्थितिकरण में लगाया जावे, बालकों को शिक्षित बनाया जावे, धर्म का यथार्थ स्वरूप समझा कर लोगों की धर्म में यथार्थ प्रवृत्ति कराई जावे, प्राचीन शास्त्रों की रक्षा की जावे, प्राचीन मंदिरों का जीर्णोद्धार कराया जावे या सब विकल्प छोड़ यथायोग्य विभाग के द्वारा साधर्मी भाइयों को धर्मसाधन में लगाया जावे तो क्या यह धर्म नहीं हो सकता ?

जिस समय श्री शांतिसागर महाराज का शिखर जी में शुभआगमन हुआ था उस समय वहां पर एक लाख से भी अधिक जनता का जमाव हुआ था। भारतवर्ष भर में धनाढ्‌य, विद्वान तथा साधारण मनुष्य उस समारोह में थे। पंडितों के मार्मिक तत्वों पर बड़े-बड़े व्याख्यान हुए थे। महासभा तीर्थक्षेत्र कमेटी आदि के अधिवेशन हुए थे, कोठियों में भरपूर आमदनी हुई, लाखों रूपये रेलवे कंपनी ने कमाये और लाखों ही रूपये मोटरकार तथा बैलगाड़ियों में गये। परंतु सर्वदा के लिए कोई स्थाई कार्य नहीं हुआ। क्या उस समय दस लाख की पूंजी से एक ऐसी संस्था का खोला जाना दुर्लभ था, जिसमें उस प्रांत के भीलों के हजारों बालक जैनधर्म की शिक्षा पाते, हजारों गरीबों के लिए औषधि का प्रबंध होता और हजारों मनुष्य आजीविका के साधन प्राप्त करते। परंतु यह तो स्वप्न की वार्ता है, क्योंकि हमारी दृष्टि इन कार्यों को व्यर्थ समझ रही है। यह कलिकाल का महात्म है कि हम द्रव्य-द्रव्य करके भी उनके यथेष्ट लाभ से वंचित रहते हैं। ईसाई धर्म बालों के देखिए, उन्होंने अपनी कर्तव्यपटुता से लाखों आदमियों को ईसाई धर्म में दीक्षित कर लिया।

एक दिन की बात है बरूआसागर में मूलचंद्र के ससुर को उनके पुत्र ने सिर में लाठी मार दी, उसमें सिर फूट गया और रूधिर बहने लगा। हम व मूलचंद्र सर्राफ वही पर बैठे थे, केवल वचनों से प्रलाप करने लगे कि देखा कैसा दुष्ट है ? पिता का सिर जर्जर कर दिया अरे ! कोई है नहीं, इसे पकड़ो, दरोगा साहब के यहां पुलिस में रिर्पोट कर दो। पता लगेगा कि मारने का यह फल होता है, देखों कैसा दुष्ट है। पिता वृद्‌ध है उसको उचित तो यह था कि इसको वृद्‌ध अवस्था में सेवा करता पर वह तो दूर रही, उल्टा लाठी से सिर जर्जर कर दिया। हे भगवान ! भारत में कैसे अधम पुरुष होने

लगे हैं। यही कारण है कि यहां पर दुर्विक्ष और मरी का प्रकोप बना रहता है। जहाँ पापी मनुष्यों का निवास रहता है वहां दुख की सब सामग्री रहती है .... इत्यादि जो कुछ मन में आया उसे वचनों द्वारा प्रकट कर हम दोनों ने संतोष कर लिया। पर यह न हुआ कि उस वृद्‌ध की कुछ सेवा करते। इतने में क्या देखते हैं कि एक मनुष्य जो वहां भीड़ में खड़ा हआ था, एकदम दौड़ा-दौड़ वह अपने घर गया और शीघ्र ही कुछ सामान लेकर वहां से आ गया। उसने जल से उस वृद्‌ध का शरीर व घाव धोया और घाव के ऊपर एक बोतल में से कुछ दवाई डाली और पश्चात् एक रेशम का टुकड़ा जलाकर सिर में भर दिया। फिर एक पट्टी सिर में बांध दी। साथ में दो आदमी लाया था, उनके द्वारा उस वृद्‌ध को उसके घर पहुंचा दिया। भीड़ में खड़े हुए पचासों आदमी उसकी इस सेवावृत्ति की प्रशंसा करने लगे।

हम लोगों ने पूछा- भाई आप कौन हैं ? वह बोला- इससे आपको क्या प्रयोजन ? हम कोई रहे, आपके काम तो आए फिर हमने आग्रह से पूछा-जरा बतलाइए तो कौन है ? उसने कहा- हम एक हिंदू के बालक हैं ईसाई धर्म में हमारी दीक्षा हुई है। हमारा बाप जाति से कोरी है। इसी गांव का रहने वाला था जब दुर्भिक्ष पड़ा और हमारे बाप की किसी ने परवरिश न की, तब लाचार होकर उसने ईसाई धर्म अंगीकार कर लिया। हमारी मां अब भी सीताराम का स्मरण करती है। हमारी रूचि भी हिंदू धर्म से हटी नहीं है, परंतु खेद है आप तो जैनी हैं, पानी छानकर पीते हैं, रात्रि-भोजन करते, किसी जीव का वध न हो जाए इसलिए चुग-चुग कर खाते हैं, कंडा नहीं जलाते क्योंकि उसमें जीव राशि होती है, खटमल होने पर खटिया घाम में नही डालते और किसी स्त्री के सिर में जुआ हो जावे तो उन्हें निकाल कर सुरक्षित स्थान पर रख देते हैं यह सब होने पर भी आपके यहां जो दया बतलाई है उससे आप लोग वंचित रहते हैं। एक वृद्‌ध को उसके लड़के ने लाठी मार दी, यह तुम लोग देखते रहे क्या एकदम लाठी मार दी होगी ? नहीं, पहले तो वृद्‌ध ने उसे कुद अनाप-शनाप गाली दी होगी। पश्चात् लड़के ने कुछ कहा होगा। धीरे-धीरे बात बढ़ते-बढ़ते यह अवसर आ गया कि लड़के ने पिता का सिर फोड़ दिया। आप लोगों को उचित था कि उसी समय जब कि उन दोनों बी बात बढ़ रही थी, उन्हें समझाकर या स्थानांतरित करके शांत कर देते। परंतु तुम लोगों में यह प्रकृति पड़ गई है कि झगड़े में कौन पड़े। यह शूरता नहीं, कायरता है। पीछे जब लड़के ने वृद्‌ध का सिर फोड़ दिया, तब चिल्लाने लगे कि हाय रे हाय ! कैसा दुष्ट बालक है पर हम आपसे पूछते हैं कि ऐसी संवेदना किस काम की ? तुम लोग केवल बोलने में शूर हो जिसकी संवदेना में कर्तव्य नहीं, उससे क्या लाभ ? कार्य करने में नपुंसक हो। उचित यह था कि उस वृद्‌ध की उसी समय औषधि आदि से सेवा करते। परंतु तुम्हें तो खून देखने से भय लगता है। पराये शरीर की रूग्ण अवस्था देख ग्लानि आती है तुम लोग अपने मां-बाप की सुश्रूषा नहीं करते। व्यर्थ ही अहिंसा धर्म की अवहेलना कर रहे हो। इससे कोई संदेह नहीं कि अहिंसा की परम धर्म है। परंतु तुम लोगों की भाषा ही बोलने में मधुर है। तुम्हारा अंतरंग शुद्ध नहीं हम लोगों से आप लोग घृणा करते हैं परंतु कभी एकांत में यह विचार कि हम ईसाई क्यों हो गए। खाने के लिए अन्न न मिला। पहनने के लिए वस्त्र नहीं मिले उस हालत में आप ही बतलाइए क्या करते ? आपका धर्म इतना उत्कृष्ट है कि उसका पालन करने वाला संसार में अलौकिक हो जाता है। परंतु तुम्हारे आचरण को देखकर मुझे तो दया आती है। मुझे तो ऐसे स्वार्थी लोगों को मनुष्य कहते हुए भी लज्जा आती है। अतः मेरी तो आपसे यह विनय है कि आप

लोग जितना बोलते हैं उसका सौवां हिस्सा भी पालन करने में लावें तो आपकी उपमा इस समय भी मिलना कठिन हो जावे। आप लोगों में इतनी अज्ञानता समा गई है कि आप लोग मनुष्य को मनुष्य नहीं मानते, सबसे उत्कृष्ट मनुष्य पर्याय है, उसका आप लोगों को ध्यान नहीं। यदि इसका ध्यान होता तो आपके धन का सदुपयोग मनुष्य के विकास में परिणत होता। आप लोगों के यहां एक भी ऐसा आयतन नहीं, जिसमें बालकों को प्रथम धार्मिक शिक्षा दी जाती हो। आप लोगों के लाखों रूपये मंदिर-प्रतिष्ठा तथा तीर्थयात्रा आदि में व्यय होते हैं, परंतु बालकों को वास्तविक धर्म का ज्ञान हो, इस ओर किसी का लक्ष्य नहीं, किसी का प्रयत्न नहीं, अस्तु, हमको क्या प्रयोजन ! केवल आप की चेष्टा देख हमने आप लोगों की कुछ त्रुटियों का आभास करा दिया है अच्छा हम जाते हैं।

हम उसकी इस खरी समालोचना से बहुत ही प्रसन्न हुए जिन्हें हम समझते है कि यह लोग धर्म-विरूद्ध आचरण करते हैं वे लोग भी हमारे कार्यों को देखकर हमें उत्तम नहीं मानते। कितना गया-बीता हो गया है हमारा आचरण वास्तव में धर्म की प्रभावना आचरण से होती है, यदि हमारी प्रवृत्ति परोपकाररूप हैं तो लोग अनायास ही हमारे धर्म की प्रशंसा करेंगे और हमारी प्रकृति तथा आचार मलिन है तो किसी की श्रृद्धा हमारे धर्म में नहीं हो सकती। **प्रस्तुतिः डॉ. अनिल कुमार जैन, जयपुर**

कविता

तुम मानवता के अग्रदूत

✻ दुलीचन्द्र जैन, साहित्यरत्न ✻

तुम मानवता के अग्रदूत बन कर आये,
तुम इस धरती पर मुक्तिदूत बनकर आये,
व्याकुल जग में संदेश अमरता का लाये,
तुम मानव-तन में स्वयं ईश बनकर आये ।
बापू तुमने पथ-भ्रांत भटकती दुनिया को,
सुख और शांति का पुनः मार्ग था बतलाया
भूले, अशांत, व्याकुल पीड़ितजन को फिर से,
वह सत्य-प्रेम का अमर ज्ञान था सिखलाया
तेरे उर में था गहरा करूणा श्रोत भरा,
पद-दलित मनुज को तूने आगे बढ़वाया,
तेरा, उर सागर से भी विस्तृत गहरा था,
तूने मानव को था हिंसा से हटवाया ।
आंधी-सी मानव जीवन में तुम लाये,
जिससे जन-जन का सोया सा गौरव जागा,
कुछ ज्वाला के कण अंतर में थे सुपत पड़े,
इस नये प्रभंजन से उनका चेतन जागा ।
तुम मानवता के अग्रदूत बनकर आये,
तुम इस धरती पर मुक्तिदूत बनकर आये ।

स्वरूपाचरण चारित्र और प.पू. आचार्य श्री विद्यासागर जी का चिंतन

✻ ब्र. जिनेश मलैया, इन्दौर ✻

भारतीय दर्शन में जैन अध्यात्म पूर्ण वैज्ञानिक और क्रमबद्ध है। आत्मानुभूति स्वरूपाचरण चारित्र जैन अध्यात्म की रीढ़ है। इसी स्वरूपा चरण चारित्र का विवेचन कभी कभी भ्रामक बन जाता है। प्रायः अठारहवीं शताब्दी में विद्वानों ने सम्यक्त्वाचरण चारित्र और स्वरूपाचरण चारित्र की भेद रेखा को स्पष्ट नहीं किया। आचार्य कुन्द कुन्द देव ने अष्टपाहुड़ ग्रंथ में सम्यक्त्वाचरणचारित्र और संयमाचरणचारित्र दो भेद ही चारित्र के किये हैं।

संयमाचरणचारित्र के अंतर्गत अहिंसा, सत्य, अचौर्य, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह इन पांच महाव्रतों एवं ईर्या-समिति, भाषासमिति, ऐषणासमिति, आदान-निक्षेपण-समिति, प्रतिष्ठापन समिति, इन पांच समितियों सहित मनोगुप्ति, वचनगुप्ति, कायगुप्ति इन तीन गुप्तियों के साथ तेरह प्रकार की चारित्र तथा साधु परमेष्ठी के 28 मूलगुण संयमाचरण चारित्र माना गया है। यह संयमाचरणचारित्र दीक्षा धारण करके दिगम्बर स्वरूप को प्राप्त कर लेने वाले साधक के ही पाया जाता है।

निशंकित, निकांक्षित, निर्विचिकित्सा, अमूढ़-दृष्टि, उपगूहन, स्थितिकरण, वात्सल्य, प्रभावना इन सम्यक्त्व के आठ गुणों से युक्त तथा जाति मद कुल मद, धनमद, ज्ञानमद, तपमद, ऋद्धिमद बलमद, पूजामद, इन आठ मदों का त्याग करके छः अनायतनों अर्थात कुगुरु, कुदेव, कुशास्त्र, कुगुरु के शिष्य कुदेव के मंदिर कुशास्त्र के वाचक प्रकार से बच के रहना एवं लोकमूढ़ता गुरुमूढ़ता देवमूढ़ता के त्याग कर देने के बाद जो चारित्र होता है वह सम्यक् त्वाचरणचारित्र है। इस तरह का सम्यक्त्वाचरण चारित्र का लक्षण आचार्य कुन्दकुन्द देव ने चारित्र पाहुड़ में अभिव्यक्त किया है।

छहढालाकार ने छठवीं ढाल में स्पष्ट किया है कि

''यों है सकलसंयमचरित, सुनिये स्वरूपाचरण अब, जिस होत प्रगटै आपनी निधि, मिटै पर की प्रवृत्ति सब।''

इन पंक्तियों से यह सिद्ध होता है कि पंडित दौलतराम की दृष्टि में पहले संयमाचरण चारित्र होता है इसके उपरांत स्वरूपाचरण चारित्र होता है। पूज्य आचार्यश्री विद्यासागर जी महाराज के चिंतन में जब यह विषय आया। तब उन्होंने चारित्र पाहुड़ की आठवी गाथा के अनुवाद पर ध्यान दिया और वे एक निष्कर्ष पर पहुँचे। कि सम्यक्त्वाचरणचारित्र अर्थ लिया है जो उचित प्रतीत नहीं होता है गाथा के विपरीत अर्थ निकालना अनुवाद कैसे माना जायेगा। यह संदर्भ दृष्टव्य है।

तं चैव गुणविसुद्धं जिणसमत्तं मुमुक्खठाणाय, जं चरइ णाणजुत्तं पढमं सम्मतचरणचारित्तं।

निःशंकित आदि गुणों से विशुद्ध अरहंत जिनदेव की श्रद्धा रखकर यथार्थ ज्ञान सहित आचरण करै सो प्रथम स्वरूपाचरणचारित्र है सो यह मोक्षमार्ग का कारण है। (चारित्र पाहुड गाथा नं. 8)

तत्वार्थ सूत्र में चारित्र के पांच भेद किये गये हैं। सामायिक, छेदोपस्थापना, परिहार विशुद्धि, सूक्ष्मराय, यथाख्यात इनमेंस्वरूपाचरण चारित्र का विधान नहीं किया गया है। स्वरूपाचरणचारित्र शब्द अभ्योदय एवं विकास कब और कैसे हुआ इस पर भी चिंतन करने की आवश्यकता है। आचार्य कुन्दकुन्द देव आचार्य उमास्वामी एवं आचार्य समन्तभद्र के साहित्य में स्वरूपाचरणचारित्र शब्द का उल्लेख कहीं प्राप्त नहीं होता। और सम्यक्त्वाचरणचारित्र को स्वरूपा चरण के रूप में अनुवादित करना अनुवादिक की स्वयं की बुद्धि है आचार्यों का ऐसा कोई भी अभिप्राय दृष्टिगोचर नहीं हो रहा है विषय का खींचकर के अनुवाद करना आचार्यों के मूलभावना के विपरीत है। पंचाध्यायी के संदर्भों को आचार्य प्रणीत संदर्भ नहीं माना जा सकता है। क्योंकि यह ग्रंथ पंडित राजमल जी के द्वारा रचित अधूरा ही ग्रंथ है।

जैन सिद्धांत प्रवेशिका में जो स्वरूपाचरण चारित्र की परिभाषा दी गई है वह पंचाध्यायी को आधार बनाकर दी गई है **स्वरूपाचरणचारित्र स्वसमयप्रवृत्तिरित्यर्थः । तदेव वस्तुस्वभावत्वाद्धर्मः।**

स्वरूप में (आचरण) करना चारित्र है। स्वसमय में प्रवृत्ति करना इसका अर्थ है। यहीं वस्तु का (आत्मा) का स्वभाव होने से धर्म है।

किन्हीं अनुवादकों की कृपा से धवला के 1/1,1,10/165,1 में आचार्य वीरसेन जी ने अनंतानुबन्धी कषाय को सम्यक्त्व और चारित्र दोनों का घातक बताने के लिए लिखा है।

अनंतानुबंधानां द्विस्वभावत्व प्रतिपादनफलत्वात् । यस्माश्च विपरीताभिनि-वेशोऽभूदनन्तानु बन्धनो, न तद्दर्शनमोहनीयं तस्य चारित्रावरण- त्वात् तस्योभय प्रतिबनधक्त्वादुभयव्यपदेशो न्याय्य इति चैत्र, इष्टत्वात्।

अनंतानुबंधी प्रकृतियों की द्विस्भावताका कथन सिद्ध हो जाता है, तथा जिस अनंतानुबंधी के उदय से दूसरे गुणस्थान में विपरीताभिनिवेश होता है, वह अनंतानुबंधी दर्शन मोहनीय का भेद न होकर चारित्र का आवरण करने वाला होने से चारित्र मोहनीय का भेद है।

अनंतानुबन्धी सम्यक्त्व और चारित्र इन दोनों का प्रतिबन्धक होने से उसे उभय रूप संज्ञा देना न्याय संगत है। उस पर आरोप ठीक नहीं है क्योंकि यह तो हमें स्पष्ट ही है। अर्थात् अनंतानुबन्धी को सम्यक्त्व और चारित्र इन दोनों का प्रतिबन्धक माना ही है। अनुवादकों ने धवला के प्रथम संस्करण में चारित्र के साथ स्वरूपाचरण शब्द जोड़ दिया था जिसे बाद में संशोधित किया गया । स्वरूपाचरणचारित्र शुद्धोपयोग से अनुबंधित है शुद्धयोपयोग के अभाव में स्वरूपाचरणचारित्र हो नहीं सकता है। जैसा कि पंडित दौलतराम जी ने छहढ़ाला में स्पष्ट किया है।

तीनों अभिन्न अखिन्न शुद्ध उपयोग की निश्चल दशा।
प्रगती जहां दृग-ज्ञान-व्रत ये तीनधा एकै लसा।।

इन पंक्तियों से यह ध्वनि निकलती हे कि स्वरूपाचरणचारित्र शुद्धोपयोग के साथ होने पर अभेद रत्नत्रय के होने पर होता है। शुद्धोपयोग ओर अभेद रत्नत्रय की उपलब्धि मुनि दशा में ही संभव है जिन विद्वानोंने ग्रहस्थ अवस्था में शुद्धोपयोग और स्वरूपाचारणचारित्र की सिद्धि करने का प्रयास किया है उन्होंने सचमुच में गधे की सींग की कल्पना की है।

पूज्य आचार्यश्री विद्यासागर जी महाराज जी ने स्वरूपाचरण के विषय में यह भी कहा कि ग्रहस्थ अवस्था में स्वरूपाचरणचारित्र होता है। इस विषय में कोई प्रमाण उपलब्ध नहीं होता है यदि कोई ऐसा आगम प्रमाण उपलब्ध करा दे तो मैं उसका आभारी रहूँगा मात्र युक्ति से सिद्ध करना पर्याप्त नहीं माना जा सकता है।

फिर भी यदि कोई युक्ति को आधार बनाकर असंयत ग्रहस्थ अवस्था में अथवा संयतासंयत की अवस्था में स्वरूपाचरणचारित्र को सिद्ध करने का दुस्साहस करता भी है तो उसे यह नहीं भूलना चाहिए कि श्वेताम्बर परम्परा के समान ग्रहस्थ अवस्था में केवलज्ञान की उपलब्धि रोकी नहीं जा सकती एवं चौदह गुण स्थानों की व्यवस्था भी भंग हुए बिना नहीं रहती है ग्रहस्थ अवस्था में यदि केवलज्ञान होने लगे तो संयम धारण करने की भी आवश्यकता नहीं रह जाती है। फिर स्त्री मुक्ति को अबाधित स्वीकार करना पड़ेगा। तथा सवस्त्र मोक्ष की मान्यता को अस्वीकार कैसे किया जा सकेगा इन सभी बाधाओं को देखते हुए चतुर्थ गुणस्थान में स्वरूपाचरण की सत्ता स्वीकार करना आगम प्रमाण के अपलाप करने के सिवाय और कुछ भी नहीं है। अतः स्वरूपाचरणचारित्र शुद्धोपयोगी ज्ञानी मुनि के ही होता है। इसे स्वीकार किये बिना कोई भी निश्चय भाषी मिथ्यादृष्टि होने से बच नहीं सकता है।

संयम स्वास्थ्य योग

कैल्शियम प्राप्ति का प्रमुख साधन है दूध

डॉ. श्रीमति आशा जैन, इन्दौर

जीवनीय गण के द्रव्यों में एवं रसायनों में दूध सर्वोत्तम एवं सम्पूर्ण आहार है। बच्चा जन्म के पश्चात सिर्फ माँ का दूध पीकर ही स्वस्थ रहता है एवं विकास को प्राप्त करता है। यह दूध के पूर्ण आहार का प्रत्यक्ष प्रमाण है। पर्याप्त मात्रा में सिर्फ दूध पीकर भी मनुष्य आनन्द पूर्वक जीवन बिता सकता है। इसके लिए दूध पर्याप्त (तीन से चार लीटर प्रतिदिन) लेना आवश्यक है। जल की तरह दूध भी समस्त प्राणियों को जीवन भर (जन्म से लेकर मृत्यु पर्यन्त) उपयोगी एवं अनावश्यक है।

दूध पीने के फायदे- 1. भारतीयों के लिए दूध ही कैल्शियम प्राप्ति का प्रमुख साधन है। दूध में विटामिन ए.बी.सी विटमिन बी12 (रीबोफ्लेबीन)मिलते हैं। विटामिन डी कम मात्रा में होता है। दूध को उबालने से विटामिन सी कम हो जाता है परन्तु पाश्चुरीकरण की क्रिया से विटामिन सी की मात्रा में कमी नहीं होती है। दूध को तेज रोशनी में खुला रखने से रीबोफ्लेबीन (बी12) नष्ट हो जाता है।

2. दूध में कैसीनोजन, लैक्टैल्व्यूमिन तथा लेक्टोग्लोब्यूलिन नामक प्रोटीन होते हैं । कार्बोज एवं लेक्टोज मिलता है जो आंतों में जाकर ग्लूकोज तथा गैलेक्टोज में विभक्त हो जाता है। लैक्टोज लैक्टिड एसिड में बदलकर आंतों में सड़नक्रिया करने वाले जीवाणुओं को नष्ट कर देता है। एवं दूध द्वारा अन्त्रस्थ जीवांश (इन्टेस्टीनल फ्लोरा) का संरक्षण होता है। जो कि मानव स्वास्थ्य एवं विटामिन की दृष्टि से बहुत महत्वपूर्ण है।

3. दूध, वातज, पित्तज, रक्तज तथा मानसिक रोगों में अनुकूल रहता है। जीर्ण ज्वर कास आदि रोगों में भी लाभप्रद है।

4. दूध में सात्विक गुण होने से पापमयी (तमोगुणी) प्रकृतियों को नष्ट कर सात्विक प्रकृति को बढ़ाता है।

5. अस्थियों (हड्डी) के बल देने वाला एवं अस्थित संधानक (टूटी हुई हड्डियों को जोड़ने वाला है।)

6. दूध सभी प्रकार के आहारो की अपेक्षा सुपाच्य है।

7. दूध रस एवं विपाक में मधुर है। यह स्निग्ध (स्नेह युक्त) ओज वर्धक, रस रक्तादि सप्त धातु वर्धक, वातपित्त का शमन करने वाला, कफ कारक एवं भारी है।

8. दूध पीने से शरीर का क्षारीय स्त्राव बढ़ जाता है। अतः दूध पित्तज रोगों में लाभप्रद है। (वासकर अमाशय के अल्सर में यह ALKALY ACID को कम कर एसीडिटी को समाप्त करता है। एवं अति लाभप्रद है।)

पंथ विहीन मूलसंघः स्वरूप, प्राचीनता और शाश्वतता

✲ डॉ. राजेन्द्र कुमार बंसल, शहडोल म.प्र. ✲

विश्व की धर्म संस्कृतियों में जैन संस्कृति विशिष्ट है, जो श्रमण संस्कृति के नाम से जानी जाती है। इसका मूल आधार द्रव्यों की स्वतंत्रता और स्वावलम्बन हैं। विश्व अनादि निधन है। उसकी सतत् सत्ता है किन्तु उसका नियामक / व्यवस्थापक नहीं है। इसी आधारभूत सिद्धांत के अनुसार वस्तु के स्वरूप को प्रतिपादित करने वाला जैन धर्म भी अनादि निधन है। जैन दर्शन में सृष्टि के कर्त्ता-हर्त्ता रूप में कोई ईश्वरीय सत्ता का अस्तित्व नहीं है। किन्तु सम्पूर्ण जीव राशि शक्ति अपेक्षा परमात्मामय हैं। मोह विकार वर्जना से रहित जो जीव विशुद्धात्मा/शुद्धात्मा हो गये वे सिद्ध-जीव ही कार्य परमात्मा हैं। प्रत्येक जीव में त्रिकाल रूप से ज्ञायक परमात्मा विद्यमान है। उसे व्यक्त करने हेतु सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्र की एकता रूप सर्व परिग्रह का त्याग कर निर्ग्रंथ धर्म अंगीकार करना होता है। मुक्ति का यह शाश्वत मार्ग हैं। इसके उपदेष्टा तीर्थंकर होते हैं।

मूलसंघ का स्वरूप और परम्परा :- वर्तमान में जैन धर्म के अंतिम और चौबीसवें तीर्थंकर वर्धमान महावीर का शासन चल रहा है। उनका जन्म वैशाली गणराज्य के कुण्डलपुर में ईसापूर्व 599 में हुआ था। ईसापूर्व 527 में वे सिद्ध परमात्मा बने थे। उनके द्वारा उपदेशित विद्यमान दिगम्बर जैन परम्परा मूल आम्नाय के रूप में पल्लवित हुई। इसमें कर्मबंध के क्षय एवं सिद्धत्व की प्राप्ति हेतु निर्ग्रन्थता (श्रमणत्व) अनिवार्य है।

तीर्थंकर महावीर के श्रमण संघ में ऋषि, मुनि, यति और अनगार- इन चार प्रकार के मुनियों के समूह को मूल संघ कहते थे। मूल आम्नाय में मूल अर्थात रत्नत्रय की श्रद्धा सहित निर्दोष निर्ग्रन्थता और 28 मूलगुणों की आचार पद्धति अंगीकार की जाती है। निज शुद्ध स्वभाव का आश्रय लेने के कारण इसे शुद्धम्नाय भी कहते हैं। अभी तक अनंत चौबीसी हो गयी। सभी तीर्थंकरों ने शुद्धात्मा स्वरूप की प्राप्ति रूप परमात्मा होने का अपने समय की विशिष्टताओं के संदर्भ रत्नत्रय सहित निर्ग्रन्थता का शाश्वत मार्ग दर्शाया।

भगवान महावीर के निर्वाण के पश्चात् उनका मूल संघ 62 वर्ष तक अखण्ड रूप से चलता रहा। इस काल में गौतम गणधर, सुधर्मा स्वामी एवं जम्बूस्वामी अनुबद्ध केवली हुए। इसके पश्चात 100 वर्षों तक नन्दि (विष्णु), नन्दिमित्र, अपराजित, गोवर्धन, तथा भद्रबाहु (प्रथम) श्रुत केवली हुए। श्वेताम्बर परम्परा में प्रभव, स्वयंभू, यशोभद्र, संभूति विजय और भद्रबाहु श्रुतकेवली माने गए। भद्रबाहु (प्रथम) को दोनों परम्पराओं में अंतिम श्रुतकेवली मान्य किया गया। भद्रबाहु (प्रथम) के दोनों परम्पराओं के पूर्व एवं अंगधारियों आदि की पट्टावली भिन्न एवं असमान है। विद्वान मनीषियों का मत हैं कि नग्नत्व या सवस्त्र मुक्ति को लेकर जिनकल्प (अचेलधर्म) और स्थाविरकल्प (सचेलक मार्ग) के रूप में मूलसंघ का विभाजन हो गया। इसमें जिनकल्पी धर्म मूल संघ में बने रहे जबकि स्थविरकल्प मार्गी श्वेताम्बर कहलाएंगे। मूलसंघ में भेद होने का उल्लेख श्वेताम्बर ग्रंथ विशेषावश्यक भाष्य एवं दशवैकालिक में हुआ है। किन्तु इससे यह शंका सहज ही होती है कि क्या सवस्त्रमुक्ति की अवधारणा वाला व्यक्ति ग्यारह अंग और चौदह पूर्वों का ज्ञाता रूप श्रुतकेवली हो सकता है ? यह बिन्दु विचारणीय है। संघ भेद के इस प्रयास से श्वेताम्बर मत का सम्बन्ध तीर्थंकर महावीर से जुड़ गया।

श्रुतकेवली भद्रबाहु (प्रथम) और द्वादशवर्षीय दुर्भिक्ष से संघ भेदः- मूल संघ की पट्टावली के अनुसार पंचम श्रुत केवली भद्रबाहु (प्रथम) का काल ईसा पूर्व 394-365 बताया गया है। उनके समय में उज्जैनी (उत्तर भारत) में बड़ा भयंकर द्वादशवर्षीय दुर्भिक्ष पड़ा। जिसके कारण भद्रबाहु बारह हजार मुनिसंघ सहित उत्तरापथ से दक्षिणापथ की और विहार किये। कुछ साधु उत्तर भारत में ही रूके गये। उज्जैनी का सम्राट चन्द्रगुप्त मौर्य भद्रबाहु का शिष्य था। उसने भी राज-पाट त्याग कर गुरु से जिनेश्वरी दीक्षा ली और संघ में सम्मिलित हो गया। भद्रबाहु स्वामी और मुनिचन्द्र गुप्त (प्रभाचन्द्र) कटवप्र (चन्द्रगिरी) पर ठहर गये। वही उन्होंने और मुनि चन्द्रगुप्त ने आत्म साधना की और वहीं उनका समाधिमरण हुआ। मुनिचन्द्रगुप्त ने अपने गुरु की समर्पित भाव से सेवा की। चन्द्रगिरी में भद्रबाहु की गुफा में उनके चरण चिन्ह स्थापित और पूज्य है। वहाँ चन्द्रगुप्त वसिद भी है। शिलालेख क्र. 1 एवं अन्यों में उनका उल्लेख हैं। ऋद्धिधारी मुनि चन्द्रगुप्त के गुरु आज्ञा से निकटवर्ती वनों में जाकर कांतारचर्या निरतिचार की। मुनि चन्द्रगुप्त के निवेदन पर विशाखनन्दि आचार्य के मुनिसंघ ने भी कान्तारचर्या की। इसमें देवों द्वारा नगर बसा कर आहार दिया जाता है। श्रावकों ने इसका महान उत्सव मनाया। इसका विवरण महाकवि रइधूकृत भद्रबाहु कथानक एवं शिलालेख में मिलता है। इस प्रकार भद्रबाहु और मुनिचन्द्र गुप्त की साधना और समाधि स्थली होने के कारण श्रवणबेलगोला दक्षिणापथ का मूल आम्नाय का महान तीर्थ बन गया। पश्चात् अनेक मुनिराज ने वहां आत्म साधना की। विश्व प्रसिद्ध गोम्मटेश भगवान बाहुबली की मूर्ति ने तीर्थराज की महिमा अनंतगुनी कर दी।

उज्जैनी उत्तर भारत में ठहरे साधुओं को अत्यंत भयंकर दुष्काल झेलना पड़ा। वहाँ आहार की प्राप्ति दुर्लभ हो गयी। उन्होंने सिद्धवृत्ति त्याग कर शिथिलाचार को अपनाया और नग्नत्व त्यागकर वस्त्र पात्रादि धारण कर लिये। यहाँ से अर्द्ध फालक संघ की नींव पड़ी जो क्रमशः शिथिलाचार में परिणत होता हुआ सौराष्ट्र देश में वि.ए. 136 में श्वेताम्बर संघ में उद्भूत हुआ। इस प्रकार पंचम श्रुत केवली भद्रबाहु (प्रथम) के काल में अखण्ड मूलसंघ दिगम्बर तथा श्वेताम्बर के रूप में विभक्त हो गया।

भद्रबाहु (प्र.) के बाद श्रुतज्ञान का ह्रास होता गया। उनके बाद दिगम्बर जैन परम्परा में विशाखाचार्य आदि ग्यारह अंग और दश पूर्व धारी हुए। पश्चात् नक्षत्र आदि पांच आचार्य ग्यारह अंगधारी हुए और सुभद्रादि चार आचार्य एक आचारंग के धारी हुए और शेषश्रुत के एक देश ज्ञाता हुए। इनमें भद्रबाहु (द्वि) और लोहाचार्य भी सम्मिलित हैं। इसके पश्चात् प्राकृत पट्टावली के अनुसार, अर्द्धशक्ति आदि पांच आचार्य एक अंगधारी हुए। इस प्रकार भगवान महावीर के पश्चात् 683 वर्ष तक अंगधारी आचार्यों की मूलसंघ की परम्परा चली। अलिखित श्रुत परम्परा के इस काल में स्मृति दोष से अंगज्ञान क्रमशः लुप्त होता गया। आचार्य धरसेन (प्रथम शताब्दि) एक देश अंग के अंतिम ज्ञाता थे जो गिरनार जी को चन्द्र गुफा में निवास करते थे। इसके निमित्त से षटखंडागम सिद्धांत ग्रंथ की उत्पत्ति हुई।

मूलसंघ का अनेक संघों में विघटन (विभाजन) :- एकांगधारी आचार्य अर्हद्बलि ने पंचवर्षीय युग प्रतिक्रमण के अवसर पर महिमानगर (जिला-सतारा) में एक महान यति सम्मेलन किया जिसमें सौ योजन तक के साधु सम्मिलित हुए। इस सम्मेलन में दो महत्वपूर्ण घटनाएँ घटी। प्रथम धरसेनाचार्य के अनुरोध पर श्रुतरक्षा हेतु दो प्रज्ञावान एवं विनयशाली साधुओं को गिरनार जी भेजा गया। ये पुष्पदंत और भूतबली नाम से प्रसिद्ध हुए। इन्होंने धरसेनाचार्य से सिद्धान्त का अभ्यास

किया और षटखंडागम नामक प्रथम श्रुत संघ की रचना की। दूसरा मूलसंघ का विघटन। अर्हद्वलि को उपस्थित साधुओं में शिष्यों के प्रति पक्षपात करने का आभास हुआ। अतः उन्होंने मूल संघ को सिंह, नन्दि सेना तथा देव नामक चार संघों में विभाजित कर दिया। पश्चात वृषभ, काष्ठा, वीर, अपराजित, पंचास्तूप, भद्र, गुणधर, गुप्त, चन्द्र आदि अनेक अवान्तर संघ और गणों की उत्पत्ति मूल संघ में हुई। धीरे-धीरे काल दोष से कुछ संघों में शिथिलाचार ने प्रवेश किया जिनके कारण वे जैनाभास कहलाने लगे।

मूलसंघ में जैनाभासों की उत्पत्तिः-

जैनाभासी संघों में छः प्रसिद्ध हैं :- 1. श्वेताम्बर 2. गोपुच्छ या काष्ठा, 3. द्रविड, 4. यापनीय या गोप्य, 5. निष्पिच्छ यागाथुर और 6. भिल्लकसंघ।

इन संघों की अनेक शाखाएं और गच्छ है।

यापनीय संघ श्वेताम्बर से उत्पन्न हुआ संघ है। यापनीय संघ के साधु नग्न रहते थे किन्तु उनकी मान्यताएँ और धार्मिक क्रियाएँ श्वेताम्बर संघ जैसी होने के कारण वे प्रच्छन्न श्वेताम्बर जैसे थे। यापनीय साधु मन्दिर मठों में रहकर गृहस्थोंचित कार्य, तंत्र-मंत्र, वैद्यक, आदि करने के कारण यापनीय भट्टारकीय परम्परा के सूत्र धार कहे जा सकते हैं। कुछ विशिष्ट विद्वान यापनीय सम्प्रदाय- मूलरूप से दिगम्बर सम्प्रदाय हैं, ऐसा मानते हैं- यह सर्वथा अनुचित हैं।

गोपुच्छ रखने के कारण काष्ठा संघी गोपुच्छ भी कहलाते थे। काष्ठा संघ के चार भेद हुए-नन्दि तटगच्छ, माथुर गच्छ, बागडगच्छ और लाडबाडगच्छ। काष्ठ संघ की भट्टारकीय परम्परा में सचित्त द्रव्य पूजा, स्त्री अभिषेक, पंचामृत एवं सर्वोषधी अभिषेक होता है। दिकपाल और शासन देवताओं की पूजा होती हैं। यह कार्य मूल आम्नाय में वर्जित हैं। जबकि बीस पंथ के मानने वाले काष्ठा संघ की परम्परा को पालते हैं। काष्ठा संघ को जैनाभासी माना गया हैं।

विशिष्ट शब्दों का अभिप्राय:- उक्त विवरण में मूल संघ, संघ भेद, संघ विघटन और जैनाभासी शब्दों का प्रयोग हुआ है। स्पष्टता हेतु इनका अर्थ अभिप्राय समझना आवश्यक हैं। मूल संघ उसे कहते हैं जिसके कोई अन्य संघ उत्पन्न हुआ हो। पं. महावीर का श्रमण संघ मूलसंघ हैं। संघ भेद तब होता है जब मूलसंघ से किसी अन्य संघ का उदय हो जैसे मूल संघ से श्वेताम्बर मत का उदय होना। संघ- विघटन उसे कहते हैं जब मूल संघ के स्थान पर अन्य नामों से नये संघ या गच्छ बना दिया जाये, ऐसे संघ मूल संघ के ही माने जाते हैं। जैनाभास से आशय ऐसे संघों से हैं जो मूल संघ की अवधारणा/सिद्धांतों और आचार्य पद्धति में मनोनुकूल परिवर्तन कर आचरण करते हैं। वे वास्तविक जैन नहीं किन्तु लगते हैं। अतः जैनाभासी कहलाते हैं।

उक्त विवेचन से यह स्पष्ट होता है कि अविभाजित मूलसंघ निरन्तर संघ भेद एवं संघ विघटन के बाद भी शुद्धाम्नाय के रूप में विद्यमान है। मूल संघ में जब-जब भी विकार या विकृतियां आई उनका परिमार्जन या प्रच्छेद कर जैन धर्म दर्शन मूल स्वरूप को यथावत बनाए रखा जो पंचम् काल के अन्त रहेगा।

निर्ग्रन्थ एवं मूलसंघ के प्राचीन संदर्भ :- वर्तमान में वीतरागी देव द्वारा प्रवर्तित निर्ग्रन्थ संघ को मूल संघ माना जाता है। इस दोनों शब्दों का प्रयोग प्राचीन काल से आगम और अभिलेखों में हुआ है।

भगवान महावीर ने मोह, राग, द्वेष, रूप अथवा मूर्च्छारूप अंतरंग परिग्रह और क्षेत्र वास्तु, धन, आदि परिग्रह को ग्रन्थ कहा हैं। जो 14 प्रकार के अंतरंग और 10 प्रकार के बाह्य परिग्रह को त्याग देता हैं वह निर्ग्रन्थ कहलाता है। वह यथाजात रूप हो जाता है। अर्थात् व्यवहारनय नग्नपना

यथाजात रूप हैं। और निश्चयनय से अपनी आत्मा का (स्वात्मरूप) जो यथार्थ स्वरूप है उसे धारण करने वाला निर्ग्रन्थ कहलाता है। (ता.वृ./प्र. सार) गाथा 204) आचार्य जयसेन ने गाथा 269 की टीका में **वस्त्रादि परिग्रह रहितत्वेन निर्ग्रन्थोऽपि** कहकर उसकी पुष्टि की है। आचार्य कुन्दकुन्द ने श्रमणों के मूल गुणों का वर्णन प्रवचन सार की गाथा-208 एवं 209 में किया है। इसकी टीका आचार्य जयसेन ने की है। जो मूलतः पठनीय है। बौद्ध ग्रंथों में निर्ग्रन्थ के लिए निगंठ शब्दों का प्रयोग हुआ है।

अभिलेखनीय प्रमाण :- सम्राट अशोक के सातवें अभिलेख (ई. पूर्व 242) में सभी धार्मिक सम्प्रदायों तथा ब्राह्मणों, आजीविकों के साथ निर्ग्रन्थों शब्दों को लिखवाया है। दिल्ली/टोपरा/स्तम्भलेख/क्रं. 1/ जै.शि.सं / मा.च.भा-2) निर्ग्रन्थ शब्द दिगम्बर जैन मुनियों के लिए प्रसिद्ध था।

ईसा की पांचवी शताब्दी (ईस्वी-479) में उत्कीर्ण पहाड़पुर, ताम्रपत्र, पंचस्तुपनिकाय के साधुओं को निर्ग्रन्थ कहा है। (पहाड़पुर ताम्रपत्र, लेख क्र.- 19/ जै. शि.सं./भा.इ./भा.-4)।

नोणमंगल-ताम्रपत्र लेखों-ई. सन् 370 एवं सन् 425 में मूलसंघ शब्द का उल्लेख हैं, यथा

1. श्रीमता-माधववर्म्म-महाधिराजेन.. अर्हदायतनाय मूल संघानुष्ठिताय... दत्तः
(जै.शि.सं/मा.च./भाग-2/ले.क्र.90) ईस्वी सन् 370

2. श्रीमताकोङ्गुणिवर्म्म-धर्म-महाधिराजेन आत्मनः श्रेयसे... मूलसङ्घेनानुष्ठिताय..दत्तः
(जै.शि.सं./मा.च./भाग-2/ले.क्र. 94) ईस्वी सन् 425

उक्त शिलालेखीय प्रमाणों से दिगम्बर जैन निर्ग्रन्थ एवं मूलसंघ की परम्परा प्राचीन है। यह उल्लेखनीय है कि श्वेताम्बरों के लिए पांचवी शती ई. तक श्वेतपट शब्द प्रचलित था, किन्तु दिगम्बरों के लिए निर्ग्रन्थ प्रचलित था। बाद में दिगम्बर शब्द का प्रयोग हुआ। इससे यह सिद्ध है कि निर्ग्रन्थ (दिगम्बर) परम्परा ही भगवान महावीर द्वारा प्रवर्तित मूल परम्परा है, इसलिए मूलसंघ शब्द की उसका पर्यायवाची नाम हैं।

कुन्दकुन्दान्वय, शुद्धाम्नाय मूल संघ में गर्भित :- मूलसंघ के आचार्य परम्परा में श्रुत केवली भद्रबाहु (प्रथम) भद्रबाहु (द्वि.) धरसेन, अर्हद्बली आदि के साथ आचार्य कुन्दकुन्द का नाम श्रद्धा और बहुमान पूर्वक लिया जाता है। मंगल स्तोत्र में भगवान महावीर के बाद गौतम गणधर और कुन्दकुन्द का नाम स्मरण किया जाता है। आचार्य कुन्दकुन्द ने समयसार, प्रवचनसार, नियमसार सहित 84 पाहुड़ों की रचना कर शुद्धात्मा की अनुभूति ज्ञान और आत्मरमण का व्यवहारिक मार्ग दर्शाया। इस कारण उनके द्वारा रचित ग्रंथों को द्वितीय श्रुत स्कंध से पूज्य माना। आचार्य कुन्दकुन्द ने श्रुतकेवली भद्रबाहु को गमकगुरु मानकर उसकी जयकारी की हैं। (वो.पा. 61-62)।

आचार्य कुन्दकुन्द ने सूत्र पाहुड गाथा-23 में सवस्त्र मुक्ति का निषेध किया और नग्नता को मोक्ष मार्ग माना। लिंग पाहुड़ में आचार्य कुन्दकुन्द ने मुनियों के शिथिलाचार और गृहस्थोंचित्त कार्यो में संलग्नता की घोर निंदा की है। आचार्य कुन्दकुन्द के अध्यात्म एवं कठोर अनुशासन के कारण वे मूलसंघ के अधिकाष्ठा जैसे माने गये और उनके नाम से अन्वय शुरू हो गया। मूर्ति लेखों में मूल-संघ, वलात्कारगण, सरस्वती गच्छ और कुंदकुंदान्वय लिखा जाने लगा। जबकि काष्ठा संघ के मूर्ति लेखों में काष्ठा संघे माथुरगचछे पुष्कर गणे आदि लिखा जाता है। (देवगढ़ मूर्ति लेख स. 1493 एवं चूलगिरि शिलालेख सं. 1516)

मूलसंघ ही शुद्धाम्नायं है इसकी पुष्टि पचराई (चन्देरी) शिलालेख सं.1122 से होती है। चौदह पंक्तियों के शिलालेख का चतुर्थ पद इस प्रकार है।

जेकृतिराजनस्य । पर पाटान्वयेसु (शु) द्वे साधुनम्नि महेस (2) वर. । महेस (2) वरेव विष्यातस्तत्सुतो वो (बो) ध (9) संवत् ॥22॥

परवार अन्वय को शुद्ध कहा हैं जो शुद्धाम्नाय की सूचक है। शुद्धाम्नाय की परम्परा को बनाएं रखना परवार अन्वय की विशेषता है अन्य मूर्तियों में मूल आम्नाये शुद्धें शब्द लिखा मिलता हैं।

मुनि रामसिंह कृत पाहुड दोहा गाथा-185 में कहा गया हैं कि जो क्षुद्र (रागी-द्वेषी) देवता को पूजता है वह न तो एकलीकरण जानता है और न जल की निर्मलता का रहस्य पहचानता है। और न आत्मा और पर भावों का मेल समझता है। इस टीका के भावार्थ में सम्पादक डॉ. देवेन्द्र कुमार शास्त्री ने लिखा है कि निज शुद्धात्म स्वभाव के साधन द्वारा दर्शन, ज्ञान, चारित्र, भावमन आदि की शुद्धता प्राप्त करना ही शुद्धाम्नाय है। शुद्धाम्नाय वीतरागता में धर्म मानता है, अतः जहाँ राग का लक्ष हैं वहाँ शुद्धता नहीं हो सकती। पूजा, वन्दना, वीतरागता की है, राग की नहीं। जहाँ आत्मश्रद्धान नहीं है अज्ञान और असंयम है, वहाँ वीतरागता का अभाव है। तीर्थंकर महावीर का श्रमण संघ मूल संघ के नाम से प्रसिद्ध है। उसी में से अन्य संघों का उद्भव है, इसे ही शुद्धाम्नाय कहा जाता है। शुद्धाम्नाय का प्रयोग तीन अर्थो में गर्भित है- 1. परमार्थ स्वरूप सच्चे देव, शास्त्र, गुरु और धर्म को मानने वाली परम्परा 2. शुद्धाचरण, शुद्ध भोजनपान और नीति-न्याय से जीवन-निर्वाह करने की पद्धति तथा 3. शुद्धनय की विषय भूत शुद्धात्मानुभूति पूर्वक मोक्षमार्ग मानने वाली पद्धति (पृ. 217-218)।

भट्टारकीय परम्परा और मूल संघः- भगवान महावीर के मूल संघ में उत्तर भारत में श्वेताम्बर संघ की उत्पत्ति हुई। दक्षिण-भारत में द्रविड, यापनीय एवं अन्य जैनभासी संघों की उत्पत्ति हुई जैसे ऊपर विवरण दिया हैं। दक्षिण में नवमी शती के पूर्वाद्ध में आद्य शंकाराचार्य का प्रादुर्भाव हुआ। उस काल में जैन और बाद्ध धर्म के उच्छेद हेतु मंदिर मूर्तियों का संहार और श्रमण संघों पर अत्याचार हुआ। शंकराचार्य ने चार पीठ स्थापित किये। वैष्णवों और शैव समाज के द्वारा उत्पीड़न, साधु संहार से बचने और जैन संस्कृति की रक्षा करने के उद्देश्य से भट्टारकीय मठ परम्परा का उद्भव हुआ।

यंत्र-मंत्र-तंत्र चमत्कार आदि से उन्होंने समाज को प्रभावित किया। मूर्तियों की प्रतिष्ठा ग्रंथ लेखन, धर्म प्रभावना के अनेक मंगल कार्य हुए। साथ ही जैन समाज की रक्षा हेतु उन्होंने शैव एवं वैष्णव क्रिया कांड को अपनाया। रूद्राभिषेक के अनुरूप पंचामृत अभिषेक करना शुरु किया। रूद्राभिशेक और पंचामृत अभिषेक की क्रियाएँ समान है। इसी प्रकार आचार्य सोमदेव ने वैष्णव क्रियाकाण्ड को जैन पूजा पद्धति में समाहित कर दिया। इन क्रियाओं के पोषण हेतु प्राचीन जैनाचार्यों के नाम से अभिषेक पाठ और श्रावकाचार ग्रंथ जाली रूप से बनायें गये। यक्ष-यक्षिणियों और देवी-देवताओं का पूजन प्रारंभ हुआ। जिनेन्द्र देव उपेक्षित हुए। भट्टारक लक्ष्मी सेन ने दिल्ली कोल्हापुर, जिनकांची और पेनगोण्डा में मठ स्थापित किये। कर्नाटक में चारूकीर्ति भट्टारक के नाम से श्रवणबेलगोला मूडबद्री, हॉबुज, कारकाल और वास्ति मठ स्थापित हुए।

उमास्वामी श्रावकाचार, कुन्दकुन्द श्रावकाचार, त्रिवरणाचार, भद्रबाहु संहिता, पूज्यपाद श्रावकाचार, अकलंक प्रतिष्ठासार, बृहत्स्नपन (गुणभद्र भदंत), सावयधम्म दोहा, आदि ग्रंथ आचार्यों के नाम से रचवाकर उनके नाम से क्रियाकाण्ड संचालित करते रहे। इसकी समीक्षा पं. श्री जुगलकिशोर जी मुख्तार, आ.श्री सूर्यसागर जी, पं. श्री राजकुमार शास्त्री, पं. श्री पन्नालाल जी, श्री मिलापचन्द्र जी कटारिया, आदि ने की और इन शास्त्रों को मूल संघ के बाहर का घोषित किया। माल्लिषेण (11वीं शती) ने भैरव पद्मावती कल्प, सरस्वती कल्प, ज्वालामानिनी कल्प,

कामचण्डाली आदि की रचना कर वीतराग मार्ग को भ्रष्ट मार्ग बना दिया। इन विक्रत ग्रंथों के आधार पर गृहस्थ विद्वानों ने भी अभिषेक पाठों की रचना की। जिनेन्द्रदेव की पूजन के स्थान पर क्षेत्रपाल पूजा, पद्मावती पूजा, सरस्वती पूजा, ज्वालामालिनी पूजा आदि बनाई। इस प्रकार जिनेन्द्र भक्त देवों को भगवान बना दिया। भट्टारकों के द्वारा या प्रेरणा से इस प्रकार रचा गया साहित्य, पूजा आदि उस समय की परिस्थितियों को अनुकूल हो सकता है, किन्तु उससे वीतराग श्रमण संस्कृति विकृत हुई। जैनदर्शन का अकर्त्तावाद और आत्मा का स्वयंभूपना विलुप्त हुआ और श्रावक दूसरों की कृपा हेतु पराश्रित हो गया।

भट्टारकीय परम्परा के दो रूप प्रकट हुए। पहला-द्राविड संघ सहित काष्ठासंघ और दूसरा मूल संघ। काष्ठासंघ ने वैदिक और शैव परम्परा का अनुकरण किया जिसके अनुयायी बीसपंथी कहलाये। मूल संघ ने निर्ग्रन्थ परम्परा के मूल स्वरूप को अपनाया ओर तेरह पंथी नाम से प्रसिद्ध हुए।

इतिहास साक्षी है कि श्रुतकेवली भद्रबाहु से लेकर आचार्य नेमिचन्द्र (10वीं शती) तक दक्षिण भारत में मूल संघ की परम्परा आगमानुसार चली। मुनि चन्द्रगुपत मौर्य की आत्मसाधना से उद्भूत कान्तारचर्या के अद्भुत अतिशय से वनदेवता पूज्य नहीं बने। किसी ने चमत्कार को नमस्कार नहीं किया, किन्तु गोम्टेश बाहुबली के सर्वांग अभिषेक के गुल्लिका अज्जी का अतिशय देवी आराधना का निमित्त बन गया। उत्तरवासी गणिनी जी के लौकिक सोच ने इस प्रकरण को स्त्री-अभिषेक का प्रेरक बना दिया।

अब जब कि देश की सामाजिक और राजनैतिक स्थिति अनुकूल है, भयरहित हैं , विवेकवन्त जैन विद्वानों, साधुओं और भट्टाराकों का यह कर्त्तव्य है कि वे संस्कृति के उज्जवल पक्ष की और मुड़ कर देखें और तर्क आधारित मूल संघ की आचार संहिता को पुनः स्थापित करें। आस्था या विश्वास एक साथ वीतरागी और रागी की नहीं हो सकती। ऐसा करना स्वयं को छलना हैं।

धार्मिक क्रिया भी दार्शनिक अवधारणा के अनुरूप और सुसंगत होना चाहिये। जो क्रिया निजी जीवन में करना योग्य नहीं हैं उसे वीतरागी मूर्ति के साथ करना विद्रूपता और अनुचित है। परम्परा के नाम पर विज्ञजन विकृत धार्मिक क्रियाओं का बोझ ढोना साधन और समय का दुरुपयोग ही मानेंगे। धर्म का प्रारंभ सम्यग्दर्शन से होता है। मिथ्यात्व के निवारण में वीतरागी देव के एकाग्रता पूर्वक दर्शन का निमित्त बनता हैं। यह कार्य रागीद्वेषी देव की पूजा/दर्शन से सम्भव नहीं। इससे तो मिथ्यात्व भाव की पुष्टि होती हैं। पूजा-पद्धति के भेद में क्रिया -भेद आता है किन्तु आस्था भेद नहीं आता। अस्तु अपने परिणामों पर विचार कर सम्यक् मार्ग अपनाना हितकर होगा। निर्दोष पूजा-पद्धति में अनुचित परिवर्तन करने, सावद्य द्रव्य से पूजा करने या मुनि, श्रावक-श्राविका द्वारा अकरणीय कार्य को करने से धर्म/संस्कृति के उच्छेद का खतरा उत्पन्न होता है।

मूलसंघ पोषक तारणपंथ तेरह पंथ :- भट्टारकीय परम्परा से दिगम्बर सम्प्रदाय में पिच्छी के साथ वस्त्र धारण करना प्रारंभ हुआ। वैसे पिच्छीधारण करने का अधिकार 28 मूलगुण पालन करने वाले साधुओं को हैं। भट्टारकों ने मठ-मंदिर का निर्माण आदि का कार्य किया। उससे उनमें साधुत्व के स्थान पर शासकत्वं का भाव विकसित हुआ। वे अपने को राजगुरु कहलाते थे, राजा के समान पालकी, छत्र, चंवर, गादी का उपयोग करने लगे और सेवक-सेविकाएँ रखने लगे। उनका पट्टाभिषेक राज्याभिषेक बड़ी धूमधाम से होता था। धर्म के क्षेत्र में इस प्रकार की विकृतियों से समाज में विरोध के स्वर गूँजे। और उत्तर भारत में भट्टारकीय प्रथा से उत्पन्न विकृतियों में सुधार करने तथा मूल आम्नाय की पुनः स्थापना हेतु विद्वानजनों ने सार्थक प्रयास कियें।

मुस्लिम आक्रमणकारियों ने पंद्रहवी शताब्दी तक जैन मूर्ति कला और स्थापत्य कला को बहुत नुकसान पहुंचाया। मंदिरों का ध्वंस और मस्जिदों में परिवर्तन हुआ । इसमें सुधार हेतु तारण-तरण स्वामी (ई. 1448-1515) ने मूर्तिपूजा और धार्मिक क्रियाकाण्ड के आडम्बर का विरोध किया। अंत में उन्होंने साधु दीक्षा ग्रहण की। उन्होंने अध्यात्म परक चौदह ग्रंथों की रचना की। उनमें श्रावकाचार भी है । तारण-तरण स्वामी संत के नाम से प्रसिद्ध थे । इनको जैन-जैनेत्तर सभी ने अपनाया। तारण-तरण स्वामी मूल आम्नाय में आई विकृतियों के सुधारक थे। कालान्तर में उनके नाम से तारणपंथ प्रारंभ हुआ।

भट्टारकीय परम्परा से उत्पन्न विकृतियों को दूर करने हेतु पं. बनारसी दास जी (ई. 1586-1643) ने शैली/ गोष्ठी का मार्ग अपनाया। आप महाकवि और अध्यात्म प्रेमी थे। अपने नाटक समयसार, बनारसी विलास, अर्द्धकथानयक आदि के माध्यम से शिथिलाचार का विरोध और शुद्धाम्नाय का प्रचार किया । अठारहवी शती में पं. टोडरमल जी (ई. 1720-1767) ने मूल आम्नाय की दृढ़ता एवं साहसपूर्वक स्थापना की । सर्व श्री पं. दौलतराम कासलीवाल, ब्र. रायमलजी, पं. जयचन्द्र जी छाबड़ा, पं. सदासुख दास जी, पं. दीपचन्दजी शाह आदि विद्वानों ने अपनी रचनाओं प्रवचनों एवं तत्त्व चर्चा द्वारा मूल आम्नाय को सुदृढ़ किया। इसके प्रभाव से उत्तर भारत में भट्टारकीय परम्परा का अंत हो गया।

पं. टोडरमल जी के समकालीन और भट्टारकीय परम्परा के पोषक विद्वान, पंडित वख्ताराम शाह ने वि.सं. 1821 (ई. 1764) में अपनी कृति मिथ्यात्व खंडन में तेरह, पंथ की उत्पत्ति वि.सं. 1683 (ई. 1626) में आगरा में बताई। ब्र. राजमल जी ने ज्ञानचन्द्र श्रावकाचार में कहा- हे भगवान! म्हां तो थाका वचना के अनुसार चला होता तै तेरापंथी हों। तो सिवाय और कुदे वाकि को म्हां नाहीं सेवे हैं (पृ-111) तुम्हीं ने सैवों सौं तेरापंथी सौं म्हां तुम्हारों आज्ञाकारी सेवक हों (पृ-115)।

ब्र. राजमल का उक्त कथन मूल आम्नाय की अविरलधारा की पुष्टि करता है। जो देश-काल की परिस्थितियों में उत्पन्न विकृतियों को सुधार कर, मूलसंघ की भगवान महावीर की मूल परम्परा से अपने को जोड़े रखता है। मूल आम्नाय पथ विहीन परम्परा है। इसे 13 या 20 पंथ में नही बांटा जा सकता। पं. टोडरमल जी ने पंथवाद का खण्डन करते हुए कहा जो अपनी बुद्धि करि नवीन मार्ग प्रकरेतै युक्त नाहीं। जो परम्परा अनादि निधन जैन धर्म का स्वरूप शास्त्र विषै लिख्या हैं, तत्व प्रवृत्ति मेटि बीचि में पापी पुरुषों अन्यथा प्रवृत्ति चलाई, तो ताकौं परम्परा मार्ग कैसे रहिए। बहुताकौं छोड़ि पुरातन जैन शास्त्रनिविषैं जैसा धर्म लिख्या था, तैसे प्रवर्ते, तो ताकौं नवीन मार्ग कैसें कहिए (मो.मा.प्र. पृष्ठ -315)

उपसंहार- मनुष्य जीवन का चरम उद्देश्य अतीन्द्रिय ज्ञान और अतीन्द्रिय सुख की प्राप्ति और तदनुसार सम्यक प्रयास करना है। यह कार्य जिनेन्द्र देव द्वारा उपदिष्ट रत्नत्रय एवं निर्ग्रंन्थ मार्ग द्वारा सम्भव हैं। अंत में श्रुतकेवली भगवान भद्रबाहु (प्र.) और उनके अनन्य शिष्य चन्द्रगुप्त मौर्यै ने सम्राट पद त्यागकर निर्ग्रन्थ दीक्षा लेकर इसकी साधना की और यह मार्ग निर्बाध रूप से 10वीं शताब्दी तक चलता रहा। मूलाचार में वर्णित 28 मूलगुणों का निरतिचार पालन कर द्रव्य एवं भाव रूप से निर्ग्रन्थ होना यही मूल संघ की शाश्वत परम्परा है। इन मूलगुणों के उच्छेक स्वतः मूलसंघ से बाह्य हो जाते हैं और उन्हें इष्ट की प्राप्ति महादुर्लभ हो जाती है। मूल संघ में वीतरागी देव आराध्य हैं। अन्य रागी देवों की आराधना लौकिक लाभ हेतु वैदिक परम्परा में होती हैं। अस्तु, जिनाज्ञानुसार, विकृत एवं दर्शन-असंगत क्रियाओं का त्याग कर मूल आम्नाय या शुद्धाम्नाय का अनुगामी बनकर जीवन सार्थक करें। श्रीकानजी स्वामी ओर उनके अनुयायी मूल आम्नाय के समर्थक हैं ।

दादी की पाठशाला

* न्यायमूर्ति विमला जैन, भोपाल*

किसी भी महामारी की हानिकारक परिस्थितियाँ अपने साथ कुछ अच्छे अवसर भी साथ लाती है। इस प्रकार की विपरीत परिस्थितियाँ नये विचार पैदा करती है। लोगों को सामाजिक तथा नैतिक स्तर पर ऊपर उठने का मौका देती है। अपनों को ज्यादा करीबी और बेहतर ढंग से जानने का अवसर देती है । इन दिनों हम फर्मल की बजाय अधिक केजुअल हो जाते हैं। यही सब कोरोना महामारी में भी घटित हुआ है।

वरिष्ठ नागरिक दिवस, 21 अगस्त 2020 के अवसर पर यह उल्लेखनीय है कि लंदन, बैंगलुरु और इन्दौर में निवास कर रहे हमारे पौत्र और पौत्रियाँ अपने घरों में बंद है। उन्हें शिक्षित और प्रशिक्षित करने के उद्देश्य से हमने कोरोना काल के छिपे अवसर की पहचान की। दादी की पाठशाला चालू की। इस पाठशाला का क्षेत्र दो महाद्वीपों-एशिया और यूरोप, दो देशों-भारत और यू.के. तथा भारत के दो राज्यों मध्यप्रदेश और कर्नाटक, तक फैला हुआ है।

हमारी धारणा है कि बच्चों जितना अपने पेरेंट्स से सीखते हैं, उससे कही अधिक ग्रेन्ड पैरेन्ट्स से सीखते है। किसी चीज के बिगड़ जाने पर खुद ही उसे ठीक करना सीखते है। मुश्किलों के हालातों का सामना करना सीखते हैं। पर हमें प्रसन्नता है कि कोरोनाकाल में भी हमारे बच्चें चिड़चिड़े नहीं हुए है। आलसी नहीं हुए है। उनका बजन नहीं बढ़ा है।

अपने पौत्र और पौत्रियों को उनके युवा एवं अति व्यस्त माता-पिता की सहमति और सतत सहयोग से वीडियो काल पर कुछ अच्छी चीजें सिखाकर हमने उन्हें कुछ अधिक संस्कारित किया। उनकी आँखों के सपने पढ़कर और उनके मनोभावों को समझकर उन्हें कुछ बेहतर बनाने में मदद की। अपने बच्चों को खानपान में बदलाव की सीख दी कि भोजन की बर्बादी न करें न जंक फूड खायें। स्वास्थ्य को बिगाड़ने वाले खाद्य और पेय पदार्थो से दूर रहे।

अपने पौत्र और पौत्रियों को मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य को विकसित करने के छोटे-छोटे उपाय बतायें । उन्हें बड़ों से बात करने की कला सिखाई ।हमने अपने छोटे-छोटे बच्चों को सामाजिक कौशल की शिक्षा दी। उन्हें सिखाया कि वे बड़ो की बात मानें। उनकी बातें सुने। उनकी आँखों में अपनी आँखें डालकर चर्चा करें। जिससे झिझक कम हो सके और आत्मविश्वास में वृद्धि हो सके। एक दूसरे को सहयोग दें। हमने उन्हें सोशल मीडिया के कायदे सिखायें। उन्हें बताया कि असल जीवन में सफल खिलाड़ी बनने के लिए मोबाइल गेम कम से कम खेले। वास्तविक जीवन की हकीकतों में रूबरू होने के लिए अधिक से अधिक समय दे।

वीडियों कॉल पर सब बच्चों ने आपस में मिल-जुलकर खूब चर्चा की। हमें उनसे कुछ जानने और नया सीखने का अवसर मिला। खुलकर हँसने, खेलने और खिलखिलाने का अवसर मिला। हमने अपने और अपने पोते-पोतियों के दिमाग को व्यस्त रखा। उनकी पहली भाषा अंग्रेजी होते हुए भी उन्हें प्राकृत, संस्कृत और हिन्दी के विषय पढ़ायें। देवनागरी लिपी और हिन्दी भाषा का न होते हुए भी बच्चों ने रूचि पूर्वक अध्ययन किया। उन्हें इन तीन भाषाओं के शब्दों की शक्ति पहचान कराई। उनकी जब इच्छा हुई तब पढ़ाया। उनकी जितनी इच्छा हुई, उतना पढ़ाया। उनकी सुविधा से उनके द्वारा निर्धारित समय पर पढ़ाया। आमोद-प्रमोद के साथ पढ़ाया। पूरे स्नेह और आत्मीयता के साथ पढ़ाया। उनके अंतर्मन की भावनाओं को समझते हुए पढ़ाया। उनकी रचनात्मकता को उभारा। उन्हें

वह सब कुछ जो वे अपने स्कूल के सामान्य दिनों में नहीं पढ़ पाते।

इन शिशुओं और किशोरों की चमकती ऑखों में उनका मंगलमय भविष्य देखा। उनसे गहन रिश्ते बनायें और निभायें। उनसे अधिक घुल मिल गये। उनके भावनात्मक कोष में वृद्धि की। हमने अच्छे कामों और सामाजिक बदलाव के लिए आधुनिक तकनीकों का उपयोग किया। अपने नाती पोतों की उत्तरदायी डिजिटल नागरिक बनने के लिए प्रेरित किया है। उनके शौक को नई ऊँचाई दी।

इसके साथ ही बच्चों ने ऑनलाईन पढ़ाई के दौरान अनुशासन बनायें रखा। बेहतर व्यवहार बनायें रखा। उन्होंने हमें कुछ अच्छी चीजें सिखाई। कुछ नई बातें बताई। हमने भी अपने दिमाग पर थोड़ा सा जोर देकर नई-नई चीजें सीखने और उन्हें याद रखने की कोशिश की। अपने दिल और दिमाग को स्वस्थ और सक्रिय रखा। हम सब मानसिक और भावनात्मक रूप से संतुष्ट, स्वस्थ और प्रसन्न रहे। अपने दिल में पाले हुए दादी और नानी के सपनों को सच होते देखा और प्रसन्नता के साथ गर्व का अनुभव किया।

हमने अपने इन छोटे-छोटे बच्चों को प्राकृत भाषा में णमोकार मंत्र, संस्कृत भाषा में भक्तामर स्तोत्र और हिन्दी भाषा में प्रार्थना, मेरी भावना तथा सरस्वती वंदना याद कराई। याद किये गये विषयों को प्रतिदिन उनसे सुना। उनसे यह सब मौखिक सुनकर हम सभी का दिल खुश हो गया। अपने पोते-पोतियों के साथ बैठकर भजन, पूजन और आरती की। हमारा गौरव बढ़ गया। हमारे सतत परिश्रम का अच्छा परिणाम मिल गया। हमारी पाठशाला हमारे बच्चों के मन और मस्तिष्क में सकारात्मकता भर रही है। उनके व्यक्तित्व में नैतिक मूल्यों को विकसित कर रही है। हमने महसूस किया कि हमारी इस पाठशाला से उनका लगाव बढ़ रहा है।

यह उल्लेखनीय है कि पौत्री विधि सिंघई, जिसने यू.के. के विश्व विख्यात न्यूकासल मेडीकल विश्ववद्यालय में प्रवेश लिया है, न अपने अठारहवें जन्मदिन की पूर्व संध्या पर प्रेषित अपनी मेल में हमें लिखा है कि I look forward to talking to you every day on the video call and will promiss to continue to do so, every week when i go to university. हमें विश्वास है कि यह प्रोमिस हमारी तीसरी पीढ़ी के विधि के व्यक्तित्व में सर्वोत्तम सदगुणों को विकसित करेगा और वह विश्व की उत्कृष्ट नागरिक और उच्च कोटि की सफल डॉक्टर बनेगी। अपनी इस मेल के साथ विधि द्वारा प्रेषित अपनी किशोर वय के चित्र उसकी बेहतर हो रही पारिवारिक और सांस्कृतिक रूचि को प्रदर्शित करते है।

दादी की पाठशाला सिंघई सतीशचन्द्र केशरदेवी जन कल्याण संस्थान की छोटी सी इकाई है। निकट भविष्य में संस्थान द्वारा इन बच्चों की उपलब्धियों का मूल्यांकन किया जावेगा और उन्हें ज्योति पर्व 2020 पर स्वर्ण पदक और अन्य पदकों से सम्मानित किया जावेगा। उन्हे विविध पुरस्कार दियें जावेंगे। उन्हें जैन तीर्थ नैनागिरि की यात्रा कराई जावेगी।

विमला जी ने जैन महिलाश्रम, सागर से माध्यामिक शिक्षा ग्रहण की। सागर और उज्जैन महाविद्यालय से बी.ए., एम.ए., एल.एल.बी. की उपाधि ग्रहण की। डेली कॉलेज, इन्दौर में शिक्षक बनते-बनते उनका चयन न्यायाधीश के पद पर हो गया। 36 वर्ष का सेवाकाल पूर्ण कर मध्यप्रदेश उच्च न्यायालय के न्यायाधीश के पद से सेवानिवृत्त हो गई। सरकार ने उन्हें विभिन्न पदों पर कार्य करने के लिए संकेत दिए किन्तु उन्होंने अपनी विनम्रता प्रगट करते हुए स्वीकार नहीं किए वे अपने पारिवारिक कार्यों, धार्मिक शिक्षण और प्रशिक्षण में अपने बहुमूल्य समय और अनुभव का उपयोग कर रही है। कोरोना काल में अपने पौत्र-पौत्रियों को सफलता पूर्वक प्रशिक्षित कर रही है। निश्चित ही उनकी सेवायें पूरी समाज के लिए सराहनीय और प्रत्येक दादी-नानी के लिए अनुकरणीय हैं। **सम्पादक**

कोरोना काल और जैन जीवन पद्धति

* अजित जैन जलज, टीकमगढ़ *

वर्ष 2020 की शुरुआत चीन में कोरोना के कहर से हुयी, बाकी दुनिया जब तक कुछ विशेष समझ पाती, इसने वैश्विक महामारी का रूप धारण कर दुनिया को दहला दिया। अभी तक कोरोना को खत्म करने की कोई दवाई नहीं बन पाई है अतः कोरोना का कोहराम साल भर मचा रहेगा तथा यह वर्ष विश्व इतिहास मे कोरोना काल के नाम से जाना जायेगा।

प्रारंभ मे कोरोना को मांसाहार से जोड़ा गया, फिर मुसलमानों को दोषी ठहराया गया और इसमें कुछ हद तक सच्चाई भी थी परंतु अंतिम दौर में इसने जैनों को भी जमकर जकड़ा। एक बार फिर अनावश्यक आक्षेप लगना शुरु हो गये। सूचनाओं के समंदर में फेक न्यूज और भ्रामक ज्ञान की नदियाँ अपना जहर उगलती रहती है अतएव ऐसे कठिन काल मे कुछ कहना सरल तो नहीं है परंतु विचारों की तरंगे उत्पन्न कर अहिंसा का उदघोष तो किया ही जा सकता है।

कोरोना (कोविड-19) एक वैश्विक विपदा- कोरोना एक प्रकार का फ्लू है। सर्दी खाँसी का ही थोड़ा बिगड़ा रूप फ्लू (एनफ्लूएंजा) है। प्रतिवर्ष पूरे विश्व में अरबों लोगों को फ्लू होता है और बहुत से लोग साधारण दवाईयों से तो बहुत से लोग बिना दवा के भी ठीक होते रहते हैं।

कोविड-19 नामक रोग कारोना वायरस के एक नये रूप से पनपा है। कोरोना एक आर.एन ए. वायरस है। संसार का सबसे तुच्छ जीव जिसे पूरी तरह से जीव भी नहीं माना जा सकता। कोरोना मनुष्य की कोशिकाओं में फैलकर संक्रमण फैलाता है।

चीन के शहर बुहान में मीट मार्केट से फैले इस वायरस ने तेजी से लोगों को बीमार शुरू किया। खाँसने और छींकने पर आसानी से फैलने वाले इस रोग की गंभीरता तब समझ से आयी जब यह रोग सारे संसार में फैला और अंततः मार्च महीने में भारत समेत कई देशों को अपना कामकाज और आवागमन पूरी तरह से बंद करना पड़ा।

विश्व इतिहास में पहली बार पूरी दुनिया एक साथ एक दुश्मन कोरोना से लड़ रही है। करोड़ों लोग बीमार हो चुके हैं , लाखों लोग मर गये हैं, सारे संसार में भय का साम्राज्य पसर चुका है। उपासना स्थल सूने हैं, लाखों लोग बेरोजगार हो गये हैं, करोड़ों लोग परेशान हैं।

अस्पताल डॉक्टरों और वैज्ञानिकों के भरोसे पूरी दुनिया वैक्सीन और दवा की आशा में टकटकी लगाये बैठी हैं।

जैनो को कोरोना :- शुरुआत में हम सबने इसके खूब मजे लिये। सबने जब ये मान ही लिया कि कोरोना तो माँसाहारी लोगों को ही होता है, उसी समय मुम्बई, पुणे, सूरत, इन्दौर में एक ही झटके में अनेक शाकाहारी व्यक्तियों और फिर जैनों को भी जकड़ा तो हमारी उपहार की मुखमुद्रा उदास में बदल गयी। जैनो की संख्या भारत में बहुत कम है फिर भी बहुत से जैन लगातार संक्रमित होकर बीमार हो रहे हैं और अनेक साधर्मी जन असमय दिवंगत भी हो गये हैं।

अधिकांश जैन परिवार व्यापार से जुड़े हुये हैं, व्यापारी के पास सब प्रकार के लोग आते हैं और फिर जैन व्यापारी को जैन मंदिर में भी सबसे घुलना मिलना होता है इसलिए रोग भी खूब फैला।

जैन पद्धति एवं कोरोना :- एक समय था जब जैन सिद्धांतों अहिंसा और अनेकान्त का विश्वव्यापी प्रभाव हुआ था परंतु इस समय पूरा विश्व उपभोक्तावाद, प्रकृति के विनाश, और

मशीनों की गुलामी के दौर से गुजर रहा है।

अपरिग्रह की अवधारणा पूरे विश्व में सुख और शांति ला सकती है परंतु आज सबसे ज्यादा परिग्रह जैनों के पास ही है।

संसार भर में कोरोना से पीड़ित सबसे बड़ा वर्ग प्रकृति से दूर रहने वाले सर्व सुविधा भोगी लोगों का ही है, श्रमजीवियों की संख्या सबसे कम है।

जैनधर्म भी मूलतः श्रममूलक श्रमण धर्म ही है। आदर्श जैन जीवन पद्धति में कोरोना कुछ न हीं कर सकता है।

कोरोना की कोई दवाई नहीं है फिर भी अधिकांश लोग ठीक होकर घर आ रहे हैं। जिसकी रोग प्रतिरोधक क्षमता (इम्युनिटी) अच्छी होती है उसे कोरोना या अन्य बीमारियाँ आसानी से नहीं होती है और होती भी हैं तो जल्दी ही ठीक भी हो जाती हैं।

अगर हमारा भोजन संतुलित और सात्विक हो, सक्रिय जीवन शैली हो, हम घृणा, डर, आक्रोश, अहंकार जैसे मनोविकारों से मुक्त हो तो निस्संदेह हमारी रोग प्रतिरोधक क्षमता भी अच्छी होगी।

अगर हम अपनी आत्मा की अनंत शक्तियों का स्मरण करें तो हममें नयी ऊर्जा का संचार होगा परंतु आत्मवैभव युक्त व्यक्ति सुविधाभोगी कभी नहीं रह सकता।

किसी भी बीमारी में प्रासुक एवं गुनगुना पानी तथा पर्याप्त शारीरिक/ मानसिक आराम सबसे महत्वपूर्ण होता है।

सप्ताह में एक दो बार पाचन प्रणाली को आराम दीजियें। फलाहार, एकासन अथवा ऊनोदर करके कर्मों की निर्जरा भी होगी और स्वास्थ्य भी अच्छा होगा।

जैनाचार पढ़िये, समझियें, आचरण में उतारियें।

संक्रमण मुक्तः स्वस्थ विचार बिन्दु :-

- ✻ कोरोना से भी खतरनाक, कोरोना का डर है।
- ✻ सारे संसार में कोरोना संक्रमित मुश्किल से 2% मर रहे हैं, इन 2% लोगों में से भी अधिकांश अन्य गंभीर बीमारियों वाले व्यक्ति शामिल हैं। इससे ज्यादा लोग तो टी.बी., एड्स, मलेरिया, कैंसर से मर जाते हैं परंतु इनकी नियमित गिनती प्रदर्शित नहीं होती।
- ✻ कोरोना से संक्रमित अधिकांश लोग बिना दवाई के चंगे होकर घर आ चुके है। भारत में ही करोड़ो लोग ऐसे हैं जिनका अभी तक टेस्ट नहीं हुआ, संक्रमित होकर अपने आप ठीक भी हो चुके हैं।
- ✻ एलोपैथिक दवाईयों का अक्सर उपयोग करने वालों की इम्युनिटी कमजोर हो जाती है और इस पर ही निर्भर रहने वाले लोग आगे भी परेशान होंगे।
- ✻ मैंदा, तेल, घी, शक्कर, नमक और बेसन से बने व्यंजनों से बचिये। ताजे स्थानीय फल खाईये। हरी सब्जी, मूंग की दाल, खिचड़ी, दलिया खाने की आदत बनायें। हल्दी, सोंठ, काली मिर्च, तुलसी, मैथी, अजवाईन का औषधि के रूप में प्रयोग करें।
- ✻ हम जीवमात्र का हित चिंतन करते हैं अतः किसी धर्म, जाति, सम्प्रदाय, व्यक्ति विशेष के प्रति पाली घृणा की गंदगी को साफ कर लीजिए, इस कार्य में माँ जिनवाणी हमारी मदद करेगी। अगर हम स्वस्थ होंगे तो प्रसन्न होंगे प्रसन्नता से ही धर्म के मार्ग पर चल सकेंगे और तभी हम सुखी समाज बना पायेंगे।

चलो देखें यात्रा

घोघा

प्राचीन समय समुद्र तट पर घनाड्य लोगों की घनी वस्ती हुआ करती थी उनमें घोघा भी एक विशेष तीर्थ है। जैनों का समुद्र के किनारे एक मात्र तीर्थ घोघा है। इस तीर्थ का संबंध श्रीपाल की कथा से भी जुड़ता है। श्रीपाल जब समुद्र के किनारे पार हुए थे तब उन्होंने एक सहस्त्रकूट जिनालय के दर्शन किये थे यहाँ पर भी एक धातु का पंचसहस्त्र कूट चैत्यालय है जहां मंदिर जी में अति प्राचीन भव्य जिनबिंब विराजमान हैं। जिन्हें पुरातत्वविद शैली के अनुसार अत्यंत प्राचीन मानते हैं। तथा श्रद्धालुजन की किवदंती के अनुसार चौथे काल के जिनबिंब माने जाते हैं खंवात की खाड़ी के तट पर इतना सुंदर मनोरम दृष्य बहुत कम तीर्थों पर देखने को मिलता है 2008 में जनवरी के महिने में मुनि पुंगव 108 सुधासागर जी, एलक श्री सिद्धांतसागरजी एवं क्षुल्लकश्री गंभीर सागर एवं क्षुल्लकश्री धैर्यसागरजी ने इस तीर्थ की वंदना की तो वे भावुक होकर कहने लगे ऐसा अद्वितीय तीर्थ जैनों का अन्य कहीं दूसरी जगह देखने को नहीं मिलता है।

आवास व्यवस्था : 2 कमरे बिना बाथरूम के है। यात्री ठहराने की कुल क्षमता 30 है। भोजनशाला सशुल्क अनुरोध पर उपलब्ध है।

संपर्क सूत्र : अध्यक्ष श्री घोघा दशा हूमड़ श्री जसवंत राय गांधी -0278-2422488

मंत्री श्री किरीट भाई गांधी शाह - 0278-2436515

क्षेत्र प्रबंधक श्री मुकेश संदीप भाई शाह- 0278-253132

कविता

खोजा नहिं मैं कौन

✻ ब्र. सुदेश जैन, कार्यकारी सम्पादक संस्कार सागर ✻

मुझे चाहिए शान्ति-सुख-हर दम यही पुकार जिसे खोजने के लिए
कर्म अनेक प्रकार पृथ्वी जल वायु, अनल वनस्पति, त्रस काय,
सुख को खोजा हर जगह मिला न किसी प्रकार नरक गया सुरगन गया धरा निगोद
शरीर रंच न सुख-शान्ति मिली-सही पीर पर पीर मानव तन पा खुश हुआ
खोजा सुख चहुँ ओर भक्ष्य अभक्ष्य सभी भखे-मिली तृप्ति ना ठौर
वस्त्रों में खोजा कभी खूब किया श्रृंगार दर्पण में प्रतिबिम्ब लख हुआ प्रसन्न अपार
धन-वैभव बहु जोर कर खोजा सुख का द्वार किन्तु अशान्ति मिली सदा
चिन्ता अरु भय-भार सेठ बना, राजा बना बन चक्री सम्राट छहों खण्ड की सम्पदा
देखा वैभव ठाठ इत्र-फुलेल लगा-लगा मल-मल धोय शरीर खूब रखाया तन-वदन
मिला न सुख ना धीर काल अनादि भ्रमण किया इच्छा नाहिं समाहिं नहिं संतुष्ट हुआ कहीं
भ्रमा चतुर्गति मांहि मैं-मैं-मैं करता रहा **खोजा नहिं मैं कौन ?**
यदि 'मैं' को पहिचानता फिर हो जाता मौन जो भी 'मैं' से मिल सकता
उसे मिला सुख ठौर हुआ व्यर्थ इन्द्रियन सुख रूचे न फिर कुछ और।

आगम दर्शन

आचार्य पूज्यपाद की जैनेन्द्र व्याकरण परिचय

श्रवणबेलगोला के शिलालेखों एवं महाकवि धनन्जय की नाममाला में स्पष्ट उल्लेख है कि जैनेन्द्र व्याकरण आचार्य पूज्यपाद द्वारा रचित है। हेम शब्दानुशासन के रचयिता कनकप्रभ ने भी जैनेन्द्र व्याकरण को आचार्य पूज्यपाद का स्वीकार किया है। जैने व्याकरण के दो सूत्र पाठ उपलब्ध होते हैं। एक के अनुसार 3000 सूत्र हैं दूसरे के अनुसार 3700 सूत्र है।

पंडित नाथूराम जी प्रेमी ने यह निष्कर्ष निकाला है कि देवनन्दि या पूज्यपाद का बनाया हुआ सूत्र पाठ वही है जिस पर अभयनन्दि ने अपनी वृत्ति लिखी है।

जैनेन्द्र व्याकरण में पाँच अध्याय हैं। और प्रत्येक अध्याय में चार-चार पद हैं। इसका पहला सूत्र महत्वपूर्ण है। इसमें **सिद्धिरने कान्तात्** सूत्र से समस्त शब्दों का साधुत्व अनेकान्त द्वारा स्वीकार किया है, क्योंकि शब्द में नित्यत्वः, अनित्यत्व, उभयत्व, अनुभयत्व आदि विभिन्न धर्म रहते हैं। इस नाना धर्मों से विशिष्ट धर्मी रूप शब्द की सिद्धि अनेकान्त से ही सम्भव है। एकान्त सिद्धान्त से अनेक धर्म विशिष्ट शब्दों का साधुत्व नहीं बतलाया जा सकता। यहाँ अनेकान्त से अंतर्गत लोक प्रवृत्ति को भी मान्यता दी है। लोक प्रसिद्धि पर आश्रित शब्द व्यवहार भी मान्य है।

जैनेन्द्र का संज्ञाप्रकरण सांकेतिक है। इसमें धातु प्रत्येय, प्रतिपादिक, विभक्ति, समास आदि महासंज्ञाओं के लिए बीजगणित जैसी अतिसंक्षिप्त संकेत पूर्ण संज्ञाएं आयी हैं। इस व्याकरण में उपसर्ग के लिए 'गिं' अव्यय के लिए 'झीः' समास के लिए 'सः' वृद्धि के लिए 'ऐप' गुण के लिए 'एप', सम्प्रसारण के लिए 'जिः' प्रथमा विभक्ति के लिए 'वा' द्वितीया के लिए 'इण' तृतीया विभक्ति के लिए 'भ' चतुर्थी के लिए 'अप' पंचमी के लिए 'का' षष्ठी के लिए 'ता' सप्तमी के लिए 'इप' और सम्बोधन के लिए 'किः' संज्ञाएँ बतलायी गयी हैं। निपात के लिए 'निः' दीर्घ के लिए 'दीः' प्रगह्य के लिए 'दिः' उत्तरपद के लिए 'धुः' सर्वनाम स्थान के लिए 'धम्' उपसर्जन के लिए 'न्यक्ः' प्लुत के लिए 'पः' ह्रस्व के लिए 'त्यः' प्रतिपादित के लिए 'मृतः' परस्मै पद के लिए 'ममः' आत्मने पद के लिए 'दः' आकर्मक के लिए 'धिः' संयोग के लिए 'स्फः' सवर्ण के लिए 'उस' लुक् के लिए 'उप' एवं अभ्यास के लिए 'च' संज्ञा का विधान किया गया है। समास प्रकरण में अव्ययी भाव के लिए 'हः' तत्पुरुष के लिए 'षम्' कर्मधारय के लिए 'यः' द्विगु के लिए 'र' और बहुब्रीहि के लिए 'वम्' संज्ञा बतलायी गयी है। जैनेन्द्र का यह संज्ञाप्रकरण अत्यन्त सांकेतिक है। पूर्णतया अभ्यस्त हो जाने के पश्चात् ही शब्द साधुत्व में प्रवृत्ति होती है। यह सत्य है कि इन संज्ञाओं में लाघवनियम का पूर्णतया पालन किया गया है।

जैनेन्द्र व्याकरण में सन्धि के सूत्र चतुर्थ और पंचम अध्याय में आये हैं। सन्धौ 4/3/60 सूत्र को सन्धि का अधिका सूत्र मानकर सन्धिकार्य किया गया है। पश्चात् छ कार के परे सन्धि में तुगागम का विधान किया है। तुगागम करने वाले 4/3/61 से 4/3/64 तक चार सूत्र हैं। इन सूत्रों द्वारा ह्रस्व, आंग, मांग तथा अच्छिन्नति माच्छिदत् मलेच्छति कुवलीच्छाया आदि प्रयोगों का साधुत्व प्रदर्शित किया है। देवनन्दि का यह विवेचन पाणिनिके तुल्य है। अनन्तर यण् सन्धि के प्रकरण में अचीकोयण् 4/3/65 सूत्र द्वारा इक् ई,उ,ऋ, लृ, को क्रमशः यणादेश- य,व,र ल, का नियम न किया है। देवनन्दि का यह प्रकरण पाणिनि के समान होने पर भी प्रक्रिया की दृष्टि से सरल है। इसी प्रकार अयादि का सन्धि का 4/3/66, 4/3/67 द्वारा विधान किया है। वृत्तिकार ने इन दोनों सूत्रों की व्याख्या में कई ऐसी नयी बातें उपस्थित की है, जिनका समावेश कात्यायन और पतन्जलि के वचनों में किया जा सकता है। जैनेन्द्र की सन्धि सम्बन्धी तीन विशेषताएँ प्रमुख हैं।

केरियर

स्टील प्लांट में अवसर

स्टील अथॉरिटी ऑफ इंडिया लिमिटेड (सेल) ने राउरकेला स्टील प्लांट के सुपर स्पेशलिटी हास्पिटल में मेडिकल एग्जीक्यूटिव एवं पैरामेडिकल स्टाफ ने 361 पदों पर आवेदन मांगे हैं उम्मीदवार 20 अगस्त से पहले आवेदन कर सकते हैं।

कौन-कौन से पद है- कुल 361 पदों में मेडिकल एग्जीक्यूटिव के तरहत स्पेशलिस्ट (ई.3) के 12, रेडियोलॉजिस्ट और पैथोलोजिस्ट के तीन-तीन बायो केमिस्ट्री माइक्रोबायोलॉजिस्ट और लेब मेडिसिन के दो-दो मेडिकल ऑफिसर (ई-1) के आठ जूनियर मैनेजर (बायो मेडिकल) (ई-1) के दो जूनियर, मैनेजर (बायो स्टेटिस्टिक्स) (ई-1) का एक पद है, वही पैरामेडिकल स्टाफ पदों में नर्सिंग सिस्टर (ट्रेनी) के 234, टेक्नीशियन-लेबोरेटरी (ट्रेनी) के 30 टेक्नीशियन रेडियोलॉजी (ट्रेनी) के 15 टेक्नीशियन-न्यूरोटेक्नोलॉजिस्ट (एस-3) के छह टेक्नीशियन-कार्डियोलॉजी (एस-3) के 14 टेक्नीशियन-नेफ्रोलॉजी (एस-3) के 10, टेक्नीशियन-बायोमेडिकल (एस-3) के चार टेक्नीशियन-एम आर डी (एस-3) के दो, टेक्नीशियन-सी एस एस डी (एस-3) के चार, डायटीशियन (एस-3) के दो फोटोग्राफर (ट्रेनी) का एक, ड्रेसर-बर्न एंड प्लास्टिक (ट्रेनी) के दो, लॉन्ड्री ऑपरेटर (ट्रेनी) के चार, अटेडेंट - ड्रेसर्स (ट्रेनी) के 10 पदों पर भर्ती की जायेगा।

शैक्षणिक योग्यता :- नर्सिंग सिस्टर (ट्रेनी) के लिए नर्सिंग कांउसिल ऑफ इंडिया से मान्यता प्राप्त संस्थान से न्यूनतम 50 प्रतिशत अंकों में बी एस टी (नर्सिंग) या साइंस में 10+2 इंटरमीडिएट के साथ जनरल नर्सिंग एंड मिडवाइफरी में न्यूनतम तीन वर्षीय डिप्लोमा इंडिया/स्टेट नर्सिंग काउंसिल में रजिस्ट्रेशन एवं एक वर्ष का कार्यानुभव होना चाहिए। अन्य पदों के लिए विवरण अधिसूचना से प्राप्त कर सकते हैं।

आयु सीमाः पैरामेडिकल स्टाफ के पदों के लिए आयु 18 से 28 वर्ष और मेडिकल एग्जीक्यूटिव पदो में स्पेशलिस्ट के लिए 18 से 37 वर्ष एवं अन्य पदों के लिए 18 से 30 वर्ष के बीच होनी चाहिए।

वेतनमान :- स्पेशलिस्ट (ई-3) के लिए 32,900-58,000 रूपये मेडिकल ऑफिसर/जूनियर मैनेजर (ई-1) के लिए 20,600-46,500 रूपये टेक्नीशियन के लिए 16,800-24,100 रूपये नर्सिंग सिस्टर (ट्रेनी) टेक्नीशियन लेबोरेटरी / रेडियोलॉजी (ट्रेनी) एवं फोटोग्राफर (ट्रेनी) के लिए 16,800-24,110 रूपये प्रतिमाह एवं अन्य पदों के लिए 15,830-22,150 रूपये प्रतिमाह वेतनमान तय है।

कैसे करे आवेदन- इच्छुक एवं पात्र उम्मीदवार 20 अगस्त 2019 तक ऑनलाइन आवेदन कर सकते हैं। अन्य जानकारी के लिए देखे https://www.soilcareer.com/media/uploads/ adutno04.20199. Medical Executive Paramedical Staff. pdf

समस्या पूर्ति प्रतियोगिता
सितम्बर 2020
पूर्ण वंदना हुई हमारी

प्रथम-

नैसर्गिक सुन्दर शिवभूमि,
कोटि कोटि सिद्धों की भूमि
लगती हैं जैनों को प्यारी,
स्वर्ग भूमि अविरल सुखकारी
तीर्थ भूमि मन हर अविकारी,
पूर्ण वन्दना हुई हमारी

श्रीमती रजनी जैन, राहतगढ़

द्वितीय-

वैरागी तन मन अविकारी,
सिद्ध भूमि भव भव दुखहारी
तन थकता पर मन उड़ता है,
सम्मेदशिखर सुख मिलता है
तीर्थ धाम ने तृष्णा निवारी,
पूर्ण वन्दना हुई हमारी

श्रीमती अंजू जैन, इन्दौर

तृतीय-

अमृत कुम्भ जहाँ मिलता है,
कर्म पाप अरू भाव टलता है
बीस तीर्थंकर मोक्ष भूमि पर,
सद दृग बोध चरण शिव भूधर
सम्मेद शिखर की महिमा न्यारी,
पूर्ण वन्दना हुई हमारी

पल्लवी जैन, गंजबासौदा

अ.भा. संस्कार सागर परीक्षा
अगस्त 2020 के विजेता

प्रथम : श्रीमती ममता जैन, सागर
द्वितीय : .श्रीमती नीतू जैन, इन्दौर
तृतीय : श्रीमती कमला जैन, खरगोन

वर्ग पहेली क्र. 252
अगस्त 2020 के विजेता

प्रथम : आकांक्षा जैन, अहमदाबाद
द्वितीय : रजनी जैन, नागपुर
तृतीय : श्रीमती इन्दु बड़जात्या, धार

अ.भा. संस्कार सागर परीक्षा : सितम्बर 2020 का हल

01. सतना म.प्र 12 साधुओं के साथ
02. महाराष्ट्र 2 साधुओं के साथ
03. कर्नाटक 4 साधुओं के साथ
04. सिरोही राजस्थान 3 साधुओं के साथ
05. दमोह म.प्र. 12 साधुओं के साथ
06. दिल्ली 8 साधुओं के साथ
07. पुडल चैन्नई 10 साधुओं के साथ
08. राजस्थान 45 साधुओं के साथ
09. राजस्थान 18 साधुओं के साथ
10. दिल्ली 1 साधुओं के साथ
11. बारावंकी उ.प्र. 6 साधुओं के साथ
12. कर्नाटक 42 साधुओं के साथ
13. भिण्ड 40 साधुओं के साथ
14. बिहार 24 साधुओं के साथ
15. फरूक्काबाद उ.प्र. 5 साधुओं के साथ
16. बांसवाडा राजस्थान 11 साधुओं के साथ
17. बारावंकी उ.प्र. 25 साधुओं के साथ
18. टीकमगढ़ म.प्र. 10 साधुओं के साथ
19. रतमाल म.प्र. 4 साधुओं के साथ
20. हरिपर्वत आगरा- 9 साधुओं के साथ
21. प्रीतमपुरा दिल्ली-1 साधुओं के साथ
22. दतिया म.प्र. 9 साधुओं के साथ
23. राजस्थान- 3 साधुओं के साथ
24. राजस्थान - 27 साधुओं के साथ
25. इलाहाबाद उ.प्र.- 3 साधुओं के साथ
26. राजस्थान - 18 साधुओं के साथ
27. सागर म.प्र. - 14 साधुओं के साथ
28. हिंगोली महाराष्ट्र - 8 साधुओं के साथ
29. कर्नाटक - 4 साधुओं के साथ
30. राजस्थान- 5 साधुओं के साथ
31. मुंगावली म.प्र. - 5 साधुओं के साथ
32. गुना म.प्र. - 3 साधुओं के साथ
33. सागर म.प्र. - 2 साधुओं के साथ
34. बेलगांव कर्नाटक-8 साधुओं के साथ
35. भोपाल- 3 साधुओं के साथ
36. जालना महाराष्ट्र- 4 साधुओं के साथ
37. झारखंड-13 साधुओं के साथ
38. महाराष्ट्र-22 साधुओं के साथ
39. गढ़ा जबलपुर - 27 साधुओं के साथ
40. पांच
41. चार
42. पांच
43. 31.12.2019 , बांसवाड़ा राजस्थान
44. महाराष्ट्र- 3 साधुओं के साथ
45. उदयपुर -- 6 शिष्यों के साथ
46. अकोदिया मंडी, 11 साधुओं के साथ
47. खातेगांव, 9 साधुओं के साथ
48. बांसवाड़ा, 2 साधुओं के साथ
49. जांवरा, 6 साधुओं के साथ
50. बांरामती, 7 साधुओं के साथ

पुराण प्रेरणा

शरीरं धर्म साधनं

चित्रं हि स्मर चेष्टितम्।
काम की चेस्टाएँ विचित्र होती है।

समस्तरोगाणां मदनो मूर्ध्नि वर्तते
काम समस्त रोगों में प्रधान है।

ज्येष्ठो व्याधिसहस्राणां मदनो मतिसूदनः।
बुद्धि को नष्ट करने वाला काम हजारों बीमारियों में सबसे बड़ी बीमारी है।

कामासक्त मतिः पापे न किंचिद बेत्ति देहवान।
कामासक्त पापी व्यक्ति हित-अहित कुछ भी नहीं समझता।

कामार्चिषा पर दाहं व्रजन्ति कुन्सिता नराः।
क्षुद्र मनुष्य काम की ज्वाला से परम दाह को प्राप्त होते हैं ।

परस्त्रीहरणं सत्यं दुर्गतेर्दुःखकारणम्।
सत्य है, पर स्त्री हरण दुर्गति के दुख का कारण है।

परस्त्री संगपंकेन दिग्धोऽकीर्ति व्रजेत्पराम्।
पर स्त्री कर्दम से लिप्त पुरुष की अपकीर्ति होती है।

परदारा भिलाषोऽयमयुक्तोऽतोऽति मयंकरः।
परस्त्री की अभिलाषा अनुचित्त ओर अति भयंकर है।

ये परदारिका दुष्टा निग्राह्यास्ते न संशयः।
जो परस्त्री-लम्पट हैं वे अवश्य ही दण्ड के पात्र हैं।

धर्मसाधनमाद्यं हि शरीर मिह देहिनाम।
इस संसार में देहधारियों की देह ही धर्म का पहला साधन है।

माथा पच्ची

निम्न अक्रमबद्ध वर्णों कोक्रमबद्ध बनाकर रिक्त स्थान में एक सार्थक शब्द बनाइए।

1. ई अ ज् इ म् न् र त् उ त् य् अ
2. ई त् अ अ इ ज् न् स् अ र र् अ व्
3. क् र अ ज् अ इ न अ स् न् आ र् ई आ म् र् अ त्
4. म् अ अ ज् ई न् व् अ् न् द् न् अ
5. ई अ आ ज् इ न म् र् त् स् अ न् अ ग् अ र् ह

परिणाम :

सितम्बर 2020: (1)मुनिश्री संस्कार सागर जी (2) मुनिश्री निर्दोष सागर जी (3) मुनिश्री निर्लोभसागर जी (4) मुनिश्री दुर्लभसागरजी (5) मुनिश्री सौम्यसागरजी

दुनिया भर की बातें

अगस्त 2020

■ 1 अगस्त

- राज्यसभा सांसद अमरसिंह का निधन सिंगापुर में हुआ वे 64 वर्ष के थे।

- अब नेपाल सीमा से सटी लिप्रलेख में चीन ने नई साजिश रची 1000 सैनिक तैनात किये।

-पाक की गोलीबारी से हिमाचल प्रदेश के रोहित कुमार शहीद हुए।

■ 2 अगस्त

- भारत के गृहमंत्री अमितशाह कोरोना से पॉजिटिव हुए।

- केन्द्रीय मानव संसाधन विकास मंत्रालय ने कहा निजी स्कूलों में भी अंग्रेजी माध्यम बंद होगा।

-कोलोफोर्निया के जंगलों में आग लगी 12000 एकड़ में फैली 2500 घर खाली कराये गये।

■ 3 अगस्त

- मैक्सिको की खाड़ी में निजी स्पेस एक्स ड्रेगन उतरा दोनों अंतरिक्ष यात्री लौटे।

- रूस के वैज्ञानिक ने दावा किया है कि गरम पानी सामान्य पानी की अपेक्षा 90.99% वायरस कोरोना को 24 घंटे में समाप्त करता है।

- इंदौर : एक शॉपिंग एप पर खुद को सैन्य कर्मीवाता लोगों से ठगी करने वाले 124 लोगों पर केस दर्ज हुआ।

■ 4 अगस्त

- बैरूत- लेबनान की राजधानी बैरूत में दो परमाणु विस्फोट जैसे हुए 30 लोग मरे 3000 घायल हुए।

- हरियाणा के प्रदीप सिंह ने यूपी एस सी में देश टाप किया।

- सचिन पायलट एवं 19 विधायकों पर राजद्रौह की धारा 124 ए हटाई गई।

■ 5 अगस्त

- आज अयोध्या में राम मंदिर का शिलान्यास प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने किया।

- प्रधानमंत्री ने कहा कि अयोध्या नगरी सदियों से जैन धर्म की आस्था का केन्द्र भी बनी है।

- भारतीय मूल के डॉ. चोकसी न्यूयार्क के नए स्वास्थ्य आयुक्त बने।

■ 6 अगस्त

-अहमदाबाद : नवरंगपुरा क्षेत्र में एक निजी अस्पताल में आग लगने से 5 लोगों की मौत हुई।

- जम्मू कश्मीर के नये उपराज्यपालपद पर मनोज सिन्हों की नियुक्ति हुई।

- सास भी कभी बहू थी के फेमस एक्टर समीर शर्मा खुदकुशी की।

■ 7 अगस्त

- वन्दे भारत मिशन के अंतर्गत दुबई से भारतीयों को लेकर आया विमान रनवे शिवशंकर विमान दो टुकड़े में बदला 16 की मौत हुई 175 सुरक्षित विमान 35 फुट नीचे करीपुर एयरपोर्ट पर दुर्घटना ग्रस्त हुआ।

- नेपानगर : अतिक्रमण हटाने पहुँच बलकर्मियों पर तीर गोफन से हमला 100 घायल।

- अफगानिस्तान में पाक के विरूद्ध बड़ा प्रदर्शन हुआ पाक ने हमला कर दिया 24 लोगों की मौत हुई।

■ 8 अगस्त

- गुजरात- राजस्थान बार्डर से 12 पाकिस्तानी ने घुसने की कोशिश बी एस एफ ने 1 मारा बाकी भागे।

- जनगणना रजिस्टर ने 1 साल जनगणना कार्य को 1 साल बढ़ाया।

- भूमध्य सागर में 4 जल बवंडर एक साथ बने।

■ 9 अगस्त

- पूर्व मंत्री जीतू पटवारी के खिलाफ छत्रीपुरा पुलिस ने पी एम नरेन्द्र मोदी को लेकर आपत्ति जनक ट्वीट करने पर केस दर्ज किया।

- जम्मू कश्मीर बड़गाम के ओमपोरा भाजपा अन्य पिछड़ा वर्ग मोर्चा के जिला अध्यक्ष अब्दुल हामिद नजर को आतंकियों ने गोली मारकर घायल कर दिया।

- चिकित्साः शिक्षामंत्री विश्वास सारंभ भी कोरोना की जद में आ गये है।

■ 10 अगस्त

- 32 दिन बात सचिन पायलट पुनः काँग्रेस में लौटे।

- भाजपा ने मणिपुर में विश्वास मत जीता पक्ष में 25 मत पड़े।

- पूर्व राष्ट्रपति प्रणव मुखर्जी को कोरोना पॉजिटिव हुआ।

■ 11 अगस्त

- कोरोना के चलते अस्पताल में भर्ती राहत इंदौरी का निधन हुआ वे 70 वर्षीय प्रसिद्ध शायर थे।

- बुंदल शहर : अमेरिका में पढ़ रही सुदीक्षा छेडछाड से बचन बाईक से गिरी मौत हुई।

- पहली बैक्सीन रूस ने तैयार की पुतिन की बेटी को पहला टीका लगाया।

■ 12 अगस्त

- काँग्रेस प्रवक्ता राजीव त्यागी का निधन हुआ उन्हें न्यूज चैनल पर बहस के बाद अटैक आया था।

- बेंगलुरुः एक समुदाय विशेष की हिंसकवाद ने थाना सहित 250 वाहन जलायें पुलिस फायरिंग में 3 लोगों की मौत हुई काँग्रेस के विधायक ओर उनकी बहन का घर फूँका।

- भारतवंशी कमला हैरिस को डेमोक्रेटस पार्टी ने उपराष्ट्रवादी पद का उम्मीदवार घोषित किया।

■ 13 अगस्त

- वायुसेना प्रमुख चीफ एयर मार्शल आर के एस भदौरिया ने 21 मिग को उड़ाया।

- जे.के. सीमेंट के प्रमुख यू.पी. क्रिकेट एसोसियेशन के अध्यक्ष पदुपति सिंघई का निधन हुआ वे 67 वर्ष के थे।

- आतंकी हमले और कोरोना के कारण अमेरिकियों को पाक यात्रा नहीं करने की सलाह दी गई।

■ 14 अगस्त

- राजस्थान विधानसभा में अशोक गहलोत की सरकार ने विश्वासमत जीता।

- पन्ना : टाइगर रिजर्व में हिनौता रेंजर बी.बार. भगत को राम बहादुर हाथी ने पटक कर मार डाला।

- आगर-मालवा : यू.पी. बाहुबली विधायक विजय मिश्र को गिरफ्तार किया गया उन पर 71 अपराधियों प्रकरण दर्ज है।

■ 15 अगस्त

- प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने 7वीं बार लाल किले पर तिरंगा फहराया।

- अमेरिका 56 लाख कोरोना मरी मिले।

- न्यूयार्क के टाईम्स स्क्वार्यर पर तिरंगा फहराया गया।

■ **16 अगस्त**

- पूर्व क्रिकेटर एवं यू.पी. के मंत्री चेतन चौहान का निधन हुआ वे 73 वर्ष के थे।

- महेन्द्र सिंह धोनी एवं सुरेश रैना ने अंतराष्ट्रीय क्रिकेट सन्यास लिया।

- नागरिकता संशोधन विधेयक के विरोधी शहजाद अली भाजपा में शामिल हुए।

■ **17 अगस्त**

- शास्त्रीय गायक पं. जसराज का निधन अमेरिका में हुआ वे 90 वर्ष के थे।

-बेलारूस में तानाशाही के खिलाफ सबसे बड़ा प्रदर्शन हुआ 2 लाख लोगों चुनाव के नतीलों पर गुस्सा जताया।

- जम्मू-कश्मीर : एक दिन में आतंकियों ने कुलगाम के नेहभाव बारा मुला के केइरी में हमला किये 4 जबान शहीद हुए 2 आतंकी ढेर।

■ **18 अगस्त**

- गोवा के राज्यपाल सत्यपाल मलिक मेघालय के राज्य नियुक्त हुए।

- चुनाव आयुक्त अशोक लवासा ने इस्तीफा दिया

- सुप्रीम कोर्ट ने पी एम केयर्स फंड को एन. डी.आर.एफ में ट्रांसफर करने की मांग वाली याचिका खारिज की।

■ **19 अगस्त**

- कैबिनिट ने राष्ट्रीय भर्ती एजेंसी के लिए मंजूरी दी।

- फिल्म अभिनेता सुशांत सिंह राजपूत की मौत की जांच सीबीआई से कराने का फैसला सुप्रीम कोर्ट ने दिया।

- मणिपुर के 5 काँग्रेसी विधायक भाजपा में शामिल हुए।

■ **20 अगस्त**

- सुप्रीम कोर्ट ने एडवोकेट प्रशांत भूषण के अपमानना मामले में बिना शर्त माफी माँगी को कहा।

- इंदौर-शहर चौथी बार स्वच्छता के मामले में प्रथम रहा इस शहर को 564% अंक मिले।

- सुशांत सिंह राजपूत के मामले में सी.बी.आई टीम मुम्बई पहुंची।

■ **21 अगस्त**

- पी. डब्ल्यू.डी मंत्री गोपाल भार्गव की रिपोर्ट कोरोना पॉजिटिव आई।

- सुप्रीम कोर्ट ने मुम्बई के 3 जैन मंदिर 2 दिन खोलने की मंजूरी दी।

- पाक विदेश मंत्री शाह महमूद कुरैशी से चीन के राष्ट्रपति जिनपिंग ने मिलने से इंकार किया।

■ **22 अगस्त**

- पाक ने पहली बार कबूला दाऊद कराची में ही है।

- कराची में 80 साल पुराना हनुमान मंदिर तोड़ा हिन्दुओं के बीस घर भी गिराए गए।

- बापू का 110 साल पुराना गोल्ड प्लेटेड चश्मा ढाई करोड रूपये में नीलाम हुआ।

■ **23 अगस्त**

- कश्मीर के बारामूला में आतंकी हमले में मनीष कारपेंटर की मौत हो गई।

- सीरम इंस्टीट्यूट ऑफ इंडिया को ऑक्सफोर्ड की कोविशील्ड नामक कोरोना रोधी वैक्सीन बनाने की अनुमति मिली।

- आतंकी यूसुफ के घर से मिला विस्फोटक बम बनाने का सामान।

■ **24 अगस्त**

- काँग्रेस कार्य समिति ने सोनिया गाँधी को 6 माह के लिए अंतरिम अध्यक्ष बनाया।

राहुल गांधी ने पार्टी के 23 नेताओं पर भाजपा मिलीभगत का का अरोप लगाया।

-लोजापा ने नेता केन्द्रीय मंत्री राम विलास पासवान बीमार हुए अस्पताल में भर्ती।

- रावगढ (महा.) के महाड़ में 5 मंजिल इमारत ढही। 200 से अधिक लोगों के दबे होने की आशंका बनी।

■ **25 अगस्त**

- पुलवामा फिदायनी हमले का डेढ़ साल बाद 13000 पन्नों में आरोप पत्र दाखिल हुआ।

- नीलकांस (भान्ड) ने सबसे तेज केल्क्युलेटर का खिताब जीता।

- देवास : तीन मंजिल मकान ढहा 5 बच्चों सहित 9 को सुरक्षित निकाला।

■ **26 अगस्त**

- राजगढ़ (म.प्र.) शहीद मनीष विश्वकर्मा का अंतिम संस्कार खुजनेर में किया गया।

- छतरपुर : कोर्ट ने रिस्ते के चाचा को अबोध बच्चियों दुराचार मामले अंतिम सांस तक जेल भेजा।

- काबुलः बाढ और भारी बारिश से भूस्खलन से अफगानिस्तान में 90 लोगों की मौत हुई।

■ **27 अगस्त**

- सुप्रीम कोर्ट ने मुहर्रम जुलूस की अनुमति नहीं दी पुरी यात्रा और जैन मंदिर को अनुमति देने के तर्क को खारिज किया।

- एयर इंडिया ने कर्मचारियों को फरमान जारी किया कि छोटे ट्रांसपेरेंट कपड़े पहनकर ऑफिस न जायें।

- अंतराष्ट्रीय कुछआ तस्कर शमीम अंसारी की हाईकोर्ट से 6वीं बार जमानत अर्जी खारिज हुई।

■ **28 अगस्त**

- सुप्रीम कोर्ट ने विश्वविद्यालयों एवं कॉलेजों को अंतिम वर्ष की परीक्षा कराने का आदेश दिया।

- जापान ने (स्काई ड्राइव इंक) उडने वाली कार का सफल प्रयोग किया कार 16 मिनट तक हवा में रही।

- जापान के प्रधानमंत्री शिंजोआबे इस्तीफा दिया।

■ **29 अगस्त**

- महिला हॉकी टीम कप्तान रानी रामपाल ने राष्ट्रपति से खेल रत्न अवार्ड प्राप्त किया।

- भारत ने रूस के सैन्य अभ्यास से इंकार क्योंकि इसमें चीन शामिल होगा।

- वाशिंगटन : हॉलीवुड अभिनेता चैडविक वोसमैन का निधन हुआ वे 43 वर्ष के थे।

■ **30 अगस्त**

- म.प्र. के 12 जिले बाढ़ की चपेट आये 454 गॉव जल मग्न हुए। 10000 लोग प्रभावित हुए।

- नार्वे में इस्लाम विरोधी दंगा भड़का इस्लाम विरोधी प्रदर्शन के लिए लोग संसद भवन के बाहर एकत्रित हुए।

- श्रीनगर पंथा चौक नाके पर सुरक्षाबल की मुठभेड़ आंतकियों से हुई 3 आतंकी ढेर हुए एक एक ए.एस.आई रामबाबू शहीद हुये।

■ **31 अगस्त**

- भारत रत्न पूर्व राष्ट्रपति प्रणव मुर्खजी निधन हुआ वे 84 वर्ष के थे। 21 दिन पहले कोरोना से संक्रमित हुए।

- चीन के 500 सैनिक पैगोंग में चोटी पर कब्जा करने बढ़े भारत ने खदेड़ा।

- सुप्रीम कोर्ट ने एडवोकेट प्रशांत भूषण पर अवमानना मामले में 1 रूपया जुर्माना किया।

दिशा बोध

मधुर-भाषण

1. सत्पुरुषों की वाणी ही वास्तव में सुस्निग्ध होती है, क्योंकि वह दयार्द्र, कोमल होती है और बनावट से रहित होती है।
2. औदार्यमय दान से भी बढ़कर सौन्दर्य वाणी की मधुरता, दृष्टि की स्निग्धता और स्नेहार्द्रता में है।
3. हृदय से निकली हुई मधुर वाणी और ममतामयी स्निग्ध-दृष्टि में ही धर्म का निवास है।
4. जो मनुष्य सदा ऐसी वाणी बोलता है, जो सबके हृदय को आह्लादिक कर दे, उसके पास दुःखों की अभिवृद्धि करने वाली दरिद्रता कभी न आयेगी।
5. नम्रता और प्रिय संभाषण-बस ये ही मनुष्य के आभूषण हैं, अन्य नहीं।
6. यदि तुम्हारे विचार शुद्ध तथा पवित्र हैं और तुम्हारी वाणी में सहृदयता है, तो तुम्हारी पापवृत्ति का क्षय हो जाएगा और धर्मशीलता की अभिवृद्धि होगी।
7. सेवाभाव को प्रदर्शित करने वाला विनम्र-वचन मित्र बनाता है तथा बहुत-से लाभ पहुँचाता है।
8. वे शब्द, जो सहृदयता से पूर्ण और क्षुद्रता से रहित हैं, इस लोक तथा परलोक दोनों सुख पहुँचाते हैं।
9. श्रुतिप्रिय शब्दों का माधुर्य चखकर भी मनुष्य क्रुर शब्दों का व्यवहार करना क्यों नहीं छोड़ता ? क्योंकि उसकी दुर्गति निश्चित है।
10. मीठे शब्दों के रहते हुए भी जो मनुष्य कड़वे शब्दों का प्रयोग करता है, वह मानों पके फलों को छोड़कर कच्चे फल खाता है।

इसे भी जानिये

प्राच्य साहित्य

क्र.	पुस्तक का नाम	लेखक का नाम
01.	लाइफ डिवाइन	अरविन्द घोष (अंग्रेजी)
02.	लास्ट पेज	प्यारेलाल (अंग्रेजी)
03.	लिविंग इन ऐरा	डी.पी. मिश्रा (अंग्रेजी)
04.	लीप्स फॉर ए वार रिर्पोट्स डायरी	डी.आर.मानेकर (अंग्रेजी)
05.	लास्ट डेज ऑफ नेताजी	जी.डी. खोसला (अंग्रेजी)
06.	लॉ. लिबर्टी एण्ड प्रोग्रेस	वी.पी.गजेन्द्र गड़कर (अंग्रेजी)
07.	लैंसर बीड्स	नयन तारा सहगल
08.	लेंम्प शेड.	यशपाल (हिन्दी)
09.	लिबर्टी डेमोक्रेसी एण्ड ईबिक्स	एच.आर.खन्ना
10.	कुरु कुरु स्वाहा	मनोहर श्याम जोशी (हिन्दी)
11.	कादम्बरी	वाणभट्ट (संस्कृत)
12.	मेघदूत	कालीदास (संस्कृत)
13.	मालती माधव	भवभूति (संस्कृत)
14.	महाभारत	वेद व्यास (संस्कृत)
15.	मुद्राराक्षस	विशाखदत्त (संस्कृत)
16.	मुक्ति बोध	जैनेन्द्र (हिन्दी)

आओ सीखे : जैन न्याय

पंचहेतु भेदवाद की समीक्षा (न्याय)

1. न्यायदर्शन और वैशेषिक दर्शन के विचारकों नेहेतु के पाँच भेद मान्य किये हैं, उनके अनुसार हेतु के 5 भेद हैं-

1. कारण हेतु
2. कार्य हेतु
3. संयोगी हेतु
4. समवायी हेतु
5. विरोधी हेतु।

ये 5 हेतु अनुमान के अंग वे मानतेहैं - इन्हीं में अविनाभाव नियम पाया जाता है।

इन पाँच हेतुओं के उदाहरण निम्न हैं -

1. कारण से कार्य का अनुमान - जैसे जलते ईंधन को देखकर राख का अनुमान करना।

2. कार्य से कारण का अनुमान करना - नदी में बाढ़ देखकर वर्षा का अनुमान करना।

3. संयोगी के दर्शन से संयोग का अनुमान - जैसे धूम देखने से अग्नि का अनुमान करना।

4. समवायी के दर्शन से समवायी का अनुमान - शब्द सेआकाश का अनुमान करना।

5. विरोधी के देखने से विरोधी का अनुमान करना - जैसे नेवले के खड़े बाल देखकर सर्प का अनुमान करना।

जैनाचार्यों ने न्यायदर्शन एव वैशेषिक दर्शन के विद्वान के द्वारा मान्य 5 हेतु भेदों कोअमान्य करते हुये अपने तर्क इस तरह दिये-

1. क्योंकि 5 हेतुओं के अतिरिक्त कृतिको दय आदि हेतुओं को अनुमान का अंग बतलाया है।
2. अविनाभाव नियम के होने से ही हेतु अनुमान का अंग होता है न कि कार्य आदि के होने से। कारणादि रूपता सब हेतुओं में नहीं पायी जाती है।
3. अविनाभाव नियम सब हेतुओं में पाया जाता है।
4. जो हेत्वाभास है, उनमें अविनाभाव का नियम नहीं पाया जाता है।
5. अविनाभाव नियम से ही हेतु साध्य का गमक होता है।
6. अविनाभाव के बिना कोई साध्य का साधक नहीं होता है।
7. अविनाभाव के होने पर सर्वत्र हेतुओं में गमकता देखी जाती है।

निष्कर्ष - अतः पंच हेतु भेदवाद न्यायदर्शन का उचित नहीं है।

डाक टिकटों पर जैन इतिहास एवं संस्कृति

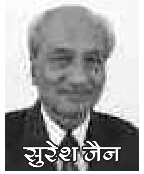

जैन आस्था

राष्ट्रीय चिन्ह और राष्ट्र ध्वज परिकल्पना प्रस्तुति

मार्य वंश के सम्राट चन्द्रगुप्त जैन धर्म के अनुयायी थे। अपनी प्रांतीय उपराजधानी उज्जैन में श्रुतकेवली भद्रबाहु स्वामी का धर्मोपदेश सुनने के बाद तथा उनका इतना कहने पर कि सम्राट आप ने भारत वर्ष को विजय कर लिया है, अब समय आ गया है कि अपने आप पर विजय प्राप्त करो और आगे का जीवन सुधारने के बारे में विचार करो। चन्द्रगुप्त मौर्य ने तुरन्त ही निर्णय लिया, अपने गुरु चाणक्य से आज्ञा ली, अपने राज्य की बागडोर अपने पुत्र बिन्दुसार को सौंप कर आचार्य भद्रबाहु स्वामी से जैन मुनि दीक्षा ग्रहण कर ली तथा उनके साधु संघ के साथ दक्षिण भारत की ओर प्रस्थान कर दिया जहाँ वह अपने गुरु आचार्य भद्रबाहु के साथ श्रवणबेलगोला में चंद्रगिरी पहाड़ी पर ठहर गये तथा घोर तपस्या की। जैन ग्रंथों में चन्द्रगुप्त को उन मुकुटबद्ध माण्डलिक सम्राटों में अन्तिम कहा गया है, जिन्होंने दीक्षा लेकर जीवन का अन्तिम भाग जैन मुनि के रूप में व्यतीत किया था। श्रवणबेलगोला में चन्द्रगुप्त वसदि में उनका अन्तिम समय व्यतीत हुआ था (प्रमुख ऐतिहासिक जैन पुरुष और महिलाए पृष्ठ 42-43) जीवन के अन्तिम समय में पाँच सप्ताह की सल्लेखना (संथारा) के बाद अपने शरीर का त्याग कर दिया था।

चन्दगुप्त के पुत्र तथा उत्तराधिकारी बिन्दुसार भी जैन धर्म के अनुयायी थे। जैन ग्रंथ राजवलिकथे के अनुसार चन्दगुप्त ने अपने पुत्र का नाम सिंहसेन रखा था। जब चन्द्रगुप्त की महारानी दुर्धारा ने विष युक्त भोजन ग्रहण कर लिया, तब चाणक्य ने महारानी दुर्धारा का पेट तलवार से काट दिया तथा कहा था दो जानों के जाने से अच्छा है कि एक जान बच जाये। महारानी दुर्धारा की तो वहीं पर ही मृत्यु हो गई परन्तु उनके पुत्र को बचा लिया गया। महारानी दुर्धारा ने भोजन में विष खा लिया था, जिस कारण उनका खून जहरीला हो गया था और उस खून ने बालक के माथे छू लिया था, जहाँ पर एक नीला निशान पड़ गया था जो बालक के माथे पर पूरी जिन्दगी भर रहा, इस कारण इस बालक को बचपन से ही बिन्दुसार पुकारा जाने लगा। बिन्दुसार ने भी जैन धर्म की समृद्धि में महत्वपूर्ण योगदान दिया था, उन्होने अधिकांश शिलालेख प्राकृत भाषा में खुदवायें थे। इनकी मृत्यु ईसा पूर्व 272 में हो गई थी।

बिन्दुसार के बाद उनका पुत्र अशोक तीन वर्ष बाद राज्य का उत्तराधिकारी बना, पिता के शासन काल में वह उज्जयिनी का शासक रहा था। उस समय अशोक ने समीपवर्ती विदिशा के एक जैन श्रेष्ठी की रूपगुण सम्पन्न असन्ध्यमित्रा नामक कन्या से विवाह कर लिया था, जिससे कुणाल नाम का पुत्र उत्पन्न हुआ था और कुणाल का बेटा सम्प्रति था। सम्राट अशोक भी अपने संस्कारों के कारण जैन धर्म का अनुयायी था। इनकी माता धर्मा भी अहिंसा की पक्की पुजारी थी। अशोक के हृदय में भी जैन तीर्थंकरों और जैन धर्म के प्रति बड़ा सम्मान था। अहिंसा के गहन संस्कारों के कारण ही कलिंग के युद्ध में भीषण रक्तपात वाले युद्ध न करने का निर्णय लिया। सम्राट अशोक ने तो बहुत बाद में बुद्ध धर्म अंगीकार किया था। सिंहली अनुश्रुतियों दीपवंश व महावंश के अनुसार अशोक को अपने शासन के चौदहवें वर्ष में निगोथ नामक भिक्षु द्वारा बौद्ध धर्म की दीक्षा दी गई थी, तत्पश्चात् मोगाली पुत्र निस्स के प्रभाव से वह पूर्णतः बौद्ध हो गया था। दिव्यादान के अनुसार अशोक को बौद्ध धर्म में दीक्षित करने का श्रेय उपगुप्त नामक बौद्ध भिक्षु को जाता है। अशोक द्वारा बौद्ध धर्म के प्रचार का आधार वे शिलालेख हैं जो उनके नाम से प्रसिद्ध हैं परन्तु ऐसे भी कई विद्वान हैं जो इन सब शिलालेखों को केवल अशोक द्वारा लिखवाया

गया नहीं मानते अपितु उनमें कुछ का श्रेय उनके पौत्र सम्प्रति को देते हैं । कुछ विद्वानों के मत है कि इन शिलालेखों का भाव और तद्गत विचार बौद्ध धर्म की अपेक्षा जैन धर्म के अधिक निकट है। अशोक यदि पूरे जीवन भर नहीं तो कम से कम अपने जीवन के पूर्वार्द्ध में अवश्य जैन था (प्रमुख ऐतिहासिक जैन पुरुष और महिलाएं पृ. 47) जहाँ सम्राट अशोक ने बुद्ध स्तूप तथा विहार बनवाये थे वहीं पर जैन मन्दिर भी बनवायें थे। 11वीं शताब्दी के इतिहासकार श्री हेमचन्द जी ने अपनी पुस्तक **महान जैन व्यक्तियों का जीवन चरित्र** तथा इस समय अमेरिका में रहने वाले श्री प्रवीण कुमार शाह CHAIRMAN JAIN EDUCATION COMMITTEE के कथन अनुसार सम्राट अशोक की रानी **असन्ध्यमित्रा** जैन परिवार से थी, वह भगवान् पार्श्वनाथ के समय चले हुए जैन धर्म में विश्वास रखती थी, उसका एक पुत्र कुणाल था, वह भी जैन धर्म का अनुयायी था तथा बड़ा पराक्रमी था, इसकी एक सौतेली माता ने इसकी आखें निकलवा दी थी। कुणाल का पुत्र सम्प्रति अवँती (उज्जैनी) के सिंहासन पर बैठा था और उसने 53 वर्ष राज किया था। वह भी जन्म से अथवा कर्म से जैन था। उसने न केवल जैन धर्म का प्रचार प्रसार किया अपितु गरीबों व असहाय लोगों के लिए भोजनशालाएँ बनवाई थी, 125 मन्दिरों का निर्माण करवाया था। इनमें से कुछ जैन मन्दिर इस समय भी वीरमगाँव था पालीताना में देखे जा सकते है। 3600 जैन मन्दिरों का जीर्णोद्धार करवाया था, 12500 जैन प्रतिमायें बनवाई थी कई शिलालेख लिखवायें थे। सम्प्रति ने अपने राज्य में जो मुद्रा चलाई थी उस पर स्वस्तिक के चिन्ह के ऊपर तीनों बिन्दु थे। स्वस्तिक का चिन्ह सर्वथा मंगलकारी है तथा ऊपर तीनों बिन्दु सम्यक ज्ञान (सत्य का बोध), सम्यक दर्शन (सही दृष्टिकोण), सम्यक् चारित्र (यथार्थ आचरण) के रूप में यह तीनों रत्न जैन धर्म के सैद्धान्तिक व आगम सम्सत शब्द हैं। यह सब कुछ सिद्ध करता है कि मौर्य वंश का जैन धर्म के साथ कितना घनिष्ठ सम्बन्ध रहा है।

सम्राट अशोक ने अपने राज्यकाल में भारतवर्ष में भिन्न-भिन्न स्थानों पर 19 स्तम्भ बनवायें थे, जो डिजाईन और आकार के रूप में अलग-अलग पहचान रखते हैं। इनमें से एक स्तम्भ सारनाथ में है, इसके शीर्ष भाग को सिंहचतुर्मुख कहते हैं, इस मुर्ति में चार भारतीय शेर एक दूसरे के साथ पीठ से पीठ सटाये हैं तथा नीचे चारों और एक बड़ा गोलाकार डिजाईन बना है। इस में चार चक्र बने हैं, साथ में एक बैल, एक हाथी, एक घोड़ा तथा एक शेर बना है। अशोक स्तम्भ अब भी अपने मूल स्थान पर स्थित है किन्तु इस का शीर्ष भाग सारनाथ संग्राहालय में रखा हुआ है। यह सिंहचतुर्मुख स्तम्भ शीर्ष ही भारत के राष्ट्रीय चिन्ह के रूप में स्वीकार किया गया है। इन में जो अन्य चार चिन्ह बने हैं उनके बारे में अलग-अलग धारणायें हैं।

कुछ व्यक्तियों का मत है कि ऊपर के चारों शेर इस बात के प्रतीक है कि सम्राट अशोक का राज्य चारों और फैला हुआ था और नीचे बने हुए चक्र समृद्धि के प्रतीक हैं तथा चारों जानवर बैल, हाथी, घोड़ा शेर दर्शाते हैं कि इस भूभाग पर सम्राट अशोक का राज्य है।

दूसरा मत धार्मिक दृष्टि से व्याख्या करता है कि चारों चक्र हैं वह धर्मचक्र हैं तथा चारों जानवर हाथी, बैल, घोड़ा, शेर-भगवान् बुद्ध की जिन्दगी के चार भागों की व्याख्या करते हैं। हाथी-महारानी माया (भगवान् बुद्ध की माता) ने गर्भ धारण करने के बाद स्वप्न देखा कि एक सफेद हाथी उन के गर्भ में प्रवेश कर रहा है। बैल-भगवान् बुद्ध की जन्म राशि वृषभ से सम्बन्धित है। घोड़ा-भगवान् बुद्ध ने जब सिद्धार्थ के रूप में जीवन की सच्चाई को जानने के लिए महलों का त्याग किया तब वह महलों से घोड़े पर सवार होकर निकले थे। शेर-यह चिन्ह बताता है कि भगवान् बुद्ध ने जीवन में दिव्य ज्ञान प्राप्त किया था।

एक धारणा के अनुसार चक्र का चिन्ह अथवा धर्म चक्र का संदेश है कि इंसान को आवागमन के चक्र से मुक्ति प्राप्त करनी है। ऋग्वेद में लिखा है कि ब्रह्माण की चारों दिशाओं के प्रतिरूप में हाथी-पूर्व का संरक्षक है, घोड़ा-दक्षिण का अभिभावक है, बैल-पश्चिम का निगहवान है तथा शेर-उत्तर का रक्षक है।

परन्तु जैन धर्म के जानकारों के अनुसार सम्राट अशोक को विरासत में जन्म से ही जैन संस्कार मिले थे। इस सिंहचतुर्मुख स्तम्भ में जैन सांस्कृतिक विरासत की असीम झलक भी देखने को मिलती है।

समाट अशोक के इस स्तम्भ में जैन तीर्थंकरों के चिन्ह अंकित है (जैनत्व की गौरव गाथा भाग-2 पृ. 6) अशोक स्तम्भ के ऊपर जो चक्र बने है वह धर्म चक्र हैं जिनमें 24 आरे हैं जो जैन धर्म के तीर्थंकरों की संख्या 24 के प्रतीक हैं तथा यह ही चक्र हमारे राष्ट्र ध्वज के ठीक मध्य में सफेद पट्टी पर होता है। जैन तीर्थंकरों के जन्म के समय ही उनके दाये पाँव के नीचे एक चिन्ह होता हैं। जिससे उनकी पहचान होती है, यही चिन्हें उनकी मूर्ति की चौकी के नीचे पहचान के लिए सदा उत्कीर्ण होता है। जैन विद्वानों के मत के अनुसार अशोक स्तम्भ पर बैल, हाथी, घोड़ा, शेर बने हैं, इनका सम्बन्ध जैन तीर्थंकरों के साथ है।

बैल- प्रथम तीर्थंकर भगवान् ऋषभदेव जी का चिन्ह है।

हाथी- दूसरे तीर्थंकर श्री अजितनाथ जी का चिन्ह है।

घोड़ा-तीसरे तीर्थंकर श्री संभवनाथ जी का चिन्ह है।

शेर-अंतिम 24वें तीर्थंकर भगवान् महावीर स्वामी जी का चिन्ह है।

अन्य मान्यताएँ:- वृषभ (बैल) कृषक का प्रिय बैल श्रमशीलता का प्रतीक है जन जन के आराध्य शिवजी का वाहन बैल भी उन के साथ पूजा जाता है। यह हमारी संस्कृति में श्रम की उपासना का अप्रतिम उदाहरण है।

अश्व (घोड़ा) यह स्फुर्ति एवं शक्ति का प्रतीक माना जाता है। हमारी सृष्टि के साक्षात देवता माने जाने वाले सूर्य के रथ में सात घोड़े होते हैं, जो सात किरणों के प्रतीक हैं। अश्वमेघ यज्ञ से संबंध होने के कारण भी इसे पूज्य माना गया है।

गज (हाथी) वैभव का सूचक है। पुराणों में कहा गया है कि धन-सम्पन्नता की देवी लक्ष्मी की अर्चना गजराज जल से करते रहते हैं। गज को बुद्धि के देवता गणपति का प्रतीक भी माना गया है।

सिंह (शेर) देवी दुर्गा का वाहन, वनराज सिंह शक्ति का प्रतीक है। इस प्रतीक को वैदिक, बौद्ध, जैन तीनों धर्मो में अपनाया गया है। जिस मूर्ति के नीचे सिंह का चिन्ह होगा वह भगवान् महावीर स्वामी की मूर्ति होगी।

राष्ट्रध्वज तथा राष्ट्रचिन्ह पर डाक टिकट :- स्वतंत्र भारत की प्रथम डाक टिकट 21 नवम्बर 1947 को राष्ट्र ध्वज के चित्र वाली जारी की गई थी, इस ध्वज के ऊपरी भाग को संतरी व लाल रंग मिला कर तथा नीचे वाले भाग को हरे व नीले रंग को मिलाकर व बीच में सफेद रंग की पट्टी पर नीले रंग का धर्म चक्र दिया गया है, जिस के 24 आरे हैं। यह 24 आरे जैन धर्म के 24 तीर्थंकरों की संख्या 24 के प्रतीक हैं, तथा यही 24 आरों वाला चक्र अशोक स्तम्भ के ऊपर बना हुआ है। उस समय की मुद्रा 3.5 आना (साढ़े तीन आना) मूल्य वाली इस डाक टिकट को 23 लाख संख्या में इंडिया स्कयोरटी प्रेस, नासिक से मल्टीस्टार जल चिन्ह वाले कागज पर छपवाया गया था। इस का विवरण कामवेल्थ देशों के केटालाग तथा सटेनले गिब्म्स केटालाग में नम्बर 302 पर दिया गया है।

स्वतंत्र भारत की सरकार के डाक विभाग ने दूसरी डाक टिकट 15 दिसम्बर 1947 को अशोक स्तम्भ के ऊपरी भाग के चित्र वाली जारी की थी। जिसे राष्ट्रीय चिन्ह के रूप में अपनाया गया है। इसे सलेटी व हरे रंग को मिलाकर बनाया गया था। उस समय की मुद्रा 1.5 आना (ढेड़ आना) मूल्य वाली इस डाक टिकट के मध्य में अशोक स्तम्भ के ऊपरी भाग का चित्र है। आगे से फोटो लेने के कारण सबसे ऊपर 3 शेर ही दिखाई देते हैं तथा एक धर्म चक्र जिसमें 24 आरे हैं साथ में बैल और सिंह का चित्र दिखाई देते हैं, बाकी तीनों चक्र तथा हाथी व घोड़े के चित्र साईडों पर व पीछे छिप गये हैं। जैन मत के अनुसार यह पहले, दूसरे, तीसरे व चौबीसवें तीर्थंकरो के चिन्ह हैं तथा धर्म चक्र के 24 आरे जैन धर्म के 24 तीर्थंकरों की संख्या 24 के प्रतीक है। इस डाक टिकट को मल्टीस्टार जल चिन्ह वाले कागज पर 2 करोड़ 27 लाख संख्या में इण्डिया स्कयोरटी प्रेस नासिक से छपवाया गया था। इसका विवरण कामनवेल्थी देशों के केटालॉग में तथा सटेनले गिब्म्स केटालॉग में नम्बर 301 पर दिया गया है।

जिनराज पार्श्वनाथ और गजराज बज्रघोष

✻ सुरेश जैन (आई.ए.एस), भोपाल ✻

नैनागिरि में अनेक वर्षों से भक्तिरत रहे गजराज बज्रघोष ने यह सिद्ध कर दिया है कि भक्त की शक्ति भगवान से अधिक होती है। इस तीर्थ पर गजराज ही स्वयं अपने जिनराज बनने की सफलतम कहानी सुना रहें हैं। वे यह भी घोषणा कर रहे है कि भगवान पार्श्वनाथ के दश भवों के प्रत्येक जीवन में भीषण विपत्ति आई वे कभी विचलित नहीं हुए। उन्होंने प्रत्येक विपत्ति को संपत्ति बनाया और आध्यात्मिक विकास के पथ पर आगे बढ़ते गये।

नैनागिरि में स्थित अपनी तपोभूमि में भगवान पार्श्वनाथ के पूर्व के दूसरे जन्म में गजराज बज्रघोष ने विभिन्न व्रतों का पालन करते हुए भीषणतम तपश्चरण किया। नैनागिरि के गहन एवं विस्तृत वरदत्त वन में स्थित सेमरा पठार नदी में गजराज बज्रघोष की प्राकृतिक, अकृत्रिम और जीवंत विशाल प्रतिमा भगवान पार्श्वनाथ के द्वितीय भव के अप्रतिम स्मारक के रूप में स्थित है। लाखों वर्षों से उनका यह स्वरूप आज भी नैनागिरि में विशाल गजेन्द्र के रूप में विद्यमान है, जो प्रत्येक यात्री, दर्शक और पर्यटक को मंत्रमुग्ध कर देता है। चित्र क्र. 1 एवं 2.

नैनागिरि जैन तीर्थ पर सेमरा पठार, नदी में प्राकृतिक रूप से निर्मित गजरात बज्रघोष चित्र क्र. 1

नैनागिरि जैन तीर्थ पर सेमरा पठार नदी में अकृत्रिम गजराज बज्रघोष की छवि निहारते हुए प्रतिष्ठाचार्य पण्डित सनतकुमार विनोद जैन, रंजवास जिला सागर म.प्र. चित्र क्र. 2

सहस्त्रों वर्षो से सेमरा पठार नदी के पावन जल से सतत रूप से प्रक्षालित भगवान पार्श्वनाथ के द्वितीय भव का जीवंत प्रतीक यह विशाल गजराज जन-जन को आकर्षित करता है। भगवान पार्श्वनाथ का यह जीव अपनी ऐरावत हाथी की द्वितीय पर्याय में ही पतित पावन हो गया है। पूज्य बन गया है। नैनागिरि में आकर देव बज्रघोष की वंदना और आराधना करते रहे है।

सभी महावत यहाँ आकर आचार्य मानतुंग विरचित भक्तामर स्तोत्र के निम्नांकित 38वें श्लोक का 9 बार मौखिक रूप से पाठ करते है। उन्मत्त हाथी के भय का भंजन करते है और उससे अपनी सुरक्षा का अनुष्ठान करते हैं :-

श्च्योतन्मदविलविलोलकपोल मूल, मत्तभ्रमद भ्रमरनादविवृद्धकोपम्।
ऐरावताभमिभमुद्धतमापतन्तं, दृष्टवा भयं भवति नो भवदाश्रितानाम्॥38॥

प्रत्येक महावत समीपस्थ जलकुण्ड में स्वयं स्नान करता है। अपने हाथी को स्नान कराता है। गजराज बज्रघोष की आराधना करता है और अपने लक्ष्य की ओर प्रस्थान करता है। इस आलेख के लेखक को नैनागिरि के गजरथ महोत्सव सन् 1957 में किशोर वय में और 1987 के अवसर पर सौधर्म इन्द्र के रूप में महावतों और हाथियों द्वारा गजराज बज्रघोष की आराधना का साक्षी बनने का सौभाग्य

प्राप्त हुआ है।

नैनागिरि और समीपस्थ क्षेत्रों में सहस्त्रों वर्षो से आयोजित पंचकल्याणक महोत्सवों और विविध धार्मिक अनुष्ठानों में आये हस्ति समूह सर्वप्रथम अपने इस प्रागैतिहासिक पूर्वज विशाल पाषाण गज के दर्शन करते हैं। उन्हें प्रणाम करते हैं और भगवान नेमिनाथ के काल में नैनागिरि से मोक्ष पधारें वरदत्तादि महर्षियों की चरण रज से पावन हुई माटी की महक लेकर अपने कर्तव्य पथ पर आगे बढ़ते है। यह उल्लेखनीय है कि बज्रघोष अपनी आध्यात्मिक शक्ति और आशीर्वाद से हस्तियों की जिंदगी बदल देते है। बीमार हस्तियों को शीघ्र ही स्वस्थ कर देते है। सभी हाथी पंचकल्याणक में भगवान का रथ खींचने के लिए सक्षम और समर्थ हो जाते हैं। कृपया नैनागिरि पधारें और भगवान पार्श्वनाथ के द्वितीय जन्म में प्राकृतिक रूप से निर्मित्त गजरात बज्रघोष के दर्शन करें। व्रतादिक गृहण करने की शिक्षा प्राप्त कर आत्मिक शांति प्राप्त करें।

सागर नगर के सुप्रसिद्ध दानवीर, सामाजिक क्षेत्र के लोकप्रिय हस्ताक्षर एवं शांति, संतोष और धर्मनिष्ठा के जीवंत प्रतीक श्री संतोष कुमार जय कुमार जैन बैटरी वालो ने इस गजराज को नैनागिरि के जल मंदिर में निर्मित मानस्तंभ में मार्बल प्लेट पर उत्कीर्ण कराके सराहनीय कार्य किया है। वे नैनागिरि तीर्थ के उपाध्यक्ष है और तीर्थ के लिये पूर्णतः समर्पित है। चित्र क्र. 3

नैनागिरि के जल में निर्मित मानस्तंभ में मार्बल प्लेट पर उत्कीर्ण गजराज बज्रघोष चित्र क्र. 3

उदयगिरि (विदिशा) में आयोजित भगवान नेमिनाथ के समवसरण में आचार्य वरदत्तादि पंचमुनीश्वर विराजमान थे। उन्होंने प्राचीनतम सिद्धभूमि नैनागिरि का स्मरण किया। भगवान पार्श्वनाथ के द्वितीय भवधारी व्रती गजरात बज्रघोष द्वारा नैनागिरि में की गई कठोर तपस्या उनके स्मृति पटल पर उभरी। वे विदिशा से नैनागिरि पधारे। उन्होंने सिद्धशिला पर और समीपस्थ गुफाओं में बैठकर तपस्या की और सिद्धशिला से मोक्ष पधारे। इस सिद्ध शिला की छतरी में अनेक प्राचीनतम ऐतिहासिक शैल चित्र विद्यमान है।

अहिच्छत्र पार्श्वनाथ रामनगर किला जिला बरेली, उ.प्र. में वर्तमान ईसवी सन् 2020 से 2885 वर्ष पहले ईसा पूर्व 865 में वर्ष के पूर्वार्द्ध में भगवान पार्श्वनाथ को केवलज्ञान प्राप्त हुआ था। केवलज्ञान प्राप्त होते ही उन्हें अपने गजरात बज्रघोष के भव का स्मरण आया। अतः अर्हंत पार्श्वनाथ इसी वर्ष के उत्तरार्द्ध में नैनागिरि पधारे और नैनागिरि में उनका सर्वप्रथम समवसरण रचित किया गया। भगवान पार्श्वनाथ के नैनागिरि में समारोहित इस समवसरण से उद्घोषित जय पारस के प्रभावी संदेश की अनुगूंज विश्व के कोने-कोने में आज भी सुनाई देती है।

रेशंदीगिरि (ऋषीन्द्रगिरि) में भगवान पार्श्वनाथ का समवसरण ईसा पूर्व 865वें वर्ष में विरचित किया गया था। 2852 वर्षो के बाद वर्ष 1987 में यहाँ विशाल एवं विस्तृत समवसरण मंदिर का निर्माण किया गया है। अतः यह पार्श्वनाथ केन्द्रित परम तीर्थ है। प्रभु पार्श्वनाथ पारसमणी के प्रतीक है। यह पारसमणी अपने स्पर्श से लोहे को स्वर्ण बना देती है। उपसर्गविजयी पार्श्वनाथ हर व्यक्ति के हर दुःख और कष्ट को दूर कर देते है। तीर्थंकर पार्श्वनाथ जन्म-जन्मान्तर से अपने सभी दश भवों में सर्वोत्तम क्षमा के महानायक रहे है। वे मरूभूति से पार्श्वनाथ तक के अपने प्रत्येक जीवन में क्षमा के अदभुत प्रयोग करते रहे और सदैव उत्तरोत्तर विकास करते हुए आत्म विकास के सर्वोच्च

शिखर पर विराजमान हो गये।

कलिंग देश के महाराजा खारवेल महामेघवाहन द्वारा उदयगिरि-खण्डगिरि में ईसा पूर्व द्वितीय शताब्दि में निर्मित हाथी गुफा शिलालेख में भगवान पार्श्वनाथ की प्राचीनतम नग्न प्रतिमायें निर्मित की गई थी। उनकी सम्पूर्ण जीवनी के चित्र भी पाषाण की दीवारों पर उकेरे गये थे। शातवाहन राजाओं के शासन काल-द्वितीय शताब्दि में प्रतिष्ठित यह भगवान पार्श्वनाथ की खड्गासन प्राचीनतम एवं महत्वपूर्ण प्रतिमा छत्रपति शिवाजी महाराज वास्तु संग्रहालय (प्रिंस ऑफ वेल्स म्युजियम ऑफ वेस्टर्न इण्डिया) मुम्बई में स्थित है। चित्र क्र. 4 राष्ट्रकूट राजाओं के शासनकाल-दसवीं शताब्दि की यह खड्गासन पार्श्वनाथ में प्रतिष्ठित प्रतिमा तिरूमल्ले में स्थित है। इस प्रतिमा के चरणों में दोनों और दो गजराज है। दोनों गजराज भगवान पार्श्वनाथ के द्वितीय भव के प्रतीक है। चित्र क्र. 5.

शातवाहन राजाओं के शासन काल-द्वितीय शताब्दि की यह भगवान पार्श्वनाथ खड्गासन प्राचीनतम एवं महत्वपूर्ण प्रतिमा छत्रपति शिवाजी महाराज वास्तु संग्रहालय (प्रिंस ऑफ वेल्स म्युजियम ऑफ वेस्टर्न इण्डिया)

राष्ट्रकूट राजाओं के शासनकाल-दसवीं शताब्दि की यहखड् गासन पार्श्वनाथ की प्रतिमा तिरूमलै में स्थित है। इस प्रतिमा के चरणों में दोनों और दो गजराज है। दोनो गजराज भगवान पार्श्वनाथ के द्वितीय भव के प्रतीक है। चित्र क्र. 5

आचार्य गुणभद्र विरचित उत्तरपुराण के तिहत्तरवें पर्व में कुल 170 श्लोकों में भगवान पार्श्वनाथ तीर्थंकर का वर्णन किया गया है। इसमें 1 से 160 तक कुल अनुष्टप छंद के 160 श्लोकों में तथा अंतिम 170 वें आर्या छंद में भगवान पार्श्वनाथ तीर्थंकर के जीवन का वर्णन किया गया है। बज्रघोष के इस भव का विस्तृत वर्णन श्लोक क्रमांक 12 से 24 में किया गया है। इसके बारहवें श्लोक में उल्लेख है कि अपने पूर्व भव में भगवान पार्श्वनाथ ने गहन वन में बज्रघोष हाथी के रूप में जन्म लिया।

इस पुराण कथा के अनुसार एक दिन यह मदोन्मत्त विशाल हाथी तपस्यारत अरविन्द मुनिराज को मारने के लिए उद्यत हुआ। मुनिराज के वक्षस्थल पर श्रीवत्स का चिन्ह देखते ही बज्रघोष को अपने पूर्वभव का स्मरण हो गया। गजराज बज्रघोष मैत्री धर्म का पालन करते हुए चुपचाप खड़ा हो गया। उसने मुनिराज से श्रावक के व्रत गृहण कर लिए। बज्रघोष ने वृक्षों की सूखी शाखाओं और पत्तों का भोजन शुरु कर दिया। चिरकाल तक शांतिपूर्वक विचरण और तपश्चरण करते हुए एक दिन बज्रघोष सेमरा पठार नदी में पानी पी रहा था। कमठ के जीव कुक्कुट सर्प के काटने से धर्मध्यान पूर्वक शांति भाव से उसने अपने प्राणों का परित्याग कर दिया। बज्रघोष ने स्वर्ग में देव के रूप में जन्म लेकर तीर्थंकर पद की अपनी यात्रा चालू रखी और आत्मोन्नति करते-करते तीर्थंकर का परमोच्च पद प्राप्त कर लिया।

नैनागिरि के इस पावन स्थल पर प्रकृति ने गजराज बज्रघोष की पुण्यादायक स्मृति में उनकी विशाल, अनोखी एवं अप्रतिम प्रतिमा का निर्माण किया। नैनागिरि में यह महत्वपूर्ण पौराणिक एवं प्राकृतिक दर्शनीय स्थल है।

कहानी

नैतिक शिक्षा

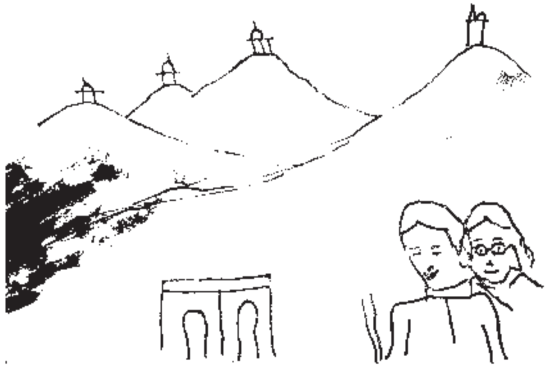

मधुवन के सुहावने वातावरण में धूप छांव की अटखेलियां सभी को लुभा रही थी प्रभात के दस बज चुके थे यात्रीगण भगवान पार्श्वनाथ के चरण वंदन कर अपने-आपको सौभाग्यशाली मान रहे थे कुछ लोग सीढ़ियों से उतरते-उतरते जोर-जोर से सांस ले रहे थे तो कुछ लोग भगवान पार्श्वनाथ को उलाहना भी दे रहे थे कि हे पार्श्वनाथ तुम कहां इतने ऊपर आकर तपस्या करने बैठे हम लोग कितने सुखी होते यदि आप थोड़े नीचे तपस्या करने बैठे होते इस उलाहना को सुनकर कुछ समझदार यात्री ठहाका मारकर हंस पड़ते और फिर अपनी गति से आगे की यात्रा संपन्न करने लगते।

नैतिक पहली बार सम्मेदशिखर आया था हरी-भी पहाड़िया देखकर उसका मन बहुत प्रफुल्लित हो रहा था कभी-कभी तो वह चहक पड़ता था जीवन का यह एक अलग ही पड़ाव था नैतिक ने अपने जीवन के कई वर्ष अनुशासन में प्रसिद्ध सरस्वती शिशु मंदिर में बिताये थे नैतिक प्रकृति प्रेमी था उसके अन्दर प्रकृति प्रेम कूट कूट कर भरा था वह भारत के कई पर्यटक स्थलों पर भम्रण कर चुका था नैतिक उच्च शिक्षा प्राप्त करने के बाद प्रतियोगी परीक्षाओं में स्तरीय सफलता प्राप्त करने के बाद रामगढ़ का एस.डी.एम बन चुका था नैतिक के अनुविभागीय अधिकारी बनने के बाद उसके पास न्यायाधीश के अधिकार अपने आप आ चुके थे। नैतिक की योग्यता ओर पद को देखकर दसों अभिभावक अपनी बेटी की शादी नैतिक से करना चाहते थे परन्तु नैतिक था तो सिद्धांतवादी और स्थिर विचार वाला उसके पास अब शादी के प्रस्ताव आते थे तो वह साफ कह देता था कि मैं अपने माता-पिता की सलाह के उपरांत ही कोई भी संबंध तय करूँगा मैं शरीर के रंग बनावट और रूप से प्रभावित होकर अपना भविष्य तय नहीं करना चाहता हूँ।

नैतिक अपनी लाठी का सहारा लेकर कदम बढ़ाते-बढ़ाते नीचे उतर रहा था कि वह थकने के बाद कही बैठकर आराम करना चाह रहा था कि उसे शीतल नाला के पास आराम कर रहे एक परिवार दिखा नैतिक ने भी वहीं पर अपने झोले से एक चटाई फॉम की निकाली और बिछाकर बैठ गया कि परिवार के सदस्यगण अपने झोले में रखी हुई भोजन

सामग्री के माध्यम से नाश्ता कर रहे थे नैतिक को देखकर उस परिवार के मुखिया जिनेश कुमार ने कहा भैया आप कहां से आये है।

नैतिक ने बड़ा संक्षिप्त उत्तर देते हुए कहा कि मैं रामगढ़ से आया हूँ तब जिनेश ने फिर कहा कि ये रामगढ़ कहां है।

नैतिक- अंकलजी ये रामगढ़ झारखंड के हजारीबाग जिले की एक तहसील है।

जिनेश- तो आपतो वहां परिवार सहित रहते होंगे।

नैतिक- नहीं, मेरा परिवार तो छत्तीसगढ़ के मनेन्द्रगण में रहता है मैं तो रामगढ़ में अनुविभागी अधिकारी हूँ।

जिनेश ने अपना परिचय देते हुए कहा मैं भी अनूपपुर में कार्यपालन अभियंता हूँ वैसा मेरा परिवार बुढ़ार में निवास करता है और ये मेरी बिटिया है इसका नाम शिक्षा है यह भी आर्ची ट्रेक्टर इंजीनियरिंग कोर्स कम्पलीट कर चुकी है । वैसे इस बिटिया की पूरी शिक्षा कान्वेंट स्कूल में हुई है।

नैतिक- ने बड़े गर्भ के साथ कहा- अंकल जी मेरी शिक्षा हिन्दी माध्यम से सरस्वती शिशु मंदिर में हुई है।

जिनेश ने अपना उदासीन भाव प्रगट करते हुए कहा, हिन्दी माध्यम से पढ़ा हुआ व्यक्ति क्या विकास कर पायेगा।

नैतिक- अंकल जी मैंने तो हिन्दी माध्यम से पढ़कर ही यह विकास का स्थान प्राप्त किया है और यू.पी.एस.सी में उल्लेखनीय स्थान प्राप्त किया इसी के आधार पर मात्र चार साल लगेंगे और मैं किसी जिले को कलेक्टर बन जाऊँगा।

जिनेश-यदि आपकी यह बात सच है तो मुझे बहुत आश्चर्य हो रहा है कि हिन्दी माध्यम से पढ़ने के उपरान्त भी आपने इतनी बढ़ी सफलता प्राप्त की मैं आपके इस सफलतम प्रयास के लिए विनम्र प्रणाम करता हूँ ।

नैतिक- इसमें प्रणाम करने की क्या बात है हमारी तो यह मानसिकता बनचुकी है कि जब तक हम अंग्रेजी माध्यम से शिक्षा ग्रहण नहीं करेंगे तब तक किसी भी सफल मुकाम पर नहीं पहुँच सकते हैं लेकित मेरे दादाजी की स्थिर अवधारणा भी भाषा का माध्यम किसी भी प्रगति में बाधक नहीं बन सकता है हिन्दी हमारी मात्री भाषा है इस भाषा पर स्वाभिमान का रंग अनूठा चढ़ा हुआ है मातृ भाषा के माध्यम से ही प्रेम और करूणा रंग लाती है तथा इस मातृ भाषा के माध्यम से ही रिश्तों में परिपक्वता आती है।

जिनेश- नैतिक जी आपके विचार किसी को भी प्रभावित कर सकते हैं ओर वे सच के बहुत निकट है मुझे तो आपके विचार ने झकझोर कर रख दिया है मैं भी मातृ भाषा हिन्दी का समर्थक हूँ परन्तु मुझे ऐसा कोई उदाहरण नहीं मिल रहा था कि जिस पर हिन्दी के माध्यम से भी सफल जगह पाई जा सकती है आपका उदाहरण अब मैं बड़े विश्वास के साथ लोगों के बीच रखूंगा और हिम्मत के साथ कहूँगा कि मातृ भाषा में वह गुणवत्ता है जो उपकार कर सकती है और मानव का उपकार भ्ज्ञी कर सकती है, अच्छा लेकिन ये बताइए कि आपका विवाह हुआ कि नहीं हुआ (जिनेश जी ने बड़ी विनम्रता से पूछा)

नैतिक ने कहा नहीं, तब जिनेश ने पूछा आपकी उम्र कितनी हो चुकी है तो नैतिक ने कहा मैं अभी 27 वर्ष का होने वाला हूँ।

जब जिनेश ने वक्र मुस्कुराहट के साथ कहा शादी वादी कर डालो अब व्यर्थ में उम्र

बढ़ाने से क्या फायदा

नैतिक ने कहा- मैं शादी तो करूँगा ओर जल्दी करूँगा लेकिन जिसे मेरे माता पिता स्वीकृति देगें उस लड़की से करूँगा।

जिनेश ने नैतिक को समझाइश देते हुए कहा भैया जमाना बहुत बदल चुका है ऐसे ख्यालातों के साथ आजकल पटरी बिठालना बड़ा मुश्किल काम बन रहा है।

नैतिक ने बड़े आत्म विश्वास के साथ कहा कि अंकलजी मेरे विचार बिल्कुल स्पष्ट हैं और मैं किसी के भी विचार और चिंतन को बदलने में सक्षम हूँ परन्तु मैं अपने विचार किसी पर थोपता नहीं हूँ और न थोपूंगा क्योकि सिद्धांत शाश्वत सत्य होते हैं सारी जगह भटकने के बाद व्यक्ति को उन्हीं रास्तों पर चलना पड़ता है जिन रास्तों का मूल्य और पहचान शाश्वत होती है।

जिनेश ने कहा आपके कोई ऐसा उदाहरण है क्या जिसने हिन्दी माध्यम से पढ़कर आई ए एस का सपना साकार किया हो।

नैतिक- हां अंकल जी मैं तीन उदाहरण तो आपके सामने दे सकता हूँ एक मोना खंदारे जो राजकोट और गांधी नगर की कलेक्टर रह चुकी हैं जिन्होंने हिन्दी ही नहीं बल्कि हिन्दी के साथ-साथ संस्कृत से एम ए करके सफलता अर्जित की थी और दूसरा उदाहरण सुरेशचंद जैन आई ए एस जिन्होंने सागर के गनेशकीर्ति संस्कृत महाविद्यालय से अध्ययन करके आई ए एस का केडर प्राप्त किया था तथा राहुल जैन जो हिन्दी माध्यम से पढ़कर कलेक्टर बना और मेरे इस बात की लम्बी सूची है कि हिन्दी माध्यम से पढ़कर उच्च स्तरीय पदों को प्रापत करने वाले बहुत सारे लोग हैं । इसके साथ मुझे एक बात और याद आ रही है कभी मुझे शिखर जी में सुभाष जैन सागर वाले मिले थे जो अनूपपुर में डी.जे. डिस्ट्रिक जज के पद को सुशोभित कर रहे हैं वे भी हिन्दी माध्यम से ही शिक्षा ग्रहण कर इस मुकाम तक पहुँचे हैं।

जिनेश- बहुत अच्छा में समझ गया आपकी बात हिन्दी माध्यम भी कही से कम नहीं पड़ता है फिर भी विदेशी शिक्षा ग्रहण करने के लिए अंग्रेजी भी तो जरूरी होगी।

नैतिक- अंकल जी अंग्रेजी भाषा सीखने का मैं कहीं से भी विरोध नहीं करता हूँ किन्तु हिन्दी माँ है और अंग्रेजी पड़ोसन, पड़ोसन कितना भी लाड़ प्यार क्यों न करें किन्तु वह माँ नही बन सकती है ठीक उसी प्रकार मात्री भाषा और विदेशी भाषा का अंतर तो समझना ही होगा लार्ड मार्किले ने भारतीय शिक्षा प्रणाली को सिर्फ क्लर्क बनाने तक सीमित रखा था वह इसीलिये कि भारतीय लोग गुलामी से बाहर न निकल पाये।

जिनेश- ठीक है नैतिक तुम्हारी चर्चा बहुत बच्छी लगी चलो अब तुम्हारे साथ नीचे तक चलते हैं ये हमारी बिटिया शिक्षा है इसके विचार बहुत आधुनिक हैं और यह प्रतिभा संपन्न तो है ही साथ में सहकारिता पर बहुत विश्वास रखती हैं।

नैतिक -अंकल जी मैं बीच में टोंकू अगर आज्ञा हो तो।

जिनेश- हां हां बोलिए आप ये तो विचारों का आदान-प्रदान है इसमें आज्ञा की क्या जरूरत।

नैतिक- क्षमा करना मैं आपकी बात काट रहा हूँ - आपने कहा मेरी बिटिया आधुनिक बहुत है पर मैं मानता हूँ कि कोई भी आधुनिक बाल और कपड़ों से नहीं होता है किन्तु जो आज में जिये वह आधुनिक होता है

बहुत कम लोग आज में जी पाते हैं चिंता और सपनों में ज्यादा जीते हैं।

नैतिक की पूरी बात सुनकर जिनेश ने उठते हुए कहा खूब सही बात कही और सब लोगों ने लाठियों संभालते हुए नीचे उतरना प्रारंभ कर दिया शिक्षा नैतिक के करीब आने की कोशिश करती रही तभी रासते में नींबू पानी की दुकान मिली शिखा ने कहा पापा अपन लोग नींबू पानी पीकर नीचे चलते हैं तभी नैतिक की भौंहे सिकुडने लगी तब शिखा ने नैतिक से कहा आप भी ले लो नींबू पानी अच्छा रहेगा। पहाड़ उतरने चढ़ने में कितना हमने पसीना बहा दिया कम से कम हारी एनर्जी नींबू पानी पीने से मेंटेन हो जायेगी।

नैतिक ने कहा शिक्षा देखो मैंने एक नियम ले रखा है कि पर्वत पर लगी दुकानों से सामान खरीदकर कुछ भी नहीं खाऊँगा और पीऊँगा क्योंकि यह एक बहुत पवित्र पर्वत है हम यात्री जन यहां खाते पीते हैं तो इन दुकानों की संख्या बढ़ जाती है और बढ़ती जायेगी एक दिन इतना अतिक्रमण इस तीर्थ पर हो जायेगा कि हमारे तीर्थ का रास्ता ही रूक जायेगा इसीलिए इन दुकानदारों को प्रोत्साहन नहीं देना चाहिए तब नैतिक की बात सुनकर जिनेश ने कहा सचमुच में हमने कभी इस प्रकार से नहीं सोचा नैतिक की दृष्टि कितने दूर पर जा टिकती है और कितना दूर का सोच लेते हैं, चलो शिक्षा अपन कमरे पर खाना पीना सब कुछ करेंगे। शिक्षा ने भी नींबू पानी का दिया आर्डर केंसल कर दिया और नीचे उतरना जारी रखा शिक्षा हर कदम-कदम पर नैतिक की बातों से प्रभावित होती चली जा रही थी प्रकृति के मनोहर दृश्यों को देखने के साथ-साथ शिक्षा नैतिक ही हर खूबिओं पर नजर रख रही थी वाणी की गंभीरता और संयमित कदम शिक्षा के मानस पटल पर एक अमिट इबारत लिख रहे थे शिक्षा ने नैतिक को अपनी ओर प्रभावित करने के लिए सब प्रकार के प्रयास प्रारंभकर दिये थे कब तीर्थ की तलेटी पर दोनों पहुँच गये यह मालूम नहीं चला देखते ही देखते तेरहपंथी कोठी आ गई थी शिक्षा का पूरा परिवार तेरहपंथी कोठी में प्रवेश कर चुका था और नैतिक गुणायतन की तरफ आगे बढ़ गया था।

तीन दिन बीतने के बाद शिक्षा नैतिक का समाचार लेने गुणायतन पहुँची लेकिन पता लगा कि नैतिक तो यहां से चला गया है तब शिक्षा ने अपने मोबाईल का उपयोग किया और नैतिक का नंबर लगाते हुए नैतिक से कहा आप कहां है तब नैतिक ने कहा कि हम रामगढ़ आ चुके है तब शिक्षा ने बहुत उलाहने देने के बाद कहा आप तो चैन से बैठ गये पर मुझे बैचेन कर गये और फोन काट दिया नैतिक और शिक्षा के परिवार में दोनों की शादी की चर्चा खूब तेजी से चल पड़ी शिक्षा ने अपने जीवन को बदलकर आधुनिकता से पीछे हटने का संकल्प ले लिया और शिक्षा यह समझने के लिए तैयार हो गई कि भारतीय संस्कृति और शिक्षा बहुत दम रखती है, इसीलिए मैं अब भारतीय फैशन और संस्कृति पर लौटूंगी।

मोबाईल की घंटी रोज शाम के 5 बजे शिक्षा की बजने लगी और उधर नैतिक भी मोबाईल की घंटी सुनने की प्रतीक्षा करने लगा ऐसे ही कई दिन बती गये और महावीर जयंती आ गई ओर महावीर जयंती के दिन शिक्षा और नैतिक दोनों जीवनसूत्र में बंध गये सब लोगोंने कहा नैतिकता के बिना शिक्षा अधूरी है नैतिक शिक्षा का मिलना जरूरी है।

हमारे गौरव

विक्रमादित्य षष्ठं त्रिभुवनमल्ल साहसतुंग (1076-1128 ई.)

पूर्ववर्ती नरेश का अनुज था और सम्भवतया उसे पदच्युत कर बन्दी बनाकर उसने सिंहासन हस्तगत किया था। यह इस वंश के अंतिम नरेशों में सर्वमहान था। बड़ा प्रतापी और विजेता था तथा निरन्तर युद्धों में व्यस्त रहा। उसने अपने राज्याभिषेक की तिथि से चालुक्य विक्रम वर्ष नाम का अपना संवत् भी चलाया था। कश्मीर ने महाकवि कल्हण ने इसके आश्रय में रहकर इसी के लिए अपने विक्रमांक-देव-चरित शीर्षक महाकाव्य की रचना की थी। यह सम्राट बड़ा विद्यारसिक था। अनेक विद्वानों को उसने आश्रय दिया था। कुछ लेखकों के मतानुसार जैनाचार्य वासवचन्द्र को बाल सरस्तवती की उपाधि इसी चालुक्य नरेश ने प्रदान की थी। उसकी जननी गंग-राजकुमारी थी और पत्नी चोल राजकुमारी थी। राज्य प्राप्त करने के पूर्व ही जब वह एक प्रान्तीय शासक मात्र था, उसने बनवासि प्रान्त की राजधानी बल्लिगाँव में चालुक्य-गंग-पेर्म्मानडि जिनालय नाम का एक सुन्दर मन्दिर बनवाया था जिसके नाम में उसने अपने पितृवंश एवं मातृवंश दोनों ही कुलों की स्मृति सुरक्षित की और स्वयं भी चालुक्य-गंग-पेर्म्मनडि, उपाधि धारण की अपने राज्य के दूसरे वर्ष (1077) ई. में उसने बनवासि के शासक दण्डनायक बर्म्मदेव तथा उसके अनुचर धर्मात्मा श्रावक प्रतिकण्ठ सिंगय्य की प्रार्थना पर उक्त जिनालय में देव पूजा, मुनि आहार आदि की व्यवस्था के लिए एक ग्राम का दान दिया था। दान लेने वाले मुनि रामसेन पण्डित मूलसंघ-सेनगण-पोगरिगच्छ के गुणभद्रदेव के शिष्य और महासेन के सधर्मा थे। गुलवर्गा जिले के हुनसि-हदल्गे नामक स्थान में स्थित पद्मावती-पार्श्वनाथ जिनालय के शिलालेख से प्रतीत होता है कि वह जिनमन्दिर भी इसी चालुक्य सम्राट द्वार बनवाया गया था। अनुश्रियों के अनुसार बेलगोला जिले में उसने अनेक जिनमन्दिरों का निर्माण कराया था। और पूर्वकाल में चोलो द्वारा ध्वस्थ मंदिरों में से अनेकों का जीर्णोद्धार भी कराया था। आचार्य अर्हनन्दि इस नरेश के गुरु थे। यद्यपि उसका व्यक्तिगत एवं कुलधर्म जैन धर्म था। यह सम्राट सर्व-धर्म सहिष्णु था और लोक व्यवहार के सभी धर्मो का प्रतिपालन करता था। स्थापत्य शिल्प की चालुक्य शैली के विकास का प्रधान श्रेय भी उसे ही है। सम्राट विक्रमादित्य षष्ठ की ज्येष्ठ रानी जक्कदेवी इंगलंगि प्रान्त की शासिका थी। अपने कुशल प्रशासन एवं वीरतापूर्ण कार्यों के लिए उसने बड़ी ख्याति अर्जित की थी। वह कलिकाल-पार्वती तथा अभिनव-सरस्वती कहलाती थी और जैन धर्म की अनुयायी थी। उसका पुत्र एवं उत्तराधिकारी सोमेश्वर तृतीय भूलोकमल्ल (1128-39) एक शान्तिप्रिय एवं साहित्य रसिक नरेश था। उसने अभिलषितार्थ-चिन्तामणि अपर नाम राजमान सोल्लास नामक महाग्रंथ की रचना की थी जो एक प्रकार का विश्वकोश जैसा था, और सर्वज्ञ विरूद धारण किया था। उसने उत्तराधिकारी जयसिंह तृतीय, तैल, तृतीय, सामेश्वर चतुर्थ आदि निर्बल शासक थे। और 12वीं शती के अन्त के ही पूर्व ही कल्याणी के इन उत्तरवर्ती चालुक्यों होयसल, गंग, सान्तर, रट्ट आदि कई राजवंश-उपराजवंश आगे दिया जायेगा, किन्तु उनके अतिरिक्त भी कतिपय उल्लेखनीय जैन व्यक्ति हुए हैं।

कैसे करें और मांगे क्षमा

❊ रूचि अनेकांत जैन, नई दिल्ली ❊

क्षमा आतमा का सर्वश्रेष्ठ गुणधर्म है, जो क्रोध के अभाव स्वरूप प्रकट होता है। पर्युषण पर्व में इसका महत्व अधिक बढ़ जाता है। परन्तु वास्तव में क्या हमारे भीतर क्रोध कम होता है या सिर्फ पर्युषण पर्व में हमारा क्रोध मन के किसी कोने में शात बैठा रहता है ? वास्तविकता तो यही है कि हमारी कषाय पर्व के दिनों में भले ही शांत दिखती हो किन्तु अन्य दिनों में वह कषाय पुनः वैसी ही हो जाती है। प्रतिवर्ष आने वाले यह पर्व हमें संदेश देते हैं, हमें सिखलाते हैं कि हमें सदैव ही क्रोध पर नियंत्रण रखना चाहिए और क्षमा का भाव विकसित करना चाहिए।

क्षमा अर्थात Forgiveness को हम सभी यदि अपनी दिनचर्या में शामिल कर लें तो कोई किसी का शत्रु नहीं रहेगा, सारे झगड़े समाप्त हो जायेंगे, जिन्दगी जीना सभी के लिए आसान हो जायेगा। नई पीढ़ी विदेशों से आयातित पर्व तो बहुत जोर शोर से मनाने लगी है लेकिन हमारे भारतीय पर्वों को वो सम्मान नहीं देती है जो देना चाहिए। उसके कारणों में हम जाएँ तो हम पाते हैं कि हमारे पारंपरिक पर्व बहुत पुराने क्रियाकाण्डों से जुड़े है और अब वो पुराने क्रियाकाण्ड जो जिन्दा हैं लेकिन उनकी मूलभावना समाप्त प्राय है।

नई पीढ़ी नयी क्रियाएं पसंद करती है, यदि हम पुराने क्रियाकाण्डों में जान नहीं डाल पा रहे हैं तो हमें अब नये जमाने में नये किस्म के क्रियाकाण्ड मूलभावना के साथ विकसित करने चाहिए ताकि नयी पीढ़ी अपनी मूल संस्कृति को न छोड़े। जैसे नई पीढ़ी पूजा का धागा बंधवाने में संकोच करती है लेकिन फ्रेंडशिप बैंड बाँधने में गर्व महसूस करती है। इसी प्रकार हमें क्षमा पर्व मनाने के तरीका में कुछ ऐसे सकारात्मक परिवर्तन करने होंगे जो मूल भावना से भी अलग न हों और नये जमाने को भी रास आने लग जायें।

आइये इस क्षमापर्व को मनाने के लिए कुछ आधुनिक ट्रेंड विकसित करने के बारे में सोचते हैं-

हम फ्रेन्डशिप डे पर फ्रेन्डशिप बेल्ट गिफ्ट करते हैं पर गिफ्ट एवं कार्डस देते हैं। जिससे हम प्यार करते हैं उसे अनेक प्रकार से अपने प्यार का इजहार भी करते हैं। ठीक इसी प्रकार जिसके प्रति हमने अपराध किया है उससे क्षमा का निवेदन भी विविध प्रकार से करना चाहिए। पहले क्षमा वाणी के सुंदर कार्ड्स और संदेश, कवितायें लोग अपने हाथों से बनाकर या छपवाकर देते थे किन्तु अब उसका स्थान सोशल मीडिया ने ले लिया है। इसमें ये पता ही नहीं होता कि व्यकित किससे और क्यों क्षमा याचना कर रहा है ? हमने जो अपराधन किये हैं उनमें से अधिकांश तो हमें ज्ञात हैं और किसके प्रति किये हैं वो भी ज्ञात है। तब हमें उन अपराधों को कहकर उसकी आलोचना करनी चाहिए और जिसके प्रति किया है उससे मिलकर, कह कर क्षमा याचना करना चाहिए। इसमें साथ में कुछ ग्रंथ या मंगल सामग्री उपहार स्वरूप देकर क्षमा याचना करें तो और अधिक प्रभाव पड़ सकता है। Forgiveness Day पर Wrisy bands हम उन्हें दे सकते जिनसे क्षमा याचना करनी है।

क्षमा पर्व को विश्वस्तर पर Forgiveness Day के रूप में मनाकर विश्व में शांति और सद्भावना स्थापित कर सकते हैं।

हमें अपने बच्चों में भी क्षमा मांगने और दूसरों को क्षमा करने का भाव विकसित करना चाहिए। स्कूलों में आस-पड़ोस में बच्चे छोटी-छोटी सी बात पर अन्य बच्चों को थप्पड़ मार देते हैं। मारपीट

करने लग जाते हैं, इससे बैर-भाव ज्यदा विकसित हो जाता है, तुरंत बात को लड़ाई-झगड़े को खत्म करने का सबसे अच्छा तरीका है, माफ कर देना, माफी मांग लेना। संवाद के माध्यम से यह क्षमा करने का गुण हमारे प्रयासों से ही विकसित होगा।

आजकल ऑफिस में बॉस के साथ तथा अन्य साथियों के बीच छोटी-बड़ी बात को लेकर मन मुटाव हो जाते है, ऐसे में क्षमा मांग लेने पर सब कुछ ठीक हो जाता है। ऐसे में हम कुछ आधुनिक तरीके अपनाकर मार्केट से कुछ गिफ्ट जैसे- पेन, डायरी, ब्रेसलेट आदि पर Forgiveness Print करवाकर भी ऐसी चीजें वितरित कर सकते हैं, नया साल तो ऐसे ही मानते हैं न।

यूनिवर्सिटीज और कॉलेजों में रोज होने वाले झगड़ों से सभी परिचित हैं, ये झगड़े तुरंत हल ना किये जाएँ तो बड़ा रूप ले लेते हैं आपसी मन-मुटाव को कम करने लिए स्टूडेंट्स टी-शर्ट, बैग्स आदि पर Forgiveness Print करवाकर एक दूसरे गिफ्ट करें। आजकल टैटू का जमाना हैं, तो उल्टे-सीधे टैटू न बनवाकर क्षमा अर्थात् Forgiveness के टैटू बनवायें। ऐसा करने से आपस में प्रेम और सौहार्द बढ़ता है। विश्वविद्यालय, महाविद्यालय, विद्यालय में क्षमा पर्व पर भाषण, निबंध, नाटक आदि प्रतियोगिताएं करवाकर, एक दूसरे को मिठाई आदि खिलाकर यह पर्व मनाया जा सकता है।

सार्वजनिक स्थानों पर सामूहिक प्रतिक्रमण करके पूरे भारतीय समाज को इसका महत्व बतलाना चाहिए।

यदि आप किसी फैक्ट्री, ऑफिस, कॉलेज या संस्था के मालिक हैं तो अपने फर्म में स्टाफ के साथ मिलकर यह दिन उत्सव की तरह मनाएं।

इस प्रकार आपके मन में भी अनेक नये उपाय आते होंगे आप उन्हें सभी को बाताएं और सबसे बड़ी बात सच्चे मन से क्षमा याचना करें ताकि आपकी आत्मा शुद्ध हो सके और अगले का मन भी साफ हो सके।

कविता

गजल-मानवता का संचार

मानव में मानवता का अगर संचार हो जाये।
धरती पर अगर करूणा की फुहार हो जाये ॥
दिल में जले रोशनी अहिंसा की अगर तो।
मानव को मानवता से प्यार हो जाये ॥
उतर सकती जमी पे जन्नत मानव अगर चाहे।
इक बार अगर दिल से पुकार हो जाये ॥
हथेली पे लिए जान घूमता है आदमी।
विनाश बचाने वीर का अवतार हो जाये ॥
नफरत न निकलेगी इंसा के मन से अब।
धर्म का सौदा भी अगर उधार हो जाये ॥

कविता

जीवन में पाप

रचयिताः कांति कुमार जैन, करूण खिमलासा

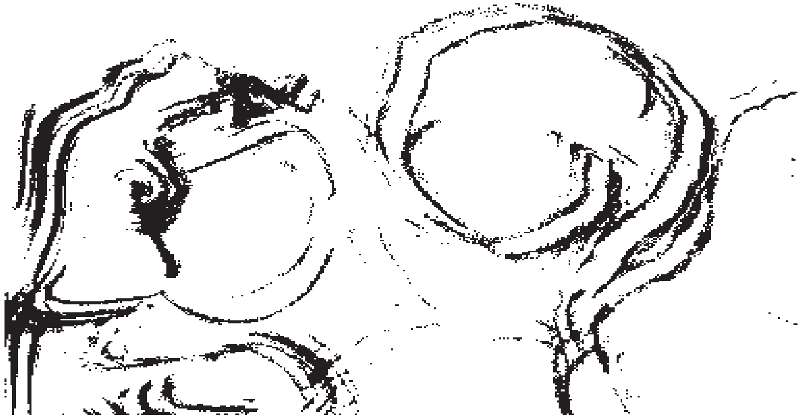

जो किये पाप ये जीवन में, वे कर्म उदय में आये हैं।
घबराना न अब हे चेतन, गुरुवर ने हमें जगाये हैं।
अब करो पुण्य के कार्य स्वयं, परमात्म से सम्बंध रखो।
दर्शन व पूजन करो सदा, भक्ति से अब गुणगान करो॥
जीवन के अतः अमूल्यक क्षण, प्रभुवर की महिमा गाये हैं।
जो किये पाप ये जीवन में , वे कर्म उदय में आते हैं।
समता धरो हृदय में बंधु, समता ही जीवन का साथी।
समभाव रखो अपने उर में, सुख शांति हृदय में है आती॥
क्षण क्षण यह जीवन निकल रहा, गुरुवर ने हमें समझाये हैं।
जो किये पाप ये जीवन में, वे कर्म उदय में आये हैं॥
अतः जागरण करो बंधुओं, धर्म भावना उर में जाओं।
यही साधना यही साध्य है, औं प्रभुवर की महिमा गाओ॥
तभी मिलेगा सुख जीवन में ऐसा भाव बनाये हैं।
जो किये पाप ये जीवन में , वे कर्म उदय में आये हैं।
अब सहन करो दुख जीवन में, परिणाम सरल करते जाओं।
तब धर्म से सुख को पाओंगे, सदभाव हृदय में अब जाओं॥
फिर करूण न होंगे जीवन में, जब धर्म भावना भाये हैं।
जो किये पाप ये जीवन में, वे कर्म उदय में आये हैं।

प्रवचन-आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज

मन के सुमन समर्पित करो प्रभु के चरण

जबलपुर- सुमन का अर्थ होता है पुष्प, जो हम प्रभु के चरणों में अर्पित करते हैं। यदि हम अपने आपको प्रभु के चरणों में समर्पित कर दें तो जीवन धन्य हो जाए। उक्त उदगार आचार्य श्री विद्यासागर ने रविवार को दयोदय तीर्थ में मंगल प्रवचन में व्यक्त किए।

धर्मसभा को सम्बोधित करते हुए आचार्यश्री ने मन को सुमन बनाने की प्रेरणा दी। आचार्य श्री ने कहा कि हमारा मन बड़ा चंचल है, यदि उसे प्रभु से लगा दिया जाए तो उत्थान सम्भव है। मन और सुमन शब्द बड़े महत्वपूर्ण हैं। बुरी आदतों से मुक्त मन ही सुमन होता है। जो मन को सुमन बनाता है, वही विजित होता है। आदर्श को स्मरण करना बड़ी बात है। हम अपने गुरुवर को स्मरण करते हैं। गुरु और प्रभु के चरणों में चढ़ने से अधिक अच्छा कोई काम नहीं है। तीर्थंकरों ने अहिंसा और जीव दया का पाठ पढ़ाया है। धर्म के मार्ग पर चलकर ही उत्थान और कल्याण सम्भव है। धर्म से दूर होने वाला मनुष्य दिशाहीन हो जाता है, दिशाहीन मनुष्य किसी भी मार्ग पर चले, लेकिन उसे लक्ष्य की प्राप्ति नहीं होती है।

आचार्यश्री को समर्पित की पीएचडी उपाधि

नई दिल्ली निवासी राज जैन ने रविवार को आचार्य विद्यासागर के साहित्य अवदान पर की गई अपनी पीएचडी को आचार्यश्री को समर्पित किया। इस मौके पर झांसी विश्वविद्यालय से नरेन्द्र जैन के ग्रंथ संस्कृत साहित्य में जैन साहित्य का योगदान पर प्रस्तुत की गई। साहित्य रचना एवं सागर विश्वविद्यालय से निधि जैन, मूकमाटी के शैलीपरक अनुशीलन पर डॉक्टर मीना जैन भोपाल एवं हिंदी महाकाव्य की परंपरा में मूकमाटी का अनुशील विषय पर डॉ. अमिता मोदी, जैन विषय से सबंधित आधुनिक हिंदी महाकाव्य सामाजिक चेतना विषय पर डॉ. सुशीला जैन की इंदौर विश्वविद्यालय से की गई पीएचडी को आचार्य श्री को समर्पित किया गया।

आचार्यश्री के ग्रंथ मूकमाटी पर अभी तक 200 से ज्यादा शोध किए जा चुके हैं । भारत एवं अन्य देशों के विश्वविद्यालयों में शोध किए जा रहे हैं।

विशेष प्रवचन आज :- पूर्णायू आयुर्वेद कौशलम कार्यक्रम के अंतर्गत सोमवार को आचार्य ज्ञानसागर महाराज के समाधि दिवस पर दयोदय गौशाला में दोपहर 3 बजे आचार्य श्री के विशेष प्रवचन होंगे। मंगलवार सुबह 6 बजे से योग शिविर में स्वस्थ्य व्यक्ति की योग्यता एवं पंच इंद्रिय कि यात्मक क्षमता बढ़ाने हेतु अवनीश तिवारी के द्वारा योग क्रियाएं बताई जाएगी।

जैन सेनापति

❊ हुकुमचंद्र जी सांवला, विश्व हिन्दु परिषद उपाध्यक्ष ❊

क्रमशः पिछले अंक से

•**इन्द्र चतुर्थ–** राष्ट्रकूट वंश का अन्तिम नरेश था। वह कृष्ण तृतीय का पौत्र तथा गंगमारसिंह का भानजा था। वह भारी वीर योद्धा था तथा चौगान (पोलो) के खेल में निपुण था। मारसिंह ने राज्य प्राप्त करने में बहुत सहायता की थी, पूर्वजों का राज्य था, राज्याभिषेक भी कर दिया था। किन्तु राष्ट्रकूटों का सूर्य अस्त प्रायः था। 774 ई. में मारसिंह ने समाधिमरण कर लिया था। निस्सहाय इन्द्रराज कुछ वर्षो के पश्चात् संसार से विरक्त हो श्रवणबेलगोल चला गया। 982 ई. में समाधिमरण पूर्वक वह स्वर्गस्थ हुये।

• **सम्राट कोलतुंग चोल (1074–1123 ई.)–** राजा बड़ा चतुर, वीर और पराक्रमी था। उसने कलिंग देश पर भी विजय पायी, विजययात्रा का वर्णन तमिल प्रसिद्ध महाकाव्य कलंगट्टुपरनि के साहित्य में प्राप्त होता है जिसके रचयिता कोलतुंग चोल के प्रमुख राज कविजंय गोदन्न थे जो जैन धर्मानुयायी थे। सम्राट् स्वयं जैन धर्म के अनुयायी थे। स्वयं ने मैसूर के जैन मंदिरों का जीर्णोद्धार कराया था। अपने राज्य में समस्त निषिद्ध पदार्थों का आयात बन्द कराया था। प्राचीन भारत के चरित्रवान् नरेशों में कोलुत्तुंग चोल की गणना की जाती है।

• **सत्याश्रय इरिव बेडेंग (997–1009 ई.)–** ने अपने पिता तैलपद्वितीय के शासनकाल में ही अपनी वीरता पराक्रम और रणकौशल के लिये ख्याति प्राप्त कर ली थी। इस नरेश के गुरु कुन्दकुन्दादय के द्रमिलसंघी त्रिकालमौनी भट्टारक के शिष्य विमलचन्द्र पण्डितदेव थे। नरेश के युवराज काल में ही उनका समाधिमरण में ही हो गया था। स्वयं सम्राट सत्याश्रय इरिव बेडेंग भी परम जिनभक्त थे।

• **जयसिंह द्वितीय जगदेकमल्ल (1014–1042 ई.)–** इस वंश का पांचवा नरेश था और सत्याश्रय के अनुज दशवर्मा का तृतीय पुत्र था। धारा का परमार भोजदेव और तंजौर का राजेन्द्र चोल उसके प्रबल प्रतिद्वन्दी थे। दोनों से ही उसके युद्ध हुये और अन्ततः दोनों के ही साथ उसने मैत्री सन्धियाँ कर ली थी। यह अच्छा प्रतापी नरेश था और जैन धर्म का विशेष भक्त था। अनेक जैन विद्वानों और गुरुओं का उन्होंने विशेष सम्मान किया। नरेश ने मल्लिका मोद शान्तीश-बसदि नाम का एक सुन्दर जिनालय बनवाया। एक अन्य जैन गुरु वासवचन्द्र ने भी अपने बाद पराक्रम के लिये चालुक्यत-कटक में बाल सरस्वती की उपाधि प्राप्त की थी। मुल्लुर की शान्तीश्वर बसति के निकट प्राप्त एक शिलालेख के अनुसार 1030 ई में में गुणसेन पण्डित के गुरु पुष्पसेन सिद्धांत देव के समाधिमरण की स्मृति में उनके चरण चिन्ह स्थापित किये थे।

• **सोमेश्वर प्रथम त्रैलोक्यमल्ल आहवमल्ल (1042–1068 ई.) –** राजा जयसिंह का पुत्र, उत्तराधिकारी जो बड़ा पराक्रमी, वीर योद्धा, साथ ही श्रेष्ठ कूटनीतिज्ञ भी था। आहवमल्ल उपाधि धारण करने वाला इस वंश का यह दूसरा राजा था। त्रैलोक्यमल्ल इसकी अपनी विशिष्ट

उपाधि थी। वह एक निष्ठावान जैन सम्राट था। बेल्लारी जिले का कोगली नामक स्थान पुरातन काल से प्रसिद्ध जैन केन्द्र रहता आया था। जिनायतन का तथा जैन मंदिरों , जैन विद्यापीठ का निर्माता उत्तम प्रबन्धन के लिये भूमिदान की थी। समय-समय पर पंडितों, विद्वानों के द्वारा उपाधि दी गयी, शब्दचतुर्मुख। जैनाचार्य इन्द्रकीर्ति, अजितसेन, रामभद्र, जैन गुरु श्री धराचार्य का आाशीर्वाद प्राप्त था। 1068 ई. वैशाख शुक्ल सप्तमी शुक्रवार के दिन चरम योग का नियोग करके तुंगभद्रा नदी में जल समाधि ले ली।

• **सोमेश्वर द्वितीय भुवनैकमल्ल (1068–1076 ई.)–** सोमेश्वर प्रथम त्रैलोक्यमल्ल का ज्येष्ठ पुत्र, उत्तराधिकारी अपने पिता की ही भांति भव्य जैन थे। उन्होंने चोलों, अपने भाईयों, कदम्बों को परास्त किया। प्रथम वर्ष (1068ई.) में बलिग्राम में जैन मंदिर बनवाया। शान्तिनाथ मंदिर के लिये माद्यनन्दि मुनि को भूमिदान दिया था। मंदिरों को जीर्णोद्धार कराया, नये मंदिरों में प्रतिमा भी प्रतिष्ठित करायी। मुनियों की व्यवस्था के लिये भूमिदान की। शान्तिप्रिय नरेश सोलहवें तीर्थंकर शान्तिनाथ का विशेष भक्त था। एक प्राचीन जैन मंदिर की व्यवस्था जमीदारीं चली आ रही थी। वह परम्परा से श्री नन्दि पण्डित को प्राप्त हुई थी उसकी व्यवस्था सिंगय्य द्वारा उन्होंने इस प्रकार करायी थी कि एक भाग तो उक्त भुवनैकमल्ल जिनालय को मिला, एक भाग शिष्य अष्टोपवासिगन्ति को ध्वजतटाक के बारह ग्राम प्रमुखों की देख-रेख में पार्श्व-जिनेश्वर की पूजा तथा शास्त्र लिखने वाले लिपिकों को भोजन प्रबन्ध के लिये दिया गया, एक भाग मुनियों के आहार दान आदि की व्यवस्था के लिये दिया गया,और कुछ भूमि विभिन्न कर्मचारियों को बाँट दी गयी।

• **विक्रमादित्य षष्ठ त्रिभुवनमल्ल साहसतुंग (1076–1128 ई.)–** इस वंश के अन्तिम नरेशों में सर्वमहान था, बड़ा प्रतापी और विजेता था तथा निरन्तर युद्धों में व्यस्त रहा। उन्होंने अपने राज्याभिषेक की तिथि से चालुक्य-विक्रम- वर्ष नाम का संवत् भी चलवाया था। कश्मीर के महाकवि विल्हण ने इनके आश्रय में रहकर इसी के लिये विक्रमांक-देव-चरित् शीर्षक महाकाव्य की रचना की थी। सम्राट विद्या रसिक थे। अनेक विद्वानों को आश्रय प्रदान किया, जैनाचार्य वासवचन्द्र को बाल-सरस्वती की उपाधि प्रदान की। आचार्य अर्हनन्दि इस नरेश के धर्मगुरु थे। सम्राट का व्यक्तिगत एवं कुलधर्म जैन था। सम्राट सर्व-धर्म सहिष्णु था और लोक व्यवहार में सभी धर्मों का प्रतिपालन करता था।

• **बोप्पदेव कदम्ब–** कदम्ब कुल में उत्पन्न महाराज सो विदेव या सोमनृप की रानी लचलदेवी से उत्पन्न उनका पुत्र उत्तराधिकारी यह बोप्पदेव नृपति था जो बड़ा पुण्यवान और प्रतापी था। सुन्दर बान्धवपुर नगर उसकी राजधानी थी। राजा का स्वयं का तथा उसकी कुल-परम्परा का धर्म जैन धर्म था। उनके इष्टदेव भगवान शांतिनाथ थे जिनका अतिसुन्दर जिनालय उक्त नगरी की शोभा बढ़ाता था। वस्तुतः इस मंदिर में भगवान धर्मनाथ, शान्तिनाथ और कुन्थुनाथ के तीन चैत्य थे, जिनके कारण यह रत्नत्रय जिनालय कहलाता था। इस मंदिर के आचार्य भानुकीर्ति सिद्धान्ति थे। 1203 ई. के शिलालेख में इन्हें कदम्बवंशी सोमनृपात्मज बान्धवपुराधिप बोप्पदेव को रेच-चमूपति के अनन्तर बन्दलिके तीर्थ की उन्नति करने वाला नरेश कहा है।

• नरेश विनयादित्य द्वितीय (1060-1101ई.) -होयसल वंश का यह चौथा राजा बड़ा उदारदानी धर्मात्मा और प्रतापी था। उसके गुरु जैनाचार्य शान्तिदेव थे। श्रवणबेलगोल की 1129 ई. की मल्लिषेण प्रशस्ति नामक शिलालेख के अनुसार गुरु शान्तिदेव की पाद पूजा के प्रसाद से पोयसल नरेश विनयादित्य होयसल ने अनेक जैन मंदिरों, देवालयों, सरोवरों, ग्रामों और नगरों का निर्माण प्रसन्नतापूर्वक कराया। गुरु शान्तिदेव के समाधिमरण दिया तो राजा ने उनकी स्मृति में वहाँ स्मारक स्थापित किया। राजा ने अपने राज्य में धान्य क्षेत्र को विकसित करने के लिये एक नहर का निर्माण कराया। कई जैन मंदिरों का निर्माण संतों-मुनियों की व्यवस्था हेतु विभिन्न प्रकार के दान दिये। पुत्र एरेयंग ने भी कई उपाधियाँ धारण की, पिता पुत्र का जीवन काल लगभग साथ ही पूर्ण हुआ। एरेयंग की रानी एचलदेवी से तीन पुत्र हुये, बड़ा बेटा बल्लाल था।

• बल्लाल नरेश प्रथम (1101-1106ई.)- एरेयंग का ज्येष्ठ पुत्र था। उसके धर्म गुरु एवं राजगुरु चारूकीर्ति पण्डितदेव थे। आचार्य महानवादी श्रुतकीर्ति देव के शिष्य थे। सभी विषयों में निष्णात, विविध विद्या-पारंगत थे। **जिस समय राजा बल्लाल शत्रुओं के घेरे में घिर गये तब वे असाध्य रोग से भी पीड़ित हुये तब गुरुदेव की औषधि से ही स्वस्थ हुये थे। मान्यता थी कि मुनिराज के शरीर से बहने वाली हवा से लोगों रोग दूर हो जाते थे।** बल्लाल राजा अपने पिता की भांति ही जैन परम्परा का अनुयायी था।

• नरेश विष्णुवर्धन होयसल (1106-1141 ई.)- बल्लाल प्रथम का अनुज एवं उत्तराधिकारी था। यह होयसल वंश का सर्व प्रसिद्ध नरेश है, जो भारी योद्धा, महान विजेता एवं अत्यन्त शक्तिशाली था। साथ ही वह बड़ा उदारदानी, सर्वधर्म सहिष्णु और भारी निर्माता था। उन्होंने द्वार समुद्र (हलेविड) को अपनी राजधानी बनाया। चालुक्यों से स्वयं को मुक्त किया, चोलों को देश से भगाया। जैनों पर अत्याचार किये, मंदिर तोड़े, उनके स्थान पर वैष्णव मंदिर बनावायें। उसकी राजसभा में शास्त्रार्थ भी हुये। इनकी विद्वता से राजा प्रभावित भी हुआ, अपने राजा से धर्म प्रचार की छूट भी दी। 1121 ई. शिलालेख से ज्ञात होता है कि स्वयं को जैन घाषित किया। 1125 ई. में जैन गुरु, श्रीपाल त्रैविद्य का सम्मान किया। उन्हें दान उपाधि प्रदान की। जैन मदिरों का निर्माण भी करायें।

• नरसिंह प्रथम होयसल (1141-1173ई.)- विष्णुवर्धन की रानी लक्ष्मी देवी का पुत्र विजय नरसिंह देव उसका उत्तराधिकारी हुआ। जन्म समय ही यौवराज्याभिषेक कर दिया गया था। अपने पिता की मृत्यु के समय वह 8 वर्ष का था। राज्य संरक्षण स्वामी भक्त, सुयोग्य वीर जैन सेनापतियों और मंत्रियों की तत्परता के कारण हुआ। प्रतिदिन जैन मंदिरों का निर्माण कराया।

• होयसल बल्लाल द्वितीय (1173-1220 ई.)- वीर बल्लाल प्रथम के नाम से सुप्रसिद्ध यह नरेश नरसिंह प्रथम की रानी एचलदेवी से उत्पन्न उसका पुत्र एवं उत्तराधिकारी था और अपने पितामह विष्णुवर्धन की भांति ही प्रतापी, बड़ा वीर महापराक्रमी, भारी विजेता और स्याद्वादमत (जैन धर्म) का पोषक एवं पक्षपाती था। इस नरेश के गुरु द्रमिलसंघी श्रीपाल- त्रैविद्य के शिष्य वासुपूज्य व्रती थे। 1173 ई. की श्रावण शुक्ल एकादशी रविवार के दिन वीर बल्लाल का पट्टबन्धोत्सव (राज्याभिषेक) हुआ था। इस उपलक्ष्य में त्रिकूट-जिनालय बनाकर, ग्राम दान किये। 1176 ई. में राजधानी में वीर बल्लाल जिनालय नाम का एक सुंदर मंदिर राज्याश्रय से निर्माण कराया। राजा के प्रभाव से कर्मचारी सेना के पदाधिकारी जैन धर्म का पालन करते थे। इस काल के जैन मंदिर भी होयसल-कला का श्रेष्ठ नमूने हैं।

• नरेश रामनाथ होयसल (1254-1297 ई.)- सोमेश्वर की दूसरी रानी देवलदेवी से उत्पन्न उनका पुत्र रामनाथ तमिल एवं कोलार क्षेत्र का शासक था। कन्नूर (विक्रमपुर) को अपनी राजधानी बनाया। 1276 ई. में कोगलि नामक स्थान में चैन्न-पार्श्व-रामनाथ बसदि का निर्माण कराया था। जैन गुरु उभयाचार्य का भी राजा ने सम्मान किया।

• नरेश होयसल बल्लाल तृतीय (1291-1333ई.)- नरसिंह तृतीय का पुत्र, उत्तराधिकारी वीर बल्लाल तृतीय इस वंश का अन्तिम नरेश था। होयसलों की राज्य शक्ति पतनोन्मुख थी। जिसे अलाउद्दीन खिलजी और मुहम्मद तुगलक के बर्बर आक्रमणों एवं भयंकर लूटमार ने धराशाही कर दिया। तथापि यह वीर बल्लाल अन्त एक अपने स्वदेश की स्वतन्त्रता और राज्य की रक्षा के लिये वीरतापूर्वक जूझता रहा। धर्म की और ध्यान देने का समय ही नहीं मिला। स्वराज्य की रक्षा के प्रयत्न में उन्होंने वीरगति पायी। मृत्यु के तीन वर्ष के अन्दर ही विजयनगर साम्राज्य का बोया हुआ बीज अंकुरित हो उठा। वीर बल्लाल के शासनकाल में जैन धर्म की कर्नाटक देश का सर्वोपरि एवं प्रधान धर्म था। जब 1300 ई. राजधानी द्वार समुद्र में महामुनि रामचन्द्रमलधारिदेव ने समाधिमरण किया तो समस्त जानना ने उत्सव मनाया, गुरु की मूर्ति बनायी। जिनालय बनाये तथा प्रबन्धन हेतु ग्राम दान किया।

• राजा शान्तिवर्म- पतवर्म का पुत्र, उत्तराधिकारी शान्तनृप या शान्तिवर्मरस जिनभक्त, विजेता, गुणगणालंकार, मार्ग का निर्णय करने वाला, तत्व-विचार-निपुण, गमक, चतुर्विधदान-तत्पर वीर एवं धर्मात्मा राजा था। शान्त वर्म और उनकी जननी काणूरगण के बाहुबलि के भट्टारक गृहस्थ-शिष्य थे। राजा ने सौदन्ति में एक जिनालय बनवाकर उसके लिये स्वगुरु को 981 ई. में 150 मत्तर भूमि का दान दिया था। शान्तनृप का पुत्र नन्नभूप था जिसका पुत्र प्रतापी कार्तवीर्य था, क्रमशः कार्तवीय प्रथम, द्वितीय, तृतीय हुये सभी प्रतापी योद्धा, धर्मात्मा थे। सभी ने जिनालयों का निर्माण करया। प्रतिमायें प्रतिष्ठा की, भूमि व ग्रामों का दान कराया।

• नरेश कार्तवीर्य चतुर्थ- बारहवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में-रट्ट वंश का प्रतापी और धर्मात्मा नरेश कार्तवीय चतुर्थ था। यह कार्तवीय तृतीय का पौत्र और लक्ष्मी भूपति का पुत्र था। कार्तवीय ने अपनी माता चन्द्रिका महादेवी द्वारा निर्मित्त जैन मंदिर के लिये 1201 ई. में तत्कालीन कुलगुरु शुभचन्द्र भट्टारक को कई गांव की भूमियाँ दान दी।

• राजा लक्ष्मी देव द्वितीय- कार्तवीर्य की मृत्यु के उपरान्त उनका पुत्र लक्ष्मीदेव द्वितीय राजा हुआ इनके गुरु मुनिचन्द्र देव थे। अपने राजगुरु की आज्ञा से अनेक दान तथा स्वनिर्मित मल्लिनाथ मंदिर के निमित्त दिये। स्वगुरु को राजा ने रट्टराज्य -संस्थापक-प्राचार्य की उपाधि दी थी। यह राजा भी रट्ट वंश का अन्तिम राजा सिद्ध हुआ।

क्रमशः अगले अंक में

एडी दर्द का कारण व निवारण

❋ जिनेन्द्र कुमार जैन (गोरीनगर इन्दौर) ❋

आमतौर पर चेहरे के हावभाव व्यक्ति का स्वभाव दर्शाते है। वैसे ही हमारी एड़ियों की सूरत और रूपरेखा भी सेहत संबंधी तथ्यों की जानकारी देती हैं। हमारे पूरे शरीर का भार पंजों और एड़ियों पर होता है जो तराजू की भांति संतुलन बनाकर जीवन चर्या सुगम बनाती है। एडी का दर्द बहुत ही पीड़ादायक होता है जो शरीर मे उत्पन्न होने वाली बीमारियों का भी संकेत देती है। कहावत भी है जिसके पैर न फटी बिवाई, वो क्या जाने पीर पराई।

एड़ी का दर्द से पैरा में अंगूठे में यदि सूजन होती है जो गाउट रोग का संकेत देती है। एडी के लिगामेन्ट में सूजन डाइबिटिज, वात रोग की शुरुआत। एडी की हड्डी में दर्द व सूजन, ओवेरियन कैंसर की संभावना का संकेत देते हैं।

एडी ईश्वर प्रदत्तर चमत्कारी संरचना है जिसमें निम्नानुसार अवयवों **1. कैल कोनियम हड्डी-** यह पांच की सबसे बड़ी हड्डी है जो पांच के पीछे स्थिति है जो एडी बनाती है। यह खड़े होने के समय पीछे की ओर शरीर का भार जमीन पर टिकाती है। **2. टेलस-** यह पांव का मध्य का सबसे ऊँची हड्डी है जो टीषिया को सहारा देती है तथा नीचे की और कैलकोनियम हड्डी के साथ जुड़ता है। **3 ब्यूबोइड-** यह पीछे की और कैलकोनियम के साथ तथा बाहरी पंजे को मेटाटारसल हड्डियों के साथ जुड़ती है। **4. नेवीक्यूलर-** यह एक नौकाकर हड्डी होती है जो पांव के मध्य होती है। **5.क्यूनीफार्म-** ये तीन हड्डियों होती है जो पीछे की और नेवीक्यूलर से व सामने की ओर तीन मेटाटारसल हड्डियों के साथ जुड़ती है। ये हड्डियां आपस में तालमेल बनाकर फिश प्लेट व मेहराव (आर्च) बनाकर जुड़ी होती हैं जो शरीर में अनावश्यक झटके, असंतुलन चोट, बजन से शरीर को सुरक्षित रखती हैं। समस्त हड्डियाँ,टेन्डस, लिगामेंट, फेशियां, प्लांटर फेशिया पेशियो से जुड़ी रहती है जो जोड़ों की क्रिया के दौरान एक जोड़ को अशंतः स्थिर रखने की चेष्टा करती है व कुछ सिकुड़ने वाली पेशियाँ व फैलने वाली पेशियों के विरूद्ध कार्य करती है। कुछ स्प्रिंग की तरह चलने की गति बढ़ाने में सहायकत होती हैं।

एडी का दर्द व कारण- 1. खराब फिटिंग या ऊँची हील के जूते, चप्प्ल पहनने से एडी में भार पड़ना है। 2. लम्बे समय तक खड़े रहना जिससे लम्बी लिगामेंट प्लांटर फेंसिया में सूजन आ जाती है जिससे तलवों, उत्तकों में जलन या चरपराहट महसूस होती है। 3. लम्बी दूरी तक चलना, दौड़ना जिससे पैरों का ज्यादा उपयोग होने से एडी की पीछे की मांस पेशियों में सूजन से एडी में दर्द बने रहना, चलने, दौडने में तकलीफ होना। 4. मोच खिचांव या चोट 5. शरीर के वजन का अचानक बढ़ना 6. एडी की कैलकोनियम हड्डी में अनियमित रूप से कैल्शियम जमने से सूजन व दर्द होना। 7. गम्भीर बीमारी के बाद पेशियों में कमजोरी आना। 8. पीठ की समस्या से एडी में दर्द 9. ठंडे पानी बर्ड में अधिक समय तक काम करना। 10. गठिया, आस्टोपोसिस, विटामिन डी, बी 12, मैगनीशियम की कमी होना।

समय पर सावधानी रखने से दर्द से बचाव संभव है जिसमें 1. सही साईज व वजन के जूते, चप्पल का चुनाव करना। 2. लम्बे समय तक खड़े नहीं रहना व लम्बी दूरी नहीं चलना। 3. बजन

नियंत्रण 4. व्यायाम गतिविधियों में समयानुसार सुधार। 5. डाइबिटिज, गठिया व अन्य रोगों का नियंत्रण। 6. संतुलित भोजन करना, अत्याधिक मात्रा में चीनी, जंक फूड, बैकरी उत्पाद का उपयोग नहीं करना। 7. भोजन में हरी पत्तिदार सब्जियाँ, फल दूध व दूध से बने उत्पाद का उपयोग करना।

दर्द की शुरुआत में शारीरिक चिकित्सा फिजियोथैरपी, स्ट्रेचिंग, बर्फ की सिकाई, पट्टी बांधना, व्यायाम गतिविधियों में संशोधन में मांसपेशियों में ताकत और काम की क्षमता पुनः आ जाती है। हल्दी का दूध पीना, लोंग तेल की मालिस करना सेंधा नमक से सिकाई करना जिसमें एक बड़े वर्तन में गर्म पानी भरकर दो बड़ी चम्मच पीसा सेंधानमक डालकर पैरों को आधा घंटा डुबो कर रखने से एडी दर्द व सूजन में आराम मिलता है जिसे एक सप्ताह तक करना चाहिये।

एडी के दर्द में 90% आराम बिना मंहगे और दर्दनाशक औषधियों से उपचार किया जा सकता है किन्तु हड्डियों और मांसपेशियों में गम्भीर क्षति पहुचने पर सर्जरी ही उपाय है। होम्योपैथी चिकित्सा पद्धति में सफलता पूर्वक इलाज किया जाता है जिसमें रोग की तीव्रता रोगी के लक्षणें के आधार पर अर्निका, कैलकेरिया कार्ब, लाइकोपोडियम, पल्सेटिला, रसटॉक्स, सिफिलीनम आदि।

खूबसूरत सुन्दर चिकनी एडिया स्वस्थ्य शरीर, गहन अध्यात्म व विलक्षण प्रतिभा की सूचक होती हैं। अपनी एडियों को चिकनी चमकदार बनाये रखने हेतु नियमित सफाई, मालिस करते हुए समय पर इलाज द्वारा स्वस्थ्य सुखमय जीवन की अनुभूति प्राप्त कर सकते हैं।

कविता

तुम्हारी नजर में

तुम्हारी नजर में मैं वो न रहा,
जो तुमने सपनों में अपने समाया
जो चाहत न पूरी हुई जब तुम्हारी,
न कोई तुम्हारे मैं काम आया
हकीकत की दुनिया जुढी ही होती,
ख्वावों की दुनिया तो नैनों में होती
खुशी हमने मानी ख्वावों में रहके,
ख्वावों की आँखें तो आखिर में रोती
अरे आशा पूरी होई न किसी की,
नहीं कामना पूर्ण होती किसी की
यही कामना लोभ व्यसन बुलाये,
व्यसनों से जिंदगी न बनती किसी की
चलो अब चले हम भूले सभी को,
जिन्हें माना अपना था भूले सभी को
हकीकत को जाने तजे मोह निंदिया,
सताते है गम मोह में ही सभी को

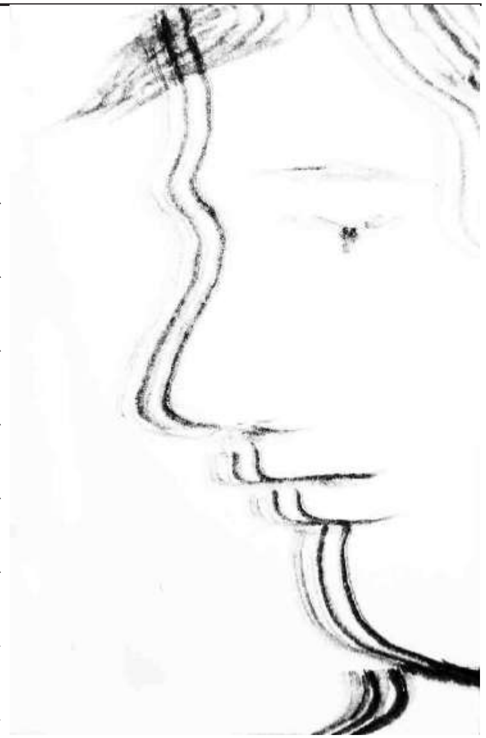

हास्य तरंग

1. विदेश में जन्में एक भारतीय लड़का कई वर्षो की पढ़ाई और लाखों रूपये खर्च करने के बाद डॉक्टर बनकर अपने भारतदेश में सेवाभाव करने के उद्देश्य से भारत आया। रेल्वे स्टेशन पर एक किताब देखकर उसको दिल का दौरा पड़ गया। हॉस्पिटल में होश आने पर परिवार वालों बताया कि 50 रूपये कि किताब का नाम था 30 दिनों में सफल डॉक्टर कैसे बने।

2. सेठी जी के जमाई साहब अपने ससुर को दुख सुना रहे थे उनकी बेटी ने उनका जीना, उठना, बैठना कैसे नरक बना दिया। सेठी जी सुनते-सुनते बहुत भावुक हो गये, उनकी आँखों में आंसू छलक आये। जमाई से बोले बेटा क्या बताऊ सोचो तुम्हारे पास जिस कपड़े का पीस है? मेरे पास उसका पूरा थान है।

3. लॉकडाउन में घर पर पत्नी टीवी देख रही थी। पति क्या देख रही हो ? पत्नी -कुकिंग शो। पति हर दिन कुकिंग शो देखती रहती हो पर भी खाना बनाना नही आया ? पत्नी हाजिर जबाव थी । तुमभी दिन भर कौन बनेगा करोड़पति देखते हो मैंने तो कुछ नहीं कहा।

4. टीचर- बच्चों को बता रही थी अगर सच्चे मन से ईश्वर से प्रार्थना करें तो ईश्वर हर इच्छा पूरी करते हैं। भावित- यह बात सच्ची नहीं ? टीचर- क्यों , भावित- क्योंकि अगर ऐसा हो जाता था आप पिछले वर्ष से ही दूसरे स्कूल में चले गये होते।

5. सन्टू- मम्मी जल्दी बाहर आओ, कोई दाड़ी वाले बाबा आये हैं। मम्मी- अरे बेटो ये कोई दाड़ी वाले बाबा नही आपके पापा हैं । बैंक गये थे लोन लेने आज आये हैं, पांव छू इनके।

संकलनः जिनेन्द्र कुमार जैन, गौरीनगर

संस्कार खेल

शरीर विकास के कुछ खेल

✻ पृथ्वीराज की आँखे

खिलाड़ियों की संख्या- 15-20

खेल वर्ग- मंडल का खेल

खेल विधि- मंडल केन्द्र पर एक खिलाड़ी आँख बन्द कर हाथ में दंड लेकर खड़ा होगा। शिक्षक के निर्देश पर कोई भी खिलाड़ी **ब** दो-तीन बार कोई शब्द जोर से बोलेगा। जय जिनेन्द्र..आदि। **अ** शब्द ध्वनि के आधार पर अपनी दिशा निर्धारित कर उस ओर दंड फेकेगा। अपने स्थान पर रहकर ही उसे पकड़ेगा।

✻ मत चुको चौहान

खिलाड़ियों की संख्या- 15-20

खेल वर्ग- मंडल का खेल

खेल विधि- शिक्षक परिधि पर खड़े स्वयं सेवकों को अंक देगा। मंडल के बीच में एक ईंट रखी होगी। शिक्षक जिस अंक को बुलाएगा। वह दोनों आँखें बन्दर कर आयेगा तथा ईंट पर दंड या मुक्का मारेगा असफल होने वाले खिलाड़ी अपने स्थान पर बैठते रहेंगे। सबसे अधिक बार सफल होने वाला खिलाड़ी विजयी होगा।

✻ भारत

खिलाड़ियों की संख्या- 10-30

खेल वर्ग- मंडल का खेल

खेल विधि- स्वयंसेवक मंडलाकार खड़े होंगे। प्रत्येक क्रमशः लम्बी साँस भरकर जियो और जीने दो बोलते हुए मंडल को दौड़कर एक चक्कर लगाएगा जिसकी साँस बीच में टूट जायेगी। वह अपने स्थान पर बैठ जायेगा। इस प्रकार मंडल का आकार बढ़ाते रहे। जब 3-4 खिलाड़ी शेष रहे तो परिक्रमा के बाद उसी साँस में अधिकतम दण्ड या बैठक लगाने वाला विजयी होगा।

बाल कहानी

दृढ़ संकल्प

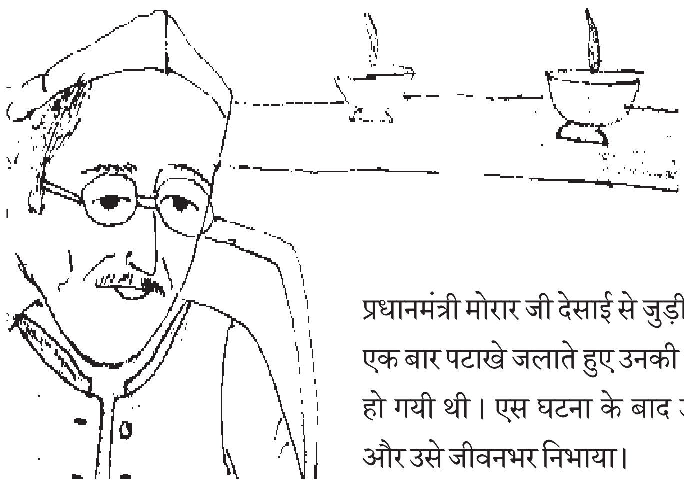

भारत में ऐसे-ऐसे महानपुरुष हुए हैं जिन्होंने एक बार संकल्प लिया तो फिर उसे जीवन भर नहीं तोड़ा ऐसी ही एक घटना पूर्व प्रधानमंत्री मोरार जी देसाई से जुड़ी है जब वे छोटे थे तब एक बार पटाखे जलाते हुए उनकी बहन के साथ दुर्घटना हो गयी थी। एस घटना के बाद उन्होंने निश्चय किया और उसे जीवनभर निभाया।

किस्सा सन् 1912 का है दीपावली का उत्सव सारे भारत देश धूम-धाम से मनाया जा रहा था अंधेरे में उजेले की विजय दिखाई दे रही थी अंधेरा भाग रहा था उजाला छा रहा था पटाखे के जश्न मनाने में सभी लोग मशगूल थे व सब इस बात से अनजान थे कि कभी अच्छे दिनों में भी बुरी घटना घट जाती है इस बात को मोरार जी देसाई भी नहीं जानते थे वे अपने पिता के वियोग को प्राप्त हो चुके थे सारे परिवार की जिम्मेदारी उन पर थी वे अहमदाबाद में रहने लगे थे दीपावली के दिन वे अपने घर पटाखे लेकर आये मगर काल को उस दिन कुछ और ही मंजूर था। पटाखे जलाकर आनन्द मनाते हुये अचानक उनकी बहन के कपड़ों में आग लग गई और देखते-देखते लपटों ने उनकी बहन को पूरी तरह अपनी चपेट में ले लिया सबने आग बुझाने की कोशिश की लेकिन दुर्भाग्य से उस घटना में मोरार जी की बहन की मृत्यु हो गयी खुशियों वाले उस दिन उन पर दुखों का पहाड़ टूट पड़ा।

मोरार जी ने तब उसी दिन संकल्प लिया कि उनके कुटुम्ब में कभी भी पटाखें नहीं छोड़े जायेंगे बाद में वे देश के वित्त और प्रधानमंत्री भी बने लेकिन तब भी उन्होंने कभी पटाखों को हाटा तक नहीं लगाया उनके परिवार ने सदैव इस संकल्प का पालन किया।

संस्कार गीत

हम न चूकेंगे

अब न चूकेंगे हम न चूकेंगे
जनगणना के इस अवसर पर हम न चूकेंगे
1.
जैनों की संख्या सच्ची है एक कोटी बतलायें
उपनामों से ऊपर उठकर जैन धर्म लिखवायें
भारत की संस्कृति का अनुपम जैन धर्म है प्यारा
सत्य अहिंसा शांतिदूत का सर्व मैत्री है नारा
पंथवाद अरू जातिवाद में हम न टूटेंगे
2.
महावीर शासन रक्षा का यह है स्वर्णिम अवसर
जैन धर्म पहचान बचाने आगे आओ बढ़कर
युवा वर्ग से सदा सदा ही पक्की आशा रहती
सत्य सदा साकार करेंगे उम्मीदें है सहती
जैन एकता सूझ बूझ से हम ही जूझेंगे
3.
पुरुखों ने अरू संत जनों ने धर्म का मान बचाया
धर्म की रक्षा हेतु सदा ही अपना खून बहाया
हम उनकी संतान ऋणीबन अपना फर्ज निभायें
अटक अटक से अब उलझे सीधा जैन लिखायें
धर्म प्रतिष्ठा अपनी इज्जत अब न चूकेंगे

बाल कविता

बन्दर, घर के अंदर

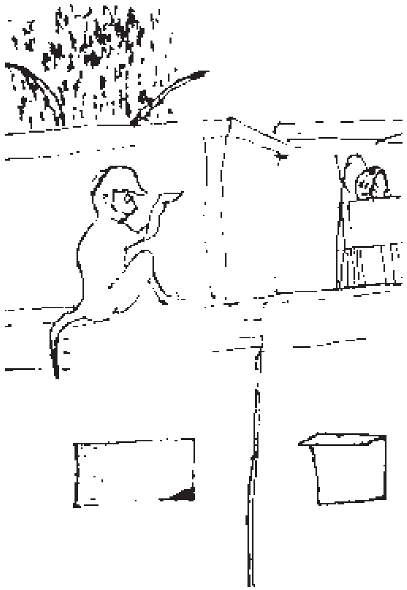

बाबा बाबा बंदर
आया घर के अंदर
अटक अटक कर चलता है
कितने नटखट करता है
सबका मन ललचाता है
पेड़ों पर चढ जाता है
मीठे-मीठे फल खाता
पत्तों में वह छुप जाता
दौड़ धूप कितनी करता
फिर भी क्यों यह नहीं थकता
शाकाहारी है बंदर
ताकत है इसके अंदर

समाचार

समाधिमरण

बाराबंकी (उ.प्र.)- आचार्यश्री विमर्शसागरजी महाराज के शिष्य मुनिश्री विश्वयज्ञसागरजी महाराज का समाधिमरण 07 सितम्बर 2020 को बाराबंकी उ.प्र. में हुआ।

आर्यिकाश्री गरिमामति माताजी की शिष्या आर्यिकाश्री चरणमति माताजी का समाधिमरण 16 सितम्बर 2020 को प्रातः 6.05 मिनट पर हुआ।

उदयपुर- मुनिश्री अमितसागरजी महाराज जी के शिष्य मुनिश्री अर्घसागरजी महाराज का समाधिमरण 19 सितम्बर रात्रि 11.11 मिनट पर गरियावास उदयपुर राजस्थान में हुआ।

दरगुंवा- आचार्यश्री विनिश्चयसागरजी के शिष्य क्षुल्लकश्री प्रकीर्तसागरजी महाराज का समाधिमरण 02 सितम्बर 2020 को दरगुंवा जिला टीकमगढ़ म.प्र. में हुआ।

श्रुत सिद्धान्त शोधपीठ अध्यक्ष नियुक्त

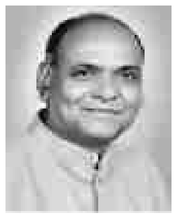

सम्पूर्ण विश्व में अनेक विधाओं पर शोधकार्य हो रहे हैं। जिसमें जैन धर्म के विविध विषयों पर देश-विदेश के जैन अजैन शोधार्थी शोधकार्य में संलग्न है। उनके सहयोग करने के लिए श्रुत सिद्धान्त शोध पीठ स्थापना की गई है। जिसके उद्देश्य निम्नानुसार हैं।

1. शोधार्थियों के लिए शोधार्थ जैन ग्रंथ उपलब्ध कराना।
2. शोध प्रबंध हेतु मार्ग दर्शन देना।
3. जैन धर्म दर्शन के विषय विशेषज्ञों द्वारा मार्गदर्शन दिलाना
4. शोधार्थियों के लिए आवास एवं भोजन की व्यवस्था कराना
5. शोध के लिए इच्छुक जनों को प्रेरित करना, आदि उद्देश्यों की पूर्ति हेतु अकलंक देव ग्रन्थालय एवं निकलंक देव वाचनालय के सहयोग से श्रुत सिद्धान्त शोधपीठ गत अनेक वर्षों से कार्यरत है। इसके अध्यक्ष डॉ. कपूरचन्द्र जैन खतौली रहे है। आपके देहावसान के बाद रिक्त स्थान पर पं. विनोद कुमार जैन रजवाँस को उक्त श्रुत सिद्धान्त पीठ का अध्यक्ष नियुक्त किया गया है। आपकी अध्यक्षता में श्रुत पीठ पुनः गतिमान रहेगी।

इच्छुक शोधार्थीजन सम्पर्क कर लाभ ले सकते है।

सम्पर्क : ब्र. जिनेश मलैया (सम्पादक-संस्कार सागर) पंचबालयति मंदिर ए.बी. रोड़ विजयनगर इन्दौर (म.प्र.) मो. 8989505108

श्रीमती चित्रा गुड़ा का निधन

5 अप्रैल 1956 श्रावण शुक्ला 10 को गुना के प्रतिष्ठि परिवार में जन्मी व गुड़ा परिवार में श्री बाबूलाल जी गुड़ा के सुपुत्र श्रीकांत के साथ 1 मई 1982 को परिणय सूत्र में श्रीमति चित्रा गुड़ा बंध गयी थी।

सप्तम प्रतिमाधारी सास व ससुर के व्रतों का पालन उनके जीवन के अंतिम क्षण तक कराया व खूब सेवा कर समाधिमरण में सहायक बनी। एवं संस्कार सागर परिवार को 500 रूपये की राशि उनकी स्मृति स्वरूप प्रदान की गई।

ग्रंथ प्रकाशन में सहभागी बनें

संत शिरोमणि आचार्यश्री विद्यासागरजी महाश्रमण के समग्र व्यक्तित्व एवं कृतित्त्व को समाविष्ठ कर वृहत ग्रन्थ के प्रकाशन का कार्य चल रहा है।

आचार्य श्री विद्यासागर जी मुनिराज के प्रवचनों के चयनित अंश, उनकी प्रेरणा और आशीर्वाद से संचालित मानव कल्याणकारी कार्यों, तीर्थोद्धार, मंदिर निर्माण व जीर्णोद्धार, राष्ट्र, संस्कृति, शिक्षा, स्वभाषा, संस्कार, शुद्ध् आहार-विहार, सिद्धांतों आदि पर उनके विचार, विभिन्न अवसरों पर प्रकट किये गये उद्‌गारों, दिव्य-देशना के संबंधि पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित समाचारों की कटिंग, छायाचित्र, आचार्यश्री की पूजन, गीत, कविताएं, संस्मरण आदि जो भी प्रकाशित-अप्रकाशित सामग्री आपके पास उपलब्ध हो उसे हम तक पहुँचाकर ग्रन्थ प्रकाशन के सहयोगी बने।

आचार्यश्री पर गीतकारों, भजन गायकों द्वारा रचित रचनाएँ, आडियो-विडियों की जानकारी देकर सहयोग करें।

यदि आपको या परिचितों को आचार्यश्री विद्यासागर महाराज जी के संघस्थ क्षुल्लक, एलक, आर्यिका एवं मुनि महाराजों की पुरानी पिच्छी प्राप्त हुई हो तो उसकी जानकारी शीघ्र पहुँचायें।

आप अपनी सामग्री निम्न पते पर शीघ्र भेजकर अपना अमूल्य सहयोग प्रदान कर गुरुसेवा का पुण्यार्जन करें।

ब्र. जिनेश मलैया
संपादक- सस्कार सागर
श्री दिग. जैन पंचबालयति मंदिर,
सत्यम गैस के सामने, ए.बी. रोड,
इन्दौर - 4520 10 (म.प्र.)
मो. : 8989505108, 6232967108
e-mail : sanskarsagar@yahoo.co.in.

अभिनंदन सांधेलीय
पत्रकार
बाजार वार्ड, पाटन
जि. जबलपुर (म.प्र.) 483113
मो. : 94258 63244
7987208243
e-mail : abhinandan.sandheliya@gmail.com

पर्यूषण पर्व सम्पन्न

इन्दौर- श्री दिगम्बर जैन पंचबालयति मंदिर इन्दौर में 23 अगस्त से 1 सितम्बर 2020 तक श्री दशलक्षण महामंडल विधान एवं पर्यूषण पर्व विश्वशांति महायज्ञ सम्पन्न हुआ जिसमें सौधर्म- इन्द्र बनने का सौभाग्य श्रीमति सुनीता मनोज जैन, महायज्ञनायक-श्रीमति किरण अशोक जैन (सी.ए.), कुबेर-धर्मेन्द्र जैन, ईशानेन्द्र- दीपक जैन, सानत् कुमारेन्द्र- श्रीमति निधि आशीष बरायठा, माहेन्द्र इन्द्र- श्रीमति अनिता डॉ. संदीप जैन, ब्रह्म- श्रीमति संगीता जितेन्द्र जैन, लातंव इन्द्र- श्रीमति गरिमा नीरज जैन, शुक्र इन्द्र- श्रीमति आकांक्षा विवेक जैन, शतार इन्द्र- श्रीमति किरण अखिलेश मोदी, आनत इन्द्र-श्रीमति ममता आनंद जैन, प्राणत इन्द्र- श्रीमति सुमन राजेश नायक, आरण इन्द्र-श्रीमति अर्पिता दिनेश सोगानी, अच्युत इन्द्र- श्री सुधीर जी बांझल आदि ने प्राप्त किया।

अखिल भारतीय संस्कार सागर परीक्षा माह : अक्टूबर 2020

रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिये

01. आचार्यश्री अनुभवसागरजी महाराज का चातुर्मास कहां एवं कितनें पिच्छिधारी साधुओं के साथ हो रहा है ?
02. आचार्यश्री आदर्शसागरजी महाराज का चातुर्मास कहां एवं कितनें पिच्छिधारी साधुओं के साथ हो रहा है ?
03. आचार्यश्री आनंदसागरजी महाराज का चातुर्मास कहां एवं कितनें पिच्छिधारी साधुओं के साथ हो रहा है ?
04. आचार्यश्री अनुभवनंदीजी महाराज का चातुर्मास कहां एवं कितनें पिच्छिधारी साधुओं के साथ हो रहा है ?
05. आचार्यश्री आर्जवसागरजी महाराज का चातुर्मास कहां एवं कितनें पिच्छिधारी साधुओं के साथ हो रहा है ?
06. आचार्यश्री भद्रबाहुसागरजी महाराज का चातुर्मास कहां एवं कितनें पिच्छिधारी साधुओं के साथ हो रहा है ?
07. आचार्यश्री दयासागरजी महाराज का चातुर्मास कहां एवं कितनें पिच्छिधारी साधुओं के साथ हो रहा है ?
08. आचार्यश्री धर्मभूषणजी महाराज का चातुर्मास कहां एवं कितनें पिच्छिधारी साधुओं के साथ हो रहा है ?
09. आचार्यश्री दर्शनसागरजी महाराज का चातुर्मास कहां एवं कितनें पिच्छिधारी साधुओं के साथ हो रहा है ?
10. आचार्यश्री ज्ञानेश्वरजी महाराज का चातुर्मास कहां एवं कितनें पिच्छिधारी साधुओं के साथ हो रहा है ?
11. आचार्यश्री ज्ञानभूषणजी महाराज का चातुर्मास कहां एवं कितनें पिच्छिधारी साधुओं के साथ हो रहा है ?
12. आचार्यश्री क्षीरसागरजी महाराज का चातुर्मास कहां एवं कितनें पिच्छिधारी साधुओं के साथ हो रहा है ?
13. आचार्यश्री कंचनसागरजी महाराज का चातुर्मास कहां एवं कितनें पिच्छिधारी साधुओं के साथ हो रहा है ?
14. आचार्यश्री कर्मविजयनंदीजी महाराज का चातुर्मास कहां एवं कितनें पिच्छिधारी साधुओं के साथ हो रहा है ?
15. आचार्यश्री कुलरत्ननंदीजी महाराज का चातुर्मास कहां एवं कितनें पिच्छिधारी साधुओं के साथ हो रहा है ?
16. आचार्यश्री नमोस्तुसागरजी महाराज का चातुर्मास कहां एवं कितनें पिच्छिधारी साधुओं के साथ हो रहा है ?
17. आचार्यश्री निशंकभूषणजी महाराज का चातुर्मास कहां एवं कितनें पिच्छिधारी साधुओं के साथ हो रहा है ?
18. आचार्यश्री नेमिसागरजी महाराज का चातुर्मास कहां एवं कितनें पिच्छिधारी साधुओं के साथ हो रहा है ?
19. आचार्यश्री निरंजनसागरजी महाराज का चातुर्मास कहां एवं कितनें पिच्छिधारी साधुओं के साथ हो रहा है ?
20. आचार्यश्री निश्चयसागरजी महाराज का चातुर्मास कहां एवं कितनें पिच्छिधारी साधुओं के साथ हो रहा है ?
21. आचार्यश्री प्रसन्नसागरजी महाराज का चातुर्मास कहां एवं कितनें पिच्छिधारी साधुओं के साथ हो रहा है ?
22. आचार्यश्री प्रणामसागरजी महाराज का चातुर्मास कहां एवं कितनें पिच्छिधारी साधुओं के साथ हो रहा है ?
23. आचार्यश्री सुबलसागरजी महाराज का चातुर्मास कहां एवं कितनें पिच्छिधारी साधुओं के साथ हो रहा है ?
24. आचार्यश्री संभवसागरजी महाराज का चातुर्मास कहां एवं कितनें पिच्छिधारी साधुओं के साथ हो रहा है ?
25. आचार्यश्री सौभाग्यसागरजी महाराज का चातुर्मास कहां एवं कितनें पिच्छिधारी साधुओं के साथ हो रहा है ?

26. आचार्यश्री सुरत्नसागरजी महाराज का चातुर्मास कहां एवं कितनें पिच्छिधारी साधुओं के साथ हो रहा है ?
27. आचार्यश्री शीतलसागरजी महाराज का चातुर्मास कहां एवं कितनें पिच्छिधारी साधुओं के साथ हो रहा है ?
28. आचार्यश्री सच्चिदानंदजी महाराज का चातुर्मास कहां एवं कितनें पिच्छिधारी साधुओं के साथ हो रहा है ?
29. आचार्यश्री सूर्यसागरजी महाराज का चातुर्मास कहां एवं कितनें पिच्छिधारी साधुओं के साथ हो रहा है ?
30. आचार्यश्री समतासागरजी महाराज का चातुर्मास कहां एवं कितनें पिच्छिधारी साधुओं के साथ हो रहा है ?
31. आचार्यश्री शंशाकसागरजी महाराज का चातुर्मास कहां एवं कितनें पिच्छिधारी साधुओं के साथ हो रहा है ?
32. आचार्यश्री सुधर्मसागरजी महाराज का चातुर्मास कहां एवं कितनें पिच्छिधारी साधुओं के साथ हो रहा है ?
33. आचार्यश्री संयमसागरजी महाराज का चातुर्मास कहां एवं कितनें पिच्छिधारी साधुओं के साथ हो रहा है ?
34. आचार्यश्री श्रेयसागरजी महाराज का चातुर्मास कहां एवं कितनें पिच्छिधारी साधुओं के साथ हो रहा है ?
35. आचार्यश्री सम्मानसागरजी महाराज का चातुर्मास कहां एवं कितनें पिच्छिधारी साधुओं के साथ हो रहा है ?
36. आचार्यश्री तीर्थनंदीजी महाराज का चातुर्मास कहां एवं कितनें पिच्छिधारी साधुओं के साथ हो रहा है ?
37. आचार्यश्री विद्यानंदजी महाराज का चातुर्मास कहां एवं कितनें पिच्छिधारी साधुओं के साथ हो रहा है ?
38. आचार्यश्री विमलसागरजी महाराज का चातुर्मास कहां एवं कितनें पिच्छिधारी साधुओं के साथ हो रहा है ?
39. आचार्यश्री विज्ञानभूषणजी महाराज का चातुर्मास कहां एवं कितनें पिच्छिधारी साधुओं के साथ हो रहा है ?
40. आचार्यश्री विभक्तसागरजी महाराज का चातुर्मास कहां एवं कितनें पिच्छिधारी साधुओं के साथ हो रहा है ?
41. आचार्यश्री विबुद्धसागरजी महाराज का चातुर्मास कहां एवं कितनें पिच्छिधारी साधुओं के साथ हो रहा है ?
42. आचार्यश्री विहर्षसागरजी महाराज का चातुर्मास कहां एवं कितनें पिच्छिधारी साधुओं के साथ हो रहा है ?
43. आचार्यश्री युधिष्ठिरसागरजी महाराज का चातुर्मास कहां एवं कितनें पिच्छिधारी साधुओं के साथ हो रहा है ?
44. आचार्यश्री यतिन्द्रसागरजी महाराज का चातुर्मास कहां एवं कितनें पिच्छिधारी साधुओं के साथ हो रहा है ?
45. एलाचार्य अतिवीरसागरजी महाराज का चातुर्मास कहां एवं कितनें पिच्छिधारी साधुओं के साथ हो रहा है ?
46. एलाचार्य क्षमाभूषणसागरजी महाराज का चातुर्मास कहां एवं कितनें पिच्छिधारी साधुओं के साथ हो रहा है ?
47. एलाचार्य कीर्तिसागरजी महाराज का चातुर्मास कहां एवं कितनें पिच्छिधारी साधुओं के साथ हो रहा है ?
48. बालाचार्य जिनसेनजी महाराज का चातुर्मास कहां एवं कितनें पिच्छिधारी साधुओं के साथ हो रहा है ?
49. बालाचार्य मोक्षसागरजी महाराज का चातुर्मास कहां एवं कितनें पिच्छिधारी साधुओं के साथ हो रहा है ?
50. बालाचार्य सिद्धसेनजी महाराज का चातुर्मास कहां एवं कितनें पिच्छिधारी साधुओं के साथ हो रहा है ?

50 प्रश्न संस्कार सागर अगस्त 2020 चातुर्मास विशेषांक से लिये गये हैं।

अखिल भारतीय संस्कार सागर परीक्षाः अक्टूबर 2020

प्रश्न पत्र भरकर भेजने की अंतिम तिथि माह की 25 तारीख रहेगी

नाम ....स्थान ....

उम्र ....सदस्यता क्र. ....

पूर्ण पता ....

पिन कोड .... फोन नं...................... (एस.टी.डी.) ....

1	2	3	4	5
6	7	8	9	10
11	12	13	14	15
16	17	18	19	20
21	22	23	24	25
26	27	28	29	30
31	32	33	34	35
36	37	38	39	40
41	42	43	44	45
46	47	48	49	50

आपके नगर के संवाददाता का नाम .... हस्ताक्षर

नियम :– .... जब तक दूसरा प्रश्न–पत्र भरकर नहीं भेजतेतब तक के लिए।

वर्ग पहेली 2 5 4

1	2		3	■	4		5	6
7		■	8	9		■	10	
11		■	■		■	12		■
■	■	13		■	■	14		15
16	17		■	18	19		■	
20			■	■		■	21	
22		■	23	24	■	25		
	■	26			■	27		■
28			■	29			■	30

बाये से दाये

1. अर्जुन का पुत्र -4
4. आकाश का पर्यायवाची -4
7. पत्नी का भाई -2
8. गर्भ जन्म का एक प्रकार -3
10. व्यसन, आदत -2
11. बड़ी माँ -2
12. मित्र, साथी, हमउम्र -2
13. सोने का सिक्का -2
14. अपराध पाप -3
16. दो कोस दूरी -3
18. मुख, चेहरा -3
20. तरल हाने का भाव, पिघलना -3
21. पार्वती एक नाम, महादेव की पत्नी का नाम-2
22. अपना, अपने का भाव -2
23. कीर्ति -2
25. शरण -3
26. पतित, गिरा हुआ -3
27. संसार, दुनिया -2
28. पृथ्वी धरती -3
29. भवन इमारत -3

ऊपर से नीचे

1. दुख, पीड़ा -3
2. छतीसगढ़ की इस्पात नगरी -3
3. समाचार -2
4. उम्र, एक कर्म जो जीव को गति में बांधकर रखता है। -2
5. खजाना, दौलत खाना -4
6. झुकने का भाव -2
9. सलाह, मश्वरा -2
12. शुभ समय -3
13. गणना की क्रिया गणना का कर्म -3
15. पवन पुत्र, बजरंगबली अंजनी पुत्र -4
16. तीर्थंकर की मोक्ष जाने के पूर्व की एक क्रिया-5
17. कमल नीरज -3
19. पर्वत, नगरी रत्न -2
21. नाग, सर्प -3
24. लज्जा -3
25. जल सहित -3
26. जल का पर्यायवाची -2
30. सह (संस्कृत) -1

वर्ग पहेली 2 5 3 का हल

1 प	2 वि	3 त्र	सा	4 ग	5 र	■	6 म	जा
7 त	ला	स	■	8 र	स	9 वा	न	■
10 न	व	■	11 वा	ल	■	ह	■	12 म
■	■	13 म	द	■	14 ज	न	15 प	द
16 क्ष	17 प	क	■	18 प	ना	■	19 ह	न
20 प	गा	र	■	■	21 जा	22 हि	ल	■
णा	■	■	23 रा	24 जी	■	त	■	25 सु
26 सा	27 रि	का	■	व	■	28 क	29 द	म
30 र	न	■	31 ध	न	■	32 र	म	न

....सदस्यता क्र. ....

पता : ....

वर्ग पहली प्रतियोगिताओं के विजेताओं को **हरसाहमल सत्येन्द्रकुमार जैन** (गोकुल बाजार, रेवाड़ी, हरियाणा) की ओर से पुरस्कृत किया जाएगा। प्रथम पुरस्कार : 101रु. द्वितीय पुरस्कार 51 रू., तृतीया पुरस्कार 41 रू.) प्रतियोगिता भरकर भेजने की अंतिम तिथि माह की 25 तारीख रहेगी

समस्या पूर्ति प्रतियोगिता

आई दिवाली जग-मग

नियम

१. आपको चार से छः पंक्तियों की एक छंदबद्ध या छंदमुक्त तुकांत कविता लिखनी है, जिसके अंत में उपरोक्त शब्द आने चाहिये।
२. समस्या पूर्ति पोस्टकार्ड पर ही लिखकर भेजें।
३. पुरस्कार राशि : प्रथम पुरस्कार १५१ रु., द्वितीय ५१ रु., तृतीय २५ रु.
४. पोस्टकार्ड भेजने की अंतिम तिथि माह की १५ तारीख है।

पंचकल्याणक विधिविधान एवं अन्य धार्मिक कार्यक्रमों हेतु सम्पर्क करें

श्री दिगम्बर जैन पंचबालयति मंदिर, विद्यासागर नगर इन्दौर
सम्पर्क करें - 0731-4003506, 8989505108, 8989121008

पंचकल्याण विधि-विधान सामग्री एवं हाथी स्वर्ण रथ आदि एक ही स्थान पर उपलब्ध

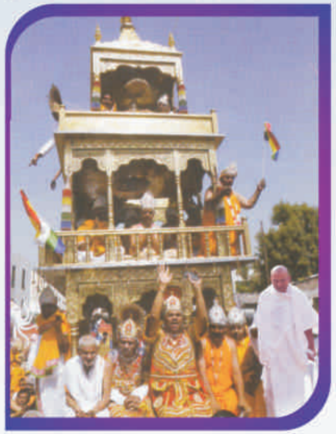

श्री दिगम्बर जैन पंचबालयति मंदिर में गिफ्ट आयटम उपलब्ध हैं जिनमें घड़ी, शील्ड, पेन, बैग, बेंच, आदि सामग्री तथा पंचकल्याणक, पूजन, विधान, शिलान्यास, गृह प्रवेश, गृह शुद्धि, शिविर आदि की सम्पूर्ण सामग्री एक साथ उपलब्ध रहती है। जैसे स्वर्ण शिला, रजत, ताम्रशिला, कील, कलश, पंचरत्न, स्वस्तिक, हार, मुकुट, कंठी, स्वागत पट्टे, पचरंगी झंडे, अष्ट मंगल द्रव्य, अष्ट प्रातिहार्य, पंचमेरू, पांडुक शिला, कलश, मंगल कलश, शिखर कलश, ध्वज दंड, दीपक बाक्स, दीपक चंदोवा, पलासना, छत्र, चमर, भामंडल, सिंहासन, वंदनवार, धोती-दुपट्टा, सभी विधानों के मांडने धातु में एवं फ्लेक्स में उपलब्ध है।

विभिन्न आकर्षक डिजाइनों में स्वर्ण कलश, रजत कलश (ओरिजनल चाँदी), रत्न कलश आदि जो एक्रेलिक बॉक्स स्टैण्ड के साथ उपलब्ध है। जो काले नहीं पड़ेंगे एवं तीन का सेट होने के बावजूद बिखरेंगे नहीं। चातुर्मास कलश का समय पर आर्डर करने पर बॉक्स के नीचे साधु के नाम, कौन सा चातुर्मास, स्थान, आयोजक आदि का नाम भी लिखवाया जा सकता है। तथा इन्दौर से सभी जगह के लिए बस सुविधा उपलब्ध है। जिसके द्वारा आप अपना आर्डर मंगवा सकते हैं।

संस्कार सागर पढ़िए सिर्फ एक Click पर www.sanskarsagar.org

सम्पर्क करें - 0731-4003506, 8989505108, 8989121008

प्रिंटिंग दिनांक 30/09/2020, पोस्टिंग दिनांक : 03/10/2020